

₹ 20

हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका

क्रान्ति

जून 2013

- इस्लाम : दया एवं शान्ति का धर्म
  —डॉ॰ फ़रहत हुसैन
- वंदे मातरम् क्यों ?
  —डॉ॰ मुहम्मद अहमद
- बड़ी ज्वलंत समस्या है कन्या भ्रूण-हत्या
  —डॉ॰ रज़ीउल इस्लाम नदवी
- जंगे आज़ादी के सिपाही
  —विद्या प्रकाश

अल्लाह आकाशों और धरती का प्रकाश है । (क़ुरआन)

SAMIR KHAN **09890954240**

Let there Be light

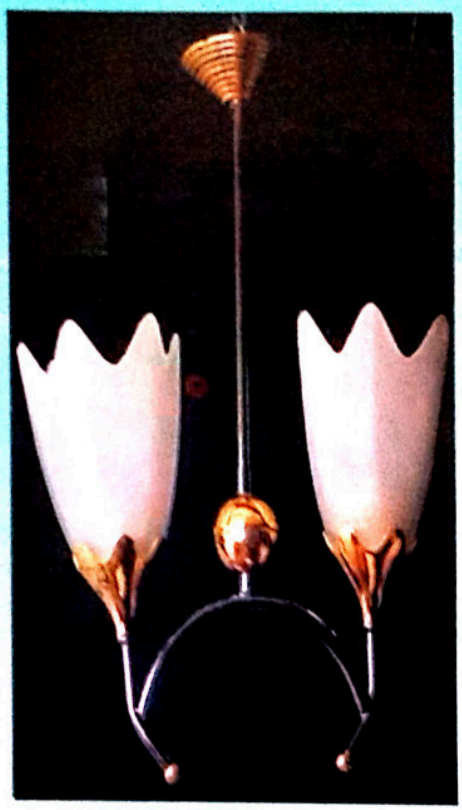

Let there Be light

- *CHANDELIERS*
- *FIBER OPTICS*
- *CEILING LAMPS*
- *WALL LAMPS*
- *PICTURE LIGHTS/*
- *TRACK LIGHTS*

- *TABLE LAMPS*
- *FLOOR LAMPS*
- *SPOT LIGHTS*
- *GATE LIGHTS*
- *OUTDOOR LIGHTS*
- *UNDERWATER LIGHTS*
- *PEDASTAL*

TAISIR

Enterprises

Next To Joao Menezes Pharmacy, Mapusa, Goa-403507
Tel. : 3226752, 2264813, Fax : 2262772
E-mail : taisirgoa@gmail.com

आपकी आशाओं का सुन्दर प्रतिबिम्ब

हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका

कान्ति

वर्ष 22 अंक 12 जून 2013

ऐ लोगो ! तुम्हारे पास तुम्हारे रब की ओर से एक उपदेश आ चुका है जो मन के रोगों के लिए उपचार है तथा आस्थावानों के लिए मार्गदर्शन और दयालुता है ।

–क़ुरआन

संपादक

डॉ० मुहम्मद अहमद

अपने विचार, लेख, रचनाएं भेजने एवं संपादकीय मामलों के लिए लिखें–

संपादक, 'कान्ति' मासिक

डी-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव

जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025

ई मेल editorkanti@yahoo.com

* * *

ख़रीदार बनने, एजेंसी लेने, प्रचार-प्रसार एवं प्रबंधकीय मामलों के लिए लिखें–

प्रबंधक, 'कान्ति' मासिक

डी-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव

जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025

* * *

फ़ोन संपादकीय एवं प्रबंधकीय

09818799223, 011-26949430

सहयोग राशि

एक प्रति रु० 20/- विशेषांक रु० 30/-

वार्षिक रु० 220/-, दो वर्ष 425/-

पांच वर्ष 1000/-, आजीवन रु० 5000/-

सऊदी अरब और खाड़ी के देशों से–100 रियाल

यूरोप व अमेरिका से–35 US डॉलर

वेब : **www.kanti.in**

चेक / ड्राफ्ट **'मासिक कान्ति'** के नाम से बनवाएं

एक ज्वलंत प्रश्न

सामूहिक बलात्कार उत्पीड़न अनाचार
दुधमुंही बच्चियों से लोमहर्षक व्यभिचार
संवेदनाशून्य पुलिस उदासीन सरकार
बढ़ता जनाक्रोश सहमा-सहमा हर परिवार
जनप्रतिनिधियों के बेतुके बयानों की भरमार
घावों पर नमक रगड़ते धर्म के ठेकेदार
ऐसे में हमें करना होगा स्वयं विचार
क्यों बढ़ रही है ऐसी घटनाओं की रफ़्तार ।
समाजशास्त्रियों को इस चुनौती को स्वीकारना होगा
सामयिक नहीं वास्तविक कारणों को पहचानना होगा
इस महारोग की जड़ को खोज निकालना होगा ।
वर्षों से लगातार हो रही
कन्या भ्रूण हत्याओं ने
कुछ प्रदेशों में लड़कियों की संख्या
ख़तरनाक हद तक घटाई है
विवाह योग्य युवाओं के लिए
वधू मिलने में
निरंतर बढ़ रही कठिनाई है
ऐसे कुछ बिन ब्याहे
निरंकुश कुंठापीड़ित युवक भी
ऐसी घिनौनी राह अपनाते हैं
वैसा संग साथ परिवेश अवसर मिल जाने पर
ऐसे कुकर्म में लिप्त हो जाते हैं ।
पुत्र मोह से छुटकारा पाना ही नहीं
पुत्र-पुत्री के पालन-पोषण में भेदभाव भी मिटाना होगा
बेटियों पर ही रोकटोक नहीं
बेटों पर भी नियंत्रण बढ़ाना होगा ।

■ **ओमप्रकाश बजाज**
बी-2, गगन विहार, गुप्तेश्वर,
जबलपुर-482001 (म०प्र०)



कहां क्या है ?

एक ज्वलंत प्रश्न	–ओम प्रकाश बजाज	3
कुरआन ज्योति		5
अल्लाह का ज़िक्र (हदीस मंजरी)		6
तो क्या भ्रष्टाचारी को फांसी न हो (संपादकीय)		7
मां की महत्ता (आपके पत्र)		10
इस्लाम की मौलिक शिक्षाएं (आस्था)	–मौलाना सैयद हामिद अली	15
अनुपम जीवन (जीवन आदर्श)	–संकलित	17
स्त्री अस्मिता : कुछ विचारणीय बातें (विमर्श)	–रचना त्यागी 'आभा'	19
जंगे आज़ादी के सिपाही... (अतीत के झरोखे से)	–विद्या प्रकाश	21
इतना सबल बनो (कविता)	–डॉ॰ त्रिलोकी सिंह	25
हिन्दी ग़ज़ल (कविता)	–डॉ॰ शरद नारायण खरे	25
रे मन ! (कविता)	–ईश्वरदयाल जायसवाल	25
इस्लाम : दया एवं शांति का धर्म (विशेष आयोजन)	–डॉ॰ फ़रहत हुसैन	26-27
तब और अब (कहानी)	–ख़ालिद रहीम	31
बच्चों के चरित्र-निर्माण की ओर... (दृष्टिकोण)	–डॉ॰ जगदीश गांधी	35
बड़ी ज्वलंत समस्या है कन्या भ्रूण-हत्या (ज्वलंत सामयिक)	–डॉ॰ रज़ीउल इस्लाम नदवी	37
एड्स ! ज़्यों-ज़्यों दवा ढूंढ़ी, मर्ज़ बढ़ता गया (स्वास्थ्य चर्चा)	–योगेश कुमार गोयल	41
मूड (व्यंग्य)	–ईश्वरदयाल जायसवाल	43
वंदे मातरम् क्यों ? (फेसबुक उवाच)	–डॉ॰ मुहम्मद अहमद	45
सीप और मूंगों की दुनिया (बालवीथी)		49

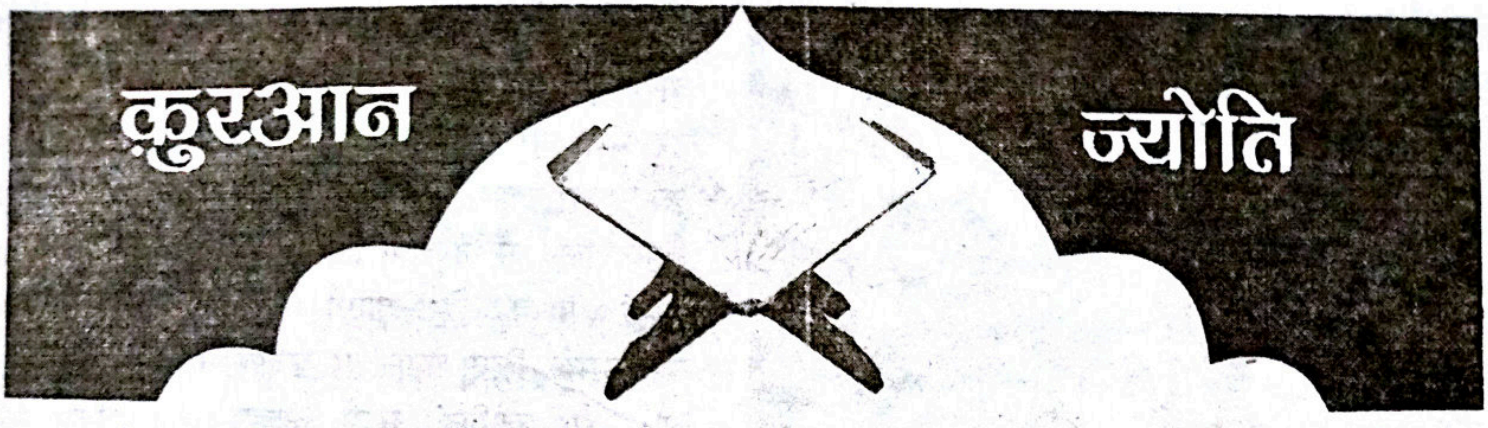

(29) युद्ध करो किताब वालों में से उन लोगों के विरुद्ध जो अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान नहीं लाते [26] और जो कुछ अल्लाह और उसके रसूल ने हराम क़रार दिया है उसे हराम नहीं करते [27] और सत्य धर्म को अपना दीन (धर्म) नहीं बनाते। (इनसे लड़ो) यहां तक कि वे अपने हाथ से जिज़्या (रक्षा-कर) दें और छोटे (अधीनस्थ) बनकर रहें।[28] –क़ुरआन, 9 : 29

26. यद्यपि किताब वाले अल्लाह और आख़िरत पर ईमान रखने के दावेदार हैं, लेकिन सच तो यह है कि न वे अल्लाह पर ईमान रखते हैं, न आख़िरत पर। अल्लाह पर ईमान रखने का अर्थ यह नहीं है कि आदमी बस इस बात को मान ले कि अल्लाह है, बल्कि इसका अर्थ यह है कि आदमी अल्लाह को अकेला उपास्य और अकेला पालनहार मान ले और उसकी ज़ात, उसके गुणों, उसके हक़ों और अधिकारों में न स्वयं साझीदार बने, न किसी को साझीदार ठहराए। लेकिन ईसाई और यहूदी, दोनों यह अपराध करते हैं, जैसा कि बाद वाली आयतों में स्पष्ट रूप से वर्णन किया गया है। इसलिए उनका अल्लाह को मानना निरर्थक है और उसे कदापि 'अल्लाह पर ईमान' नहीं कहा जा सकता।

इसी तरह आख़िरत को मानने का अर्थ केवल यही नहीं है कि आदमी यह बात मान ले कि हम मरने के बाद फिर उठाए जाएंगे, बल्कि उसके साथ यह मानना भी आवश्यक है कि वहां सिफ़ारिश की कोई कोशिश, कोई फ़िदया और किसी बुज़ुर्ग से जुड़ा होना काम न आएगा और न कोई किसी का प्रायश्चित बन सकेगा। अल्लाह की अदालत में बे-लाग इंसाफ़ होगा और आदमी के ईमान और कर्म के सिवा किसी चीज़ का लिहाज़ न किया जाएगा। इस विश्वास के बिना आख़िरत को मानना निरर्थक है। लेकिन यहूदियों और ईसाइयों ने इसी पहलू से अपने विश्वास व आस्था को ख़राब कर लिया है, इसलिए उनका आख़िरत पर ईमान भी मान्य नहीं है।

27. अर्थात उस शरीअत को अपने जीवन का क़ानून नहीं बनाते जो अल्लाह ने अपने रसूल (सल्ल०) द्वारा उतारी है।

28. अर्थात लड़ाई का उद्देश्य यह नहीं है कि वे ईमान ले आएं और सच्चे दीन की पैरवी करने वाले बन जाएं, बल्कि इसका उद्देश्य यह है कि उनकी स्वायत्तता और श्रेष्ठता समाप्त हो जाए। वे धरती में शासक और सत्ताधारी बनकर न रहें, बल्कि धरती की जीवन-व्यवस्था की बागें और सत्ता और शासन के अधिकार सच्चे दीन के मानने वालों के हाथों में हों और वे उनके मातहत, अधीन और आज्ञापालक बनकर रहें।

'जिज़्या' बदल है उस शरण और उस रक्षा का जो ज़िम्मियों (इस्लामी राज्य की ग़ैर-मुस्लिम प्रजा) को इस्लामी राज्य में दी जाएगी, साथ ही वह निशानी है इस बात की कि ये लोग आदेश की अधीनता स्वीकार करने पर राज़ी हैं। 'हाथ से जिंज़्या' देने का अर्थ सीधी तरह आज्ञापालन की शान के साथ जिज़्या अदा करना है। और 'छोटे बनकर रहने' का अर्थ यह है कि ज़मीन में बड़े वे न हों, बल्कि ईमान वाले बड़े हों जो अल्लाह का ख़लीफ़ा होने का कर्तव्य निभा रहे हों।

आरंभ में यह आदेश यहूदियों और ईसाइयों के बारे में दिया गया था, लेकिन आगे चलकर स्वयं नबी (सल्ल०) ने मजूस से जिज़्या लेकर उन्हें ज़िम्मी बनाया और इसके बाद सहाबा किराम (रज़ि०) ने सर्वसम्मति से अरब के बाहर की तमाम बाहरी क़ौमों पर इस आदेश को आम कर दिया।

(शेष पृष्ठ 13 पर)



अल्लाह का ज़िक्र

ज़िक्र का माहात्म्य और इस पर उभारना

● हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने कहा : "दो शब्द ऐसे हैं जो जुबान के लिए तो बहुत हल्के हैं, तौल में बहुत भारी हैं और रहमान (अत्यंत कृपाशील अल्लाह) को बहुत प्रिय हैं : 'सुबहानल्लाहि व बिहम्दिही, सुबहानल्लाहिल अज़ीम' (महान है अल्लाह और प्रशंसा उसी के लिए है, महान है अल्लाह जो अत्यंत बड़ाई वाला है।)" –बुख़ारी, मुस्लिम

● हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने कहा : "अगर मैं यह कहूं : 'सुबहानल्लाहि अलहम्दुलिल्लाह व ला इलाह इल्लल्लाह (महान है अल्लाह और प्रशंसा अल्लाह के लिए है और अल्लाह के सिवा कोई पूज्य नहीं और अल्लाह सबसे बड़ा है) तो यह मुझे हर उस चीज़ से अधिक प्रिय है जिस पर सूर्य उदय होता है।" –मुस्लिम

● हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने कहा : "जिसने ये शब्द एक दिन में सौ बार कहे : 'ला इलाह इल्लल्लाह वहदहू ला शरीक लहु लहुलमुल्क व लहुलहम्द व हुवा अला कुल्लिशैय्यिन क़दीर' (अल्लाह के सिवा कोई पूज्य नहीं, वह एक है उसका कोई साझी नहीं, बादशाही उसी की है, प्रशंसा उसी के लिए और उसे हर चीज़ पर पूर्ण सामर्थ्य प्राप्त है) तो उसका यह कहना दस दास मुक्त करने के समान होगा और उसके लिए सौ नेकियां लिखी जाएंगी और उसके सौ गुनाह क्षमा कर दिये जाएंगे। और ये उस दिन संध्या तक उसके लिए शैतान से बचाव का कारण बनेंगे। और कोई व्यक्ति उससे अच्छा कर्म लेकर नहीं आएगा सिवाय उस व्यक्ति के जो उससे ज़्यादा (पढ़ने का) अमल कर ले।" और आपने कहा : "जिस ने एक दिन में सौ बार 'सुबहानल्लाहि व बिहम्दिही' (महान है अल्लाह और प्रशंसा उसी के लिए है) कहा, तो उसके गुनाह क्षमा कर दिये जाते हैं यद्यपि वे समुद्र के झाग के बराबर ही क्यों न हो।"

–बुख़ारी, मुस्लिम

● हज़रत अबू अय्यूब अल-अंसारी (रज़ि०) से रिवायत है कि नबी (सल्ल०) ने कहा : "जिस किसी ने दस बार कहा कि 'अल्लाह के सिवा कोई पूज्य नहीं, वह एक है उसका कोई साझी नहीं, उसी की बादशाही है और उसी की प्रशंसा है और उसे हर चीज़ पर पूर्ण सामर्थ्य प्राप्त है' तो वह उस व्यक्ति जैसा है जिसने इस्माईल की संतान से चार गुलामों को मुक्त किया।" –बुख़ारी, मुस्लिम

● हज़रत अबू ज़र (रज़ि०) से रिवायत है। वे कहते हैं कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने मुझसे कहा : "क्या मैं तुम्हें उस सूत्र-वाक्य की सूचना न दूं जो अल्लाह के यहां सबसे अधिक प्रिय है ? निश्चय ही अल्लाह के यहां सबसे प्रिय सूत्र-वाक्य है : 'सुबहानल्लाहि व बिहम्दिही' (महान है अल्लाह और प्रशंसा उसी की है।)" –मुस्लिम

('रियाजुस्सालिहीन' से)

इस्लाम-परिचय : हिन्दी वेबसाइटें

www.islamdharma.org
www.islamic videos.com
www.islamicwebdunia.com
www.quranhindi.com

संपादकीय

तो क्या भ्रष्टाचारी को फांसी न हो ?

हमारा देश कई मायने में विचित्र है । यहां बड़े विरोधाभास भी हैं । कहीं-कहीं तो हौच-पौच का आलम है । इस देश के साथ सबसे बड़ी विडम्बना यह है कि यहां राष्ट्रघात या देशद्रोह पारिभाषित नहीं है, लेकिन सज़ा मिलती जा रही है । देशद्रोह की जो परिभाषा अंग्रेज़ों ने गढ़ी थी, आज़ाद भारत ने उसको ओढ़ लिया । हमारे यहां फांसी तक हो भी रही है और कुछ के लिए फांसी की सज़ा मांगी भी जा रही है । क़साब, अफ़ज़ल को फांसी के बाद अब भुल्लर को फांसी आसन्न है । यह विचित्र बात है कि हत्या करने वाले को फांसी हो, देशद्रोही को फांसी हो, आतंकवादी को फांसी हो, बलात्कारी को फांसी हो, लेकिन भ्रष्टाचारी को फांसी न हो । खाद्य पदार्थों में मिलावट करने वाले को फांसी न हो, नक़ली दवाओं के कारोबारियों को फांसी न हो, जो इन्सान को इन्सान से लड़ाए उसे फांसी न हो, जो दंगा करवाये और बेक़सूर लोगों की जान ले, उसे फांसी पर न लटकाया जाए, जो दूसरों के धर्म स्थलों को ध्वस्त करे उसे फांसी न हो, बल्कि सारे मामले ही रफ़ा-दफ़ा कर दिये जाएं । एक ही प्रकार के मामले में दोहरा रवैया अपनाया जाए...एक को क़ानून का पाठ पढ़ाया जाए और दूसरे को छोड़ दिया जाए या पकड़ा ही न जाए । कहने का मतलब यह है कि जहां-जहां नेताओं-नौकरशाहों का स्वार्थ आड़े आए, उनको निर्बाध खेलने का मौक़ा हो, वहां-वहां क्या फांसी या किसी सख़्त सज़ा का कोई प्रावधान नहीं होना चाहिए ?

भ्रष्टाचार भारतीय नेताओं का पुराना शग़ल है, लेकिन इसमें सज़ा देने के मामले में भारत एकदम फिसड्डी रहा है । कुछ मामलों में कहना पड़ेगा कि ख़ासकर भ्रष्टाचारी राजनेताओं को चुन-चुनकर बचाया जाता रहा । भ्रष्टाचार के ख़िलाफ़ मुहिम हर बार बेमानी साबित हुई है । अक्सर शिकायत रही है कि जो भ्रष्टाचार के ख़िलाफ़ लड़ने वाला है, जो साफ़-सुथरी छवि का मालिक है, वही भ्रष्टाचार में गहरे तक लिप्त मिला है । टू जी, कोलगेट जैसे महा घोटालों में फंसी केन्द्र सरकार भ्रष्टाचार के नये मामले में बुरी तरह फंस गयी है । उसके ऊपर भ्रष्टाचार का एक और संकट मंडरा रहा है । प्रधानमंत्री डॉ॰ मनमोहन सिंह के दाहिने हाथ और पाक-साफ़ समझे जानेवाले रेल मंत्री पवन कुमार बंसल के दामन पर इस बार रिश्वत के छींटे पड़े हैं । सी॰बी॰आई॰ ने उनके भांजे को 90 लाख रुपये की रिश्वत के साथ गिरफ़्तार किया है । भाजपा ने इस मामले को तत्काल लपकते हुए रेल मंत्री से इस्तीफ़ा मांगा है, लेकिन हमारे यहां कोई मंत्री जल्दी इस्तीफ़ा नहीं देता । काफ़ी टालमटोल के बाद पवन बंसल से इस्तीफ़ा ले लिया गया है, साथ ही कोलगेट मामले में प्रधानमंत्री के न चाहते हुए भी क़ानून मंत्री अश्विनी कुमार को अपना पद छोड़ना पड़ा ।

मामला रेलवे बोर्ड के नवनियुक्त सदस्य स्टाफ महेश कुमार की नियुक्ति का है । सी॰बी॰आई॰ ने इस मामले में रेल मंत्री पवन कुमार बंसल के भांजे विजय सिंगला और महेश कुमार को विगत चार मई को गिरफ़्तार कर लिया । महेश कुमार पर आरोप है कि उन्होंने रेलवे बोर्ड में सदस्य स्टाफ़ बनने के लिए विजय सिंगला को 90 लाख रुपये की रिश्वत दी । सी॰बी॰आई॰ ने इस संबंध में चंडीगढ़ में छापा मार कर रिश्वत की राशि बरामद कर ली है । बताया जाता है कि सी॰बी॰आई॰ दोनों के फ़ोन लगातार टेप कर रही थी, इसी आधार पर इसका खुलासा हो सका । सी॰बी॰आई॰ ने इसके बाद मुम्बई, दिल्ली, चंडीगढ़ और बेंगलुरू में कई जगह छापे मारे । सी॰बी॰आई॰ ने महेश कुमार और दो अन्य के ख़िलाफ़ मामला दर्ज कर लिया, लेकिन सवाल यह है

कि यह घटना बिना रेलमंत्री की सहमति के संभव कैसे हो सकती है ? मगर रेलमंत्री को लगातार बचाया ही जा रहा है । महेश कुमार ने तीन मई को रेलवे बोर्ड में सदस्य स्टाफ का पदभार संभाला था । वह इससे पहले मुम्बई में पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक थे । बताया गया है कि उन्हें तीन महाप्रबंधकों की वरिष्ठता को नज़रअंदाज़ करके पदोन्नत किया गया था । रेलवे बोर्ड में छह सदस्य होते हैं । सातवें सदस्य रेल मंत्री स्वयं होते हैं ।

आज राजनेताओं की अख़्लाक़ी हालत बड़ी ख़राब है । एक ओर भ्रष्टाचार के ख़िलाफ़ जनचेतना जगाने की कोशिशें की जा रही हैं, दूसरी ओर इस पर रोक लगना तो दूर इसकी रफ़्तार को पंख लगे हुए हैं । अगर मौजूदा कुप्रवृत्ति पर प्रभावी रोक नहीं लगायी गयी, तो वह दिन दूर नहीं, जब नेताओं की कृपा से आतंकवादी जेलों से रिहा कर दिये जाएंगे, उन्हें नेता अपनी गोद में बिठाएंगे और वोट वसूलेंगे । यही उलटी खोपड़ी और भ्रष्टाचार वाली हालत रही, तो देश की चिंता में मर-मिटने का जज़्बा रखने वाले क्रांतिकारी आतंकवादी बना दिये जाएंगे, फांसी पर वे लटकेंगे, जेलों में ज़िन्दगी वे काटेंगे । अब भ्रष्टाचारी और अस्ली आतंकवादी को इस देश में कोई सज़ा नहीं मिलने वाली ! क्या इसी भारत के लिए देश को आज़ादी मिली थी ? आख़िर वह सपनों का भारत कब सामने आएगा, जिसके लिए देशवासियों ने कुर्बानियां दी थीं ?

यह कहने में संकोच नहीं कि हमारा देश नैतिक और अख़्लाकी गिरावट का ज़बरदस्त शिकार है । कोई क्षेत्र ऐसा नहीं बचा है, जहां स्वस्थ मूल्य संचरित हों । भारतीय मीडिया का प्रभावशाली वर्ग भी एक तो खुद भी 'पेड न्यूज़' के संगीन दौर से गुज़र रहा है, वहीं दूसरी ओर उसके द्वारा भी कुछ अच्छा करने की दूर-दूर तक आशा नहीं दिखायी पड़ती ! समाज का हर वर्ग अनवरत पतन का शिकार है । बड़े से छोटे तक सभी इसमें लिप्त हैं । देखा जाता है कि जन-जीवन के साथ खिलवाड़ करने एवं गंभीर अपराध करने वाले अक्सर बच निकलते हैं । नक़ली दवाएं बनाने वाले, खाने-पीने की चीज़ों में मिलावट करने वाले, नयी नस्ल की नसों में ज़हर भरने वाले अपराधियों को कोई सज़ा नहीं होगी, क्योंकि वे नेताओं की गोद में जा बैठते हैं, और सुरक्षित, निरापद हो जाते हैं । अत: इसकी मांग जनता के बीच से उठनी चाहिए कि भ्रष्टाचारियों और मिलावटखोरों को भी राष्ट्रद्रोहियों और आतंकवादियों की श्रेणी में रखा जाए, और उन्हें भी फांसी या उम्रक़ैद की सज़ा मिले । वास्तविकता यह है कि भ्रष्टाचार के प्रति हम गंभीर नहीं हैं और 'दुर्लभ' रवैया रखते हैं ! दुर्लभ इसलिए भ्रष्टाचारी भी कहता है कि भ्रष्टाचार मत करो, यह जघन्य अपराध है । भ्रष्टाचार पर बहस में न्यूज़ चौनलों पर जो चेहरे दिखायी देते हैं, उनके बारे में पता करिए, सब एक से बढ़कर एक भ्रष्ट हैं, लेकिन देखिए भ्रष्टाचार के ख़िलाफ़ कितने बड़े सत्यवादी बनकर कैमरे के आगे बैठ जाते हैं । 19 नवम्बर 2005 को उत्तर प्रदेश के लखीमपुर खीरी में पेट्रोल में मिलावट करने वाले अपराधियों ने इंडियन ऑयल कॉरपोरेशन के युवा अधिकारी मंजूनाथन की हत्या कर दी थी । हत्यारे पकड़े भी गये । उनके दो अपराध साफ़-साफ़ थे । एक मिलावटख़ोरी । दूसरा क़त्ल । लेकिन मुख्य अभियुक्त (सत्येन्द्र दुबे) को फांसी की सज़ा नहीं दी गयी, उसे सिर्फ़ उम्रक़ैद की सज़ा मिली ।

आज चीन तरक़्क़ी की ओर क्यों अग्रसर है ? अन्य बातों के साथ उसकी सख़्त सज़ा नीति का इसमें बड़ा हाथ है । वहां सज़ा में धांधली और मनमानापन नहीं है । वहां जिस प्रकार दंगाइयों पर दबिश की जाती है, उसी प्रकार अन्य अपराधों के प्रति भी रवैया अपनाया जाता है । अभी कुछ अवधि पहले की बात है, चीन में मिलावट व भ्रष्टाचार के दोषी दो लोगों को फांसी की सज़ा दी गयी । इसी दोष में एक महिला मैनेजर को उम्रक़ैद की सजा दी गयी थी । चीन में एक मिलावटख़ोर सिंडिकेट द्वारा क़रीब 600 टन नक़ली सूखा दूध

बनाकर बेचा गया था । इस दूध के सेवन से छह बच्चों की मौत हो गयी थी तथा कई बच्चे बीमार पड़ गये थे । मिलावटख़ोरों को फांसी के बाद पूरे चीन में ऐसा धंधा बंद हो गया था, लेकिन हमारे देश में मिलावट के कौन-कौन से धंधे नहीं होते ? मैं ज़हरीली शराब से मौतों का बात नहीं कर रहा हूं , रोज़ाना हज़ारों लीटर दूध डिटर्जेंट और यूरिया से बन रहा है । खाने के हर सामान में खुलेआम मिलावट हो रही है । तेल-घी मिलावटी मिल रहा है, मसाले मिलावटी हैं, सब्ज़ियां-मांस-मछलियां सब घातक केमिकल के सहारे ताज़ा कर बेची जा रही हैं, खिलायी जा रही हैं । धंधेबाज़ों की चांदी है । नेताओं के पास खाने-पीने का शुद्ध माल पहुंच ही रहा है, फिर क्या चाहिए ? 7 जुलाई 2010 की बात है, प्रधानमंत्री डॉ॰ मनमोहन सिंह कानपुर के दौरे पर थे, उन्हें मिलावटी माफ़िया का सामना करना पड़ा । उन्हें अशुद्ध और मिलावटी खाना परोसा गया । प्रधानमंत्री ने शिकायत की, तो प्रशासन हरकत में आया और बयालीस लोगों के ख़िलाफ़ प्राथमिकी दर्ज की गयी, पर बाद में हुआ कुछ नहीं । ममला रिश्वत लेकर रफ़ा-दफ़ा कर दिया गया । अक्सर यह होता है कि सरकारी एजेंसियां छापे मारकर नक़ली खाद्य पदार्थ ज़ब्त करती हैं, मामले दर्ज होते हैं, लेकिन बाद में सब बच निकलते हैं और मिलावट का धंधा बड़े आराम से चलता रहता है । न किसी को सज़ा मिलती है और न दूकान के लाइसेंस ज़ब्त होते हैं । भूल से कभी ज़ब्ती भी हो जाए, तो दूसरे नाम से धंधा चालु हो जाता है । पूरे देश की यही स्थिति है । प्रशासनिक लापरवाही और भ्रष्टाचार के कारण इस काले कारोबार को फलने-फूलने का भरपूर मौक़ा मिल रहा है । प्रिवेंशन ऑफ़ फूड अडल्टरेशन एक्ट 1954 के तहत मिलावट करने वालों के लिए छह महीने से लेकर छह वर्ष तक की क़ैद का प्रावधान है । सिर्फ़ विशेष परिस्थिति में उम्रक़ैद की सज़ा भी दी जा सकती है । अरब देशों में जिन अपराधों के लिए फांसी की सज़ा अमलन मिलती है, वे अपराध नाममात्र के होते हैं ।

यही हालत चीन की है, लेकिन जहां तक आर्थिक अपराधों की बात है, भारत एक भष्टाचारी देश के तौर पर उभरता जा रहा है ! इस स्थिति में क्या हमारे देश की जनता वह दिन देख पाएगी, जब भ्रष्टाचारियों और मिलावटख़ोरों को फांसी पर लटकाया जाएगा ? शायद वह दिन कभी आ भी जाए, क्योंकि जनचेतना के आगे बड़ी से बड़ी अधिनायकवादी सरकारों को समर्पण करना पड़ता है । हमारे देश में आर्थिक अपराधों के लिए क़ानून में मृत्युदंड का प्रावधान करना चाहिए । चीन में आर्थिक अपराध के तहत 68 विभिन्न अपराध पारिभाषित हैं, जिनमें सीधे मृत्युदंड का प्रावधान है । इनमें रिश्वत लेना, वित्तीय अनियमितताएं करना, व्यापारियों द्वारा मिलावट करना जैसे अपरांध शामिल हैं । चीन के 'दुई-हुआ फाउंडेशन' की रिपोर्ट बताती है कि चीन में आर्थिक अपराधों के लिए प्रतिवर्ष मृत्युदंड पाने वाले लोगों की संख्या 5,000 से 6,000 के बीच रहती है ।

चीन में सख़्ती का यह हाल है कि भ्रष्टाचार के दोषी दो उपमेयरों तक को फांसी पर चढ़ा दिया गया था । चीन के झेझियांग प्रांत में हांगझोउ के उपमेयर शू मेइयोंग और जियांगसू प्रांत के सुझोउ के उपमेयर जियांग रेंजी को रिश्वत लेने और धन की हेराफेरी करने का दोषी पाये जाने पर फांसी की सज़ा दी गयी थी । देश को विकास के पथ पर आगे ले जाना है तो दोहरा मापदंड त्यागकर सख़्त सज़ा की ओर क़दम बढ़ाना होगा-सत्ता को भी और लोकसत्ता को भी । जिस समय ब्रिटिश उपनिवेशवाद से आज़ाद हुए थे, तक़रीबन उसी समय चीन भी आज़ाद हुआ था । तब वह अपनी तमाम रूढ़ियों और व्याधियों से उबर रहा था, लेकिन आज चीन कहां है और हम कहां हैं ? चीन सुख-सम्पन्नता, शक्ति, तरक़्क़ी और स्वावलम्बन की जिस ऊंचाई पर चढ़ गया, वह आज अमेरिका जैसे पूर्ण विकसित देश तक के लिए ईर्ष्या-स्पर्धा का विषय बन चुका है । आज़ादी के बाद से जिन नेताओं को देश के लिए कुछ करना चाहिए था, उन्होंने अपनी ऊर्जा अपनी जेबें भरने में लगा दीं । कौन नहीं जानता है कि आज के राजनेता बड़े धन्नासेठ बन चुके हैं । मगर उनके विरुद्ध कोई कार्रवाई नहीं होती । नेता हरहाल में बचा ही रहता है ! उसके लिए हमारा देश स्वर्ग सदृश है !

मां की महत्ता

मां कभी सागर जैसी गहरी, तो कभी अपनी परछाई से भी ज़्यादा अपनी, कभी ज़िन्दगी के टेढ़े-मेढ़े रास्तों पर सच्ची प्रेरणा का स्रोत, तो कभी जगत जननी के रूप में ममता का असीम भंडार । जब एक बच्चा इस धरती पर जन्म लेता है तो जो मुस्कान उसका स्वागत करती है अस्ल ज़िन्दगी से वही उसकी सच्ची मार्गदर्शिका होती है । हर कामयाब आदमी के पीछे एक औरत का हाथ हाता है । और औरत का सबसे आदरणीय रूप मां का रूप है । मां के चरणों में नतमस्तक इस पूरे संसार में न जाने कितने ही काव्य रचे जाते हैं । नौ महीने बच्चे को कोख में पालना फिर उसकी छोटी-छोटी उंगलियों को पकड़ कर सही रास्ता दिखाना और सारी ज़िन्दगी उसकी सफलता में अपनी सफलता को ढूंढ़ना ये शायद महानता की चरम सीमा का प्रत्यक्ष प्रमाण है । दुनिया कहती है कि आधुनिक युग में समय नियोजन एक जटिल समस्या है और यदि मां की भूमिका को देखा जाए तो सदियों से मां अपने हर रूप को कुशलता से निभाते हुए अपने बच्चों के साथ ज़िन्दगी के हर रंग में शामिल होती है । चाहे ज़िन्दगी में कितनी भी कठिन परिस्थितियां क्यों न हो ? मां का दिल हमेशा अपने बच्चों के दर्द में दुखी और उसकी खुशियों में खुश होता है । क्या समय नियोजन का इससे बड़ा उदाहरण हो सकता है ? एक कच्ची मिट्टी को क्या रूप दिया जाए यह एक कुम्हार पर निर्भर करता है । पर मां बच्चे को सिर्फ़ एक ही नहीं बल्कि ज़िन्दगी जीने की कला भी सिखाती है । हर साल नारी के इस गरिमामयी रूप को सम्मानित करने के लिए 'मदर डे' मनाया जाता है । दुनिया के किसी शब्दकोश में ऐसा कोई शब्द ही नहीं है जो मां को धन्यवाद दे सके ।

मां का आंचल और उसकी ममता के आगे तो दुनिया नतमस्तक है पर एक सच्ची कहानी जो यह बताती है कि मां ज़िन्दगी के बाद भी अपने बच्चों का रक्षाकवच होती है, इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण है जब गुजरात में आये भूकम्प में लोगों को बचाया जा रहा था, तब एक वाक़िया ऐसा भी था एक छह महीने का बच्चा अपनी मां की गोद में उसके हाथ में लिपटा खुद को सुरक्षित महसूस कर रहा था, जबकि मां दम तोड़ चुकी थी । औलाद का दर्द मां के लिए उसकी ज़िन्दगी से बढ़कर होता है । ये बात शब्दों में बयान नहीं की जा सकती । 'पूत-कपूत सुने हैं, पर माता सुनी ना कुमाता' ये शब्द आज, कल और न जाने कितनी सदियों तक मां की महानता को नवाज़ते रहेंगे क्योंकि–

मां तू दिल का एहसास है, मन में रहती है तू सदा ।
न है कोई तुझसा, न ही होगा कोई तुझसा ।
तू ही मेरा भूत, भविष्य और वर्तमान है ।
ज़िन्दगी की तपन पर, तू ही तो ठंडक भरी
एक आस है ।

दीप्ति सक्सेना
ब्लॉक I, फ्लैट नं॰ 103, महागणेश नगरी,
मुंडवा, पुणे (महाराष्ट्र)

उत्कृष्ट विचार

'कान्ति' अप्रैल 2013 मासिक में आपने विशेष आयोजन के अंतर्गत श्री रोशन लाल अग्रवाल के आलेख ('ये बदलाव ले जाएंगे सुनिर्माण की ओर') पर उनके सुझाव व विचारों पर पाठकों के विचार आमंत्रित किये हैं, उनके विचारों का सादर अभिनंदन है । रोशन जी ने आम नागरिक को मालिक बनाने, उनके मूल अधिकारों से रूबरू कराने, समाज में अर्थ द्वारा विषमता मिटाने, ब्याज को कल्याणकारी कार्यों में लगाने, योग्यता परीक्षा नहीं, अनुभव, रायल्टी द्वारा प्रतिस्पर्धा पर रोक, संपत्ति के मूल्यांकन का सही कर द्वारा निवारण, दोषपूर्ण कर प्रणाली, इत्यादि पर अपने उत्कृष्ट विचार पाठकों के समक्ष रखे हैं ।

रोशन जी ने मतदाताओं को सजग जागरूक कर उन्हें मालिक बताया, इस बात से पूर्ण सहमत हूं, जनता का शासन, जनता द्वारा जनता के लिए । हमारे द्वारा चुने प्रतिनिधि ही देश चलाते हैं फिर मालिक कौन हम ही न ? लेकिन होता इसका उल्टा है । हम तो गुलाम हो गये ये हमारे मालिक बन गये । हम पर शासन कर हमसे गोपनीयता होती है । हमारी स्वतंत्रता पर प्रहार होता है । अधिकारों का हनन, विभिन्न करों द्वारा महंगाई बढ़ रही है, भ्रष्टाचार व रिश्वतख़ोरी के कारण यह तो अमीर अधिक अमीर हो गये और ग़रीब

इनके कारण सूख कर छुहारा बन गये । इसलिए जागरूक बनकर उसे मतदान करें जो आपको मालिक समझें, आपकी समस्याएं हल करें, वाह ! क्या ख़ूब कहा ।

रोशन जी का विचार है देश के हर नागरिक का प्राकृतिक संपदा-संसाधनों, देश के लाभ पर मूलभूत अधिकार है इसे किसी भी योग्यता, क्षमता, सक्रियता, मेहनत से अधिपत्य नहीं जमाया जा सकता । सुसमाज की स्थापना के लिए सभी को स्वतंत्रता-समानता न्याय द्वारा उपलब्ध कराया जाए जिसमें दबंग अमीर की स्वतंत्रता की परिभाषा रेखांकित की जाए तभी समानता आएगी । छोटे-छोटे करों की अपेक्षा, संपत्ति कर औसत से अधिक हो तो व्यवस्था का ख़र्च निकाल कर आम लोगों में बांट दें या प्रतिभाओं द्वारा जो धन प्रचुर मात्रा में हो न्यायोचित रूप से सभी तक पहुंचे ।'' इस बात से सहमत नहीं हूं । रोशन जी एक बात बताएं आप ख़ुद समझें, जो व्यक्ति अपनी प्रतिभा के द्वारा सभी संसाधनों से अर्जित धन जमा कर रहा है वह भला सभी नागरिक योग्य अयोग्य में क्यों बांटेगा ? क्या इससे कार्यशीलता निष्क्रिय नहीं होगी ? इससे सरकार को राजस्व कहां से मिलेगा ? फ़िलवक़्त सकारात्मक प्रभाव में राजनैतिक-आर्थिक सुधारों के विचारों का पूर्ण स्वागत करते हुए उनका हार्दिक धन्यवाद । साथ ही आपका ('कान्ति' मासिक संपादकजी) हार्दिक आभार आपने श्री रोशनलाल जी के उत्कृष्ट विचारों से पाठकों को रूबरू कराया ।

शशिप्रभा शर्मा

पन्नापुरी हापुड़ (उ०प्र०)

शिक्षा का उद्देश्य

यह आपके अथक परिश्रम का ही परिणाम है कि आपके कुशल मार्गदर्शन में प्रकाशित समाचार पत्र-पत्रिका निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर होती जा रही है । आपका प्रत्येक लेख नयी जानकारियां से युक्त व आशा की नयी किरण दिखाने वाला होता है । आशा है कि आप आगे भी ऐसी ही नवीनतम जानकारियों से सराबोर अंकों से पाठकों को रूबरू करवाते रहेंगे । इसके लिए मैं आपको ढेरों शुभकामनाएं देता हूं और प्रार्थना करता हूं कि वह आगे भी सफलता की नयी ऊंचाइयां छूते रहें ।

हमारा मानना है कि शिक्षा ही वह साधन है जो मनुष्य को भौतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक तीनों क्षेत्रों में आगे बढ़ने का अवसर देती है । वास्तव में शिक्षा ही अंधविश्वासों और कुरीतियों को दूर कर मनुष्य में शुद्ध ज्ञान विकसित करती है । शिक्षा ही जीवन-मूल्यों का महत्व बताकर मनुष्य को सदाचरण के लिए प्रेरित भी करती है । इस प्रकार संतुलित एवं उद्देश्यपूर्ण शिक्षा ही प्रत्येक मनुष्य में नैतिकता, आत्मबल, सेवा और त्याग की भावना को जाग्रत करके उसके संपूर्ण व्यक्तित्व का विकास करती है । इसलिए ईश्वर की इस सर्वश्रेष्ठ कृति 'बालक' को मानवजाति का गौरव एवं ईश्वर का उपहार बनाने के लिए प्रत्येक माता-पिता एवं शिक्षकों का यह प्रथम दायित्व है कि वह संतुलित एवं उद्देश्यपूर्ण शिक्षा के माध्यम से उनके सर्वश्रेष्ठ व्यक्तित्व का निर्माण करें ।

डॉ० जगदीश गांधी

संस्थापक-प्रबंधक

सिटी मांटेसरी स्कूल, लखनऊ

सटीक जानकारी

जीवन में पहली बार 'कान्ति' के मार्च 2013 अंक में शराब पर इतनी विस्तृत, सटीक और दिशावर्द्धक जानकारी मिली । इस्लाम की क्रांतियां पूर्णत: समाज हित में रही हैं । और आज यदि मानवता तमाम मामलों में क़ुरआन के निर्देशों का पालन करे तो ज़िन्दगी ख़ूबसूरत बन जाए ।

शराब तो ज़हर है । आख़िर क्यों पी रहे हैं इसे लोग ? इसे बेच क्यों रही है सरकार ? इससे जितना राजस्व मिलता है उससे ज़्यादा दवा-इलाज पर ख़र्च हो जाता है और परिवार व समाज बर्बाद होता है सो अलग । मई अंक पढ़ा । मौलाना मुहम्मद फ़ारूक़ ख़ां महान तत्वदर्शी हैं । जीवन की सार्थकता और सफलता का विश्लेषण दक्षता के साथ किया है । पैग़म्बरों की भूमिका दिव्य है । हज़रत मुहम्मद साहब ने ज़िन्दगी बिताने का जो सही रास्ता दिखाया उसका पालन कैसे हो-इस दिशा में 'कान्ति' अकेली मार्गदर्शक पत्रिका है । मेरा जीवन सफल है ।

डॉ० कृष्ण मोहन सक्सेना

MMIG/C-627

टिकैत राय योजना, लखनऊ-226017

नैतिक पतन

भारत की राजधानी दिल्ली में पांच वर्षीय मासूम बच्ची के साथ जिस तरह दरिन्दगी-बर्बरतापूर्वक दुष्कर्म किया गया है इससे यह प्रतीत होता है कि यह एक साधारण दुष्कर्म नहीं बल्कि राक्षसों-जानवरों से भी बढ़कर की गयी हरकत है ।

आरोपी व्यक्तियों का मानसिक संतुलन ठीक नहीं है । आज मनुष्यों में से नैतिकता के मापदंड, खत्म हो गये हैं । तभी तो प्रतिदिन दुष्कर्म की घटनाएं तेज़ी से बढ़ रही हैं । प्रतिदिन अनेक घटनाएं समाचार पत्रों की सुर्ख़ियां बन रही हैं ।

आज युवतियां ही नहीं, नन्ही मासूम बच्चियां, बूढ़ी, लाचार, मानसिक रोगी महिलाएं भी इन दुष्कर्मियों से सुरक्षित नहीं हैं ।

बच्चियों-महिलाओं के साथ दुष्कर्म करने वाले दरिन्दों को कड़ी से कड़ी सज़ा दी जानी चाहिए । इन वहशियों पर कठोर से कठोर व शीघ्र क़ानूनी कार्यवाही होनी चाहिए । इन बलात्कारियों के लिए तो फांसी की सज़ा भी कम लगती है ।

यशपाल जैन 'आदर्श'
494/5, राजापार्क, व्यास मार्ग,
जयपुर-302004 (राज॰)

अंधाधुंध वन कटान

मनुष्य का हृदय एक पम्प है जो निरंतर धक-धककर दूषित ख़ून को शुद्ध करता है तथा शरीर की अनगिनत कोशिकाओं को चेतन्यता देता है । प्रकृति पेड़-पौधों की भांति मनुष्य के शरीर की पूरी प्रक्रिया गहरी तथा अनन्त है । अर्थात शरीर से दूषित भाव निकाल कर अन्दर छिपी मानवी तथा प्राकृतिक संरक्षण भावना तथा प्रकृति प्रेम विकसित करें । किसी भी क्षेत्र में अधिक प्रगति के लिए आत्मविश्वास व आत्मशक्ति का होना ज़रूरी है । आध्यात्मिक शक्ति को पेड़-पौधों के संरक्षण व संवर्द्धन के साथ जोड़ने से अपार शक्ति मिलती है ।

मानव का विकास वृक्षों की गोद में हुआ है तथा उसका जीवन भी वृक्षों पर आधारित है । महाभारत के अनुशासन पर्व में लिखा है जो वृक्ष लगाता है उसके लिए यह वृक्ष पुत्र होते हैं । इस बात में संशय नहीं है । इन्हीं के कारण परलोक में उसे स्वर्ग तथा अक्षयलोक प्राप्त होता है ।

इस तरह प्राचीन ग्रंथों से तनों की महिमा का पता चलता है । चाहे वाल्मीकि रामायण हो या कालिदास के काव्य-ग्रंथ सभी में वनों की उपयोगिता सिद्ध करने वाले तथ्य भी हैं । तात्पर्य है कि वृक्ष और जीव जन्तुओं का जीवन एक-दूसरे पर निर्भर है । वृक्षों से ही प्राणवायु, औषधि और फल प्राप्त होते हैं । क्षुधि शांत होती है लेकिन वृक्षों की लगातार कटाई से विश्व के सामने एक बड़ी समस्या खड़ी हो गयी है ।

भारतीय वन संरक्षण स्थित रिपोर्ट 2001 के अनुसार देश व प्रदेश में क्रमश: 23.03 प्रतिशत तथा 8.8 प्रतिशत भू-भाग है जो वनाच्छादित है । राष्ट्रीय वन नीति तथा राज्य वन नीति के अनुसार प्रदेश में 33 प्रतिशत भू-भाग अर्थात 80 हज़ार वर्ग किमी॰ क्षेत्र में वनावरण होना चाहिए किन्तु प्रदेश में वह भू-भाग 22,291 वर्ग किमी॰ है । योजना आयोग भारत सरकार द्वारा देश में वर्ष 2007 तक भौगोलिक क्षेत्रफल के प्रतिशत व वर्ष 2012 तक 33 प्रतिशत भू-भाग के वनाच्छादित-वृक्षाच्छादित करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है । सरकार द्वारा बनायी गयी नीतियों पर अमल करना जन सहयोग के बिना संभव नहीं है । इसके लिए लोगों में पर्यावरण के प्रति चेतना जगाना बहुत ज़रूरी है । क्योंकि आमतौर पर यह देखा गया है कि सरकार द्वारा बनायी गयी पर्यावरण संबंधी प्रभावी नीतियों को लोग सैद्धांतिक रूप से स्वीकार करते हैं । मगर व्यावहारिक धरातल पर उनका कोई पालन नहीं करता । (पालन नहीं होता)। वनावरण का कार्य निरंतर चलने वाला तथा समयबद्ध है । वानिकी कार्यक्रम को जनसहभागिता के माध्यम से पूरा करने की आवश्यकता है । वनावरण के लिए युवापीढ़ी के साथ ही बच्चों को वन शिक्षा के लिए तैयार किया जाना चाहिए ।

जनसंख्या का बढ़ता दबाव, शहरीकरण व औद्योगीकरण के फलस्वरूप उत्पन्न स्थितियों से पर्यावरण संतुलन, प्रदूषण, नियंत्रण व जल स्रोतों के संरक्षण में वनों का महत्व अधिक स्पष्ट हो गया है । वनावरण बढ़ाने के लिए वन भूमि के बाहर हर प्रकार की उपलब्ध कृष्य अकृष्य भूमि तथा परती भूमि, ऊसर, बीहड़ तथा अन्य प्रकार की परती भूमि, विभिन्न राजकीय एवं ग़ैर-राजकीय संस्थानों के परिसर में उपलब्ध भूमि प्र बड़े पैमाने पर जनसहयोग से सघन वृक्षारोपण की तैयारियां की जाए । वृक्षों व प्राकृतिक प्रेम व संरक्षण सेवा में सृष्टि की सेवा करने का पुण्य कार्य संपन्न होता है ।

डॉ॰ तुमुल विजय शास्त्री
15 आदर्श नगर, चन्दौसी-202412,
ज़िला-मुरादाबाद

क़ाबिले तारीफ़

मुझे आपकी मासिक पत्रिका 'कान्ति' के अवलोकन का सतत् अवसर मिल रहा है, एतदर्थ आभार । पत्रिका के प्रत्येक अंक विविध पाठ्य सामग्री से ओत-प्रोत होने के कारण हर वर्ग के पाठकों के लिए बेहद उपयोगी हैं ।

पत्रिका के प्रति आपकी निष्ठा व समर्पण भाव वास्तव में क़ाबिले तारीफ़ है ।

डॉ॰ त्रिलोकी सिंह

हिन्दूपुर, करछना, इलाहाबाद-212301

धर्म का पाखंड क्यों ?

एक ब्रह्मण धर्म-कर्म में विमग्न रहता था । उसने जीवन भर कभी पूजा-पाठ किये बिना अन्न ग्रहण नहीं किया । जब वृद्धावस्था आयी और बीमार पड़ गया और अंतिम समय निकट देखकर विचार करने लगा–काश ! प्राण निकलने से पूर्व मुझे गंगा जल की एक बूंद मिल जाती तो मेरे पापों का नाश हो जाता और मुझे मुक्ति मिल जाती ।

इसी बीच कबीर दास जी घूमते-घूमते उसके घर पहुंच गये और उसकी कुशलक्षेम पूछी । कबीर ने कहा कि मैं सेवा करने का अभिलाषी हूं । ब्रह्मण ने उत्तर दिया मैं सेवा कराने का अभिलाषी नहीं हूं लेकिन तुम सेवा करना ही चाहते हो तो मुझे एक लोटा गंगा जल लाकर दो । कबीर अपने लोटे में गंगा जल ले आये और ब्रह्मण को देने लगे । इस पर वह बोला तुम्हें अपने लोटे में गंगाजल लाने को किसने कहा था । जुलाहे के लोटे से गंगा जल ग्रहण कर मैं पापों से मुक्त कैसे हो सकता हूं । इससे तो मेरा धर्म भ्रष्ट हो जाएगा ।

कबीर दास जी बोले हे 'ब्रह्मण देवता' जिस गंगा जल में इतनी शक्ति नहीं है कि वह जुलाहे के लोटे को पवित्र कर सके, तो आपको उस जल से कैसे मुक्ति मिल जाएगी?

ब्रह्मण निरुत्तर हो गया और निविमेष उनकी ओर ही देखने लगा । कहने का मतलब यह कि जब तक आंतरिक मन साफ़ नहीं हो बाहरी वस्तुएं उसे साफ़ नहीं कर सकती । ज़रूरत है दुर्भावना, क्रोध, मोह, लोभ आदि को त्यागने की ।

घेवरचन्द गोदीका

किशनपोल बाज़ार, जयपुर (राज॰)

आभार

'कान्ति' से ही मुझे इस्लाम के संबंध में अनेक नूतन जानकारियां मिलती रहती है । यहां तक कि हिन्दू धर्म, अन्य धर्मों एवं सामाजिक बुराइयों तथा उनके निराकरण की बातें भी आप विद्वानों से लिखवा कर समाज के उचित मार्गदर्शन देते हैं । आभार !

अम्बु शर्मा

25/8 डायमंड हार्बर रोड,
कोलकाता-700008

क़ुरआन ज्योति

(पृष्ठ 5 का शेष)

यह जिज़्या वह चीज़ है जिसके लिए बड़ी-बड़ी प्रतिरक्षात्मक बातें उन्नीसवीं सदी ईसवी के अपमानजनक युग में मुसलमानों की ओर से प्रस्तुत की गयी हैं और उस युग की यादगार कुछ लोग अब भी मौजूद हैं जो सफ़ाई देने में लगे हुए हैं । लेकिन अल्लाह का दीन इससे बहुत उच्च व श्रेष्ठ है कि उसे अल्लाह के विद्रोहियों के सामने विवशता व्यक्त करने की कोई ज़रूरत हो । सीधी और साफ़ बात यह है कि जो लोग अल्लाह का दीन नहीं अपनाते और अपनी या दूसरों की निकाली हुई ग़लत राहों पर चलते हैं, वे अधिक से अधिक बस इतनी ही स्वायत्तता के अधिकारी हैं कि स्वयं जो ग़लती करना चाहते हैं, करें, लेकिन उन्हें इसका बिल्कुल कोई अधिकार नहीं है कि अल्लाह की धरती पर किसी जगह भी सत्ता व शासन की बागडोर उनके हाथों में हों और वे इंसानों की सामूहिक जीवन-व्यवस्था अपनी गुमराहियों के अनुसार स्थापित करें और चलाएं । यह चीज़ जहां कहीं उनको प्राप्त होगी, बिगाड़ फैलेगा और ईमान वालों का दायित्व होगा कि उनको उससे बेदख़ल करने और उन्हें कल्याणकारी व्यवस्था के अधीन करने का यत्न करें ।

अब रहा यह प्रश्न कि यह जिज़्या आख़िर किस चीज़ की क़ीमत है, तो इसका उत्तर यह है कि यह उस आज़ादी की क़ीमत है जो उन्हें इस्लामी शासन के अन्तर्गत अपनी गुमराहियों पर जमे रहने के लिए दी जाती है और इस क़ीमत को उस कल्याणकारी शासन-व्यवस्था के प्रबंध पर ख़र्च होना चाहिए जो उन्हें इस आज़ादी के इस्तेमाल की अनुमति देता है और उनके अधिकारों की रक्षा करता है । और इसका बड़ा लाभ यह है कि जिज़्या देते समय हर साल ज़िम्मियों में यह एहसास ताज़ा होता रहेगा कि अल्लह की राह में ज़कात देने के सौभाग्य से महरूमी और उसके बजाय गुमराहियों पर जमे रहने की क़ीमत अदा करना कितना बड़ा दुर्भाग्य है, जिसमें वे पड़े हुए हैं ।

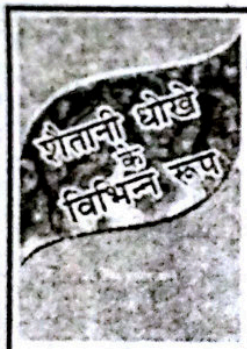

हमारी नई किताब

शैतानी धोखे के विभिन्न रूप

लेखकः डा॰ सय्यद शाहिद अली

पृष्ठ 96

मूल्य 40 ₹

शैतान क्या है? शैतान क्यों है? शैतान कैसा है? शैतान मनुष्यों को किस-किस तरह बहकाता है? इन प्रश्नों का उत्तर इस पुस्तक में मिलेगा। शैतान इस सांसारिक जीवन में मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु है इसलिए मनुष्य को सावधान रहना चाहिये। मनुष्य अपने प्रत्येक अच्छे या बुरे काम का स्वयं ज़िम्मेदार है शैतान केवल मनुष्य को बहकाता है। वास्तव में शैतान को मनुष्य के इम्तिहान के लिए छूट दी गयी। इन्ही सब बातों की इस पुस्तक में व्याख्या की गयी है।

हमारी अन्य पुस्तकें

इस्लाम आतंक या आदर्श?	(उर्दू, हिन्दी, अंग्रेजी)	स्वामी लक्ष्मीशंकराचार्य	₹ 40=00
ग़लत फ़हमियों का निवारण	(उर्दू, हिन्दी, अंग्रेजी)	डा॰ ज़ाकिर नाईक	₹ 25=00
डा॰ अम्बेडकर और इस्लाम	(उर्दू, हिन्दी)	आर॰ एस॰ आदिल	₹ 10=00
इतिहास के साथ यह अन्याय	(उर्दू, हिन्दी)	बी॰ एन॰ पाण्डे	₹ 7=00
मुहम्मद (सल्ल॰) इस्लाम के पैग़म्बर	(हिन्दी, अंग्रेजी)	प्रो॰ रामा कृष्णा राव	₹ 15=00
हज़रत मुहम्मद और भारतीय धर्म ग्रन्थ	(हिन्दी)	डा॰ एम॰ ए॰ श्रीवास्तव	₹ 18=00
रियाजुस्सालिहीन (हदीस संग्रह)	(हिन्दी)	इमाम मुहिउद्दीन अन-नव्वी	₹ 170=00

दावती काम करने वालों और मुफ़्त तक़सीम करने वालों के लिए विशेष छूट।

मधुर सन्देश संगम

E-20, अबुल फ़ज़्ल इन्क्लेव, जामिया नगर,
ओखला, नई दिल्ली - 110025
फोन : 011 - 26953327, 09212356332
E-mail :madhursandeshsangam@yahoo.co.in

इस्लाम की मौलिक शिक्षाएं

■ मौलाना सैयद हामिद अली

इस्लाम की एक अन्य महत्वपूर्ण और मौलिक शिक्षा अमानतदारी है । इस्लाम के अनुसार इन्सान की पूरी ज़िन्दगी और उसके समस्त साधनों का वास्तविक मालिक केवल अल्लाह है, जिसने ये चीज़ें मनुष्यों को अमानत (धरोहर) के रूप में प्रदान की हैं, इसी लिए ये सभी चीज़ें जो मनुष्य को प्राप्त हैं, अल्लाह की अमानत हैं । इस अमानत को अल्लाह की इच्छा के अनुसार ही इस्तेमाल करना आवश्यक है, क्योंकि परलोक में अल्लाह के सामने इस बात का उत्तर देना है कि उसने इस अमानत को अल्लाह की इच्छा के अनुसार प्रयोग करके अमानतदारी का प्रमाण दिया या अपनी मर्ज़ी चलाकर अमानतदारी की मर्यादा को आघात पहुंचाया । अल्लाह की अमानत के अतिरिक्त मनुष्यों की भी अमानतें होती हैं, जो वे हमारे पास रखते हैं या कुछ ज़िम्मेदारियां वे हमारे ऊपर डालते हैं और हम उन्हें स्वीकार कर लेते हैं या वे अपनी कुछ निजी बातें हम से कहते हैं । ये सभी अमानतें हैं और मोमिन का कर्तव्य है कि अल्लाह की अमानत की तरह इनका भी आदर करे । कुरआन मजीद में अल्लाह तआला फ़रमाता है–

''हे ईमान लाने वालो ! अल्लाह और उसके रसूल के साथ विश्वासघात न करो और न अपनी अमानतों में ख़ियानत करो जबकि तुम जानते हो ।' (कुरआन, 8:27)

ईमान वालों के गुणों का उल्लेख करते हुए अल्लाह ने फ़रमाया–'और ये वे लोग हैं जो अपनी अमानतों और वादों (प्रतिज्ञा) का ख़याल रखते हैं ।'

मुनाफ़िक़ों (कपटाचारियों) के दुर्गुण बयान करते हुए अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने इरशाद फ़रमाया–

'चार आदतें हैं, जिस किसी में ये चारों हों वह पक्का मुनाफ़िक़ है और जिसमें इनमें से कोई एक आदत हो, तो उसमें निफ़ाक़ की एक आदत होगी, जब तक कि वह उसे छोड़ न दे । वे आदतें इस प्रकार हैं–

अमानत रखी जाए तो ख़ियानत (गबन) करे, बात करे तो झूठ बोले, वादा करे तो उसे न निभाये और झगड़ा हो जाए, तो ख़ुदा की अवज्ञा करे और अश्लील बातों पर उतर आये ।' (बुख़ारी, मुस्लिम)

ख़ियानत, झूठ बोलना, वादा पूरा न करना और झगड़े में न्याय से हटकर अश्लीलता पर उतर आना ये ऐसी आदतें हैं जो रसूल (सल्ल०) के कथनानुसार मनुष्य को 'ख़ालिस मुनाफ़िक़' (विशुद्ध कपटाचारी) बना देती हैं, ऐसा व्यक्ति केवल कहने का मुसलमान होता है, लेकिन वास्तव में इस्लाम से उसका कुछ भी संबंध नहीं, इसी लिए ये आदतें बड़ी ही ख़तरनाक हैं । इस हदीस से यह बात भी स्पष्ट हो जाती है कि अमानतदारी, सच बोलना, वादे को निभाना और दुश्मनी तक में न्याय और सज्जनता पर अटल (रहना ईमान वालों के गुण हैं ।

इस्लाम की एक अन्य दूसरी महत्वपूर्ण और मूल शिक्षा ईमानदारी है । मोमिन लेन-देन का खरा और मामले का सच्चा होता है । वह अपने कर्तव्यों को ईमानदारी से पूरा करता है और जब वह दूसरों से काम लेता है तो उन्हें उनका पसीना सूखने से पहले ही उनकी उचित मज़दूरी देता है । वह बेईमानी और धोखा देकर कोई चीज़ प्राप्त नहीं करता । लोगों की अनभिज्ञता और विवशता से अनुचित लाभ नहीं उठाता, अपने हक़ से अधिक नहीं लेता । उसके लेने और देने के मापदंड अलग-अलग नहीं होते, बड़े से बड़े लालच के अवसर पर भी अपने ईमान पर आंच नहीं आने देता । अपनी अन्तरात्मा का कहीं भी सौदा नहीं करता । वह अच्छी तरह जानता है कि ईमानदारी से हट जाने वाले लोग अल्लाह की दृष्टि में भी बुरे होते हैं और मनुष्य भी उन्हें अच्छा नहीं समझते । कुरआन मजीद में अल्लाह तआला फ़रमाता है–

'जो लोग अल्लाह से किये हुए वादे (प्रतिज्ञा) और अपनी क़समों का (दुनिया के) थोड़े मूल्य पर सौदा करते हैं, उनके लिए परलोक में कोई हिस्सा नहीं और उनसे न तो अल्लाह क़ियामत के दिन बात करेगा और न उनकी ओर देखेगा और न उन्हें (गुनाहों से) पाक करेगा (कि जन्नत में जा सकें) उनके लिए तो दुखदायिनी यातना है ।'

(कुरआन, 3:77)

मोमिन जानता है कि लेन-देन और मामलों में गड़बड़ केवल वही लोग करते हैं, जो खुदा और आख़िरत (परलोक) पर विश्वास नहीं रखते–

'तबाही है डंडी मारने वालों के लिए । ये जब दूसरे लोगों से नाप कर लेते हैं तो पूरा-पूरा लेते हैं और जब उन्हें नाप या तौल कर देते हैं तो घटा कर देते हैं । क्या उन्हें विश्वास नहीं कि उन्हें एक बड़े दिन के अवसर पर जीवित किया जाएगा, उस दिन जबकि सब लोग सारे संसार के रब के सामने खड़े होंगे ।' (कुरआन, 83:1-6)

मोमिन का चरित्र इससे भिन्न होता है, क्योंकि उसके लिए अल्लाह का आदेश है–'जब तुम नाप कर दो तो पूरा कर दो और सीधी-सच्ची तराज़ू से तौलो यही उत्तम है और इसका परिणाम भी अच्छा है ।' (कुरआन, 17:35)

कारोबार अगर सच्चाई और ईमानदारी से किया जाए तो वह बड़ी नेकी बन जाता है । हदीस में है–

'सच्चा और ईमानदार व्यापारी (परलोक में) नबियों, सिद्दीक़ों और शहीदों के साथ होगा ।'

(तिरमिज़ी, इब्ने माजा)

किसी का माल अवैध ढंग से लेना और इस उद्देश्य के लिए रिश्वत देना भी मना है–'एक-दूसरे का माल ग़लत ढंग से मत खाओ, न अपने माल (रिश्वत के तौर पर) अधिकारियों को दो, ताकि लोगों के माल का एक भाग हक़ मार कर जानते-बूझते हड़प कर लो ।'

(कुरआन, 2:188)

इस प्रकार जो माल हाथ आता है वह हराम होता है और हराम खाने वालों की दुआ अल्लाह क़बूल नहीं करता–

'अबू हुरैरा (रज़ि॰) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने फ़रमाया, अल्लाह पाक है और पाक चीज़ ही क़बूल करता है । उसने ईमान वालों को वही आदेश दिया है, जो उसने अपने रसूलों को दिया है । अतः उसने फ़रमाया, 'हे रसूलो ! पवित्र चीज़ें खाओ और भले काम करो ।' और फ़रमाया, 'हे ईमान वालो ! जो पाक चीज़ें हमने तुम्हें प्रदान की हैं उन्हें खाओ ।' फिर आप (सल्ल॰) ने एक व्यक्ति के बारे में कहा कि वह लंबा सफ़र करता है और आसमान की तरफ़ हाथ फैलाकर और हे प्रभु, हे प्रभु ! कहकर दुआ करता है, लेकिन उसका खाना हराम होता है, पीना हराम होता है, वस्त्र हराम होता है और वह हराम से पला बढ़ा होता है तो उसकी दुआ कैसे क़बूल होगी ।' (मुस्लिम)

जो शरीर हराम माल से पला-बढ़ा हो, उसके लिए नरक ही उचित रहेगा । प्यारे नबी (सल्ल॰) का कथन है–

'जो शरीर हराम से बना हो, वह जन्नत स्वर्ग में नहीं जाएगा । जो मांस हराम से बना हो उसका उचित ठिकाना नरक ही है ।' (अहमद, दारमी, बैहक़ी)

मोमिन हराम चीज़ों से तो बचता ही है, साथ ही साथ उन चीज़ों से भी दूर रहता है जिनमें कुछ सन्देह हो, हदीस में है–

'हलाल स्पष्ट है और हराम भी स्पष्ट है लेकिन इन दोनों के बीच में कुछ संदिग्ध चीज़ें हैं जिनके बारे में बहुत से लोग नहीं जानते । तो जो ऐसी संदिग्ध चीज़ों से बचा रहा उसने अपने दीन और अपनी प्रतिष्ठा को बचा लिया, लेकिन जो इन संदेह की चीज़ों में पड़ गया वह हराम में पड़ गया । जैसे कि चरवाहा वर्जित चराहगाह के आस-पास चराये तो वह उस चरागाह में भी चराने लगेगा । सुनो ! हर बादशाह की एक चरागाह होती है । सुन ! अल्लाह की वर्जित चरागाह हराम चीज़ है ।' (बुख़ारी, मुस्लिम)



अनुपम जीवन

सर्वाधिक प्रभावकारी व्यक्तित्व

● प्रो॰ के॰ एस॰ रामाकृष्ण राव अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'इस्लाम के पैग़म्बर मुहम्मद' में लिखते हैं–'मुहम्मद (सल्ल॰) का जन्म अरब रेगिस्तान में मुस्लिम इतिहासकारों के अनुसार 20 अप्रैल, सन 571 ई॰ में हुआ । 'मुहम्मद' का अर्थ होता है जिसकी अत्यंत प्रशंसा की गयी हो ।' मेरी नज़र में आप अरब के तमाम सपूतों में महाप्रज्ञ और सबसे उच्च बुद्धि के व्यक्ति हैं । क्या आपसे पहले और क्या आपके बाद, इस लाल रेतीले अगम रेगिस्तान में जन्मे कवियों और शासकों की अपेक्षा आपका प्रभाव कहीं ज़्यादा व्यापक है ।

जब आप प्रकट हुए अरब उपमहाद्वीप केवल एक सूना रेगिस्तान था । मुहम्मद (सल्ल॰) की सशक्त आत्मा ने इस सूने रेगिस्तान से एक नये संसार का निर्माण किया । एक नये जीवन का, एक नयी संस्कृति और नयी सभ्यता का । आपके द्वारा एक ऐसे नये राज्य की स्थापना हुई, जो मराकश से लेकर इंडीज़ तक फैला । और जिसने तीन महाद्वीपों–एशिया, अफ़्रीक़ा और यूरोप के विचार और जीवन पर अपना असर डाला । इस्लाम का यह सिद्धांत कि 'धर्म के मामले में कोई ज़ोर-ज़बरदस्ती नहीं', आज सब पर भली-भाँति विदित है । विश्व विख्यात इतिहासकार गिब्बन ने कहा है–'मुसलमानों के साथ यह ग़लत और घातक धारणा जोड़ दी गयी है कि उनका यह कर्तव्य है कि 'वे हर धर्म का तलवार के ज़ोर से उन्मूलन कर दें ।' इस इतिहासकार ने कहा है कि 'यह जाहिलाना इल्ज़ाम क़ुरआन से भी पूरे तौर पर खंडित हो जाता है और मुस्लिम विजेताओं के इतिहास तथा ईसाइयों की पूजा-पाठ के प्रति उनकी ओर से क़ानूनी और सार्वजनिक उदारता का जो प्रदर्शन हुआ है उससे भी यह इल्ज़ाम तथ्यहीन सिद्ध होता है ।''

अत्यंत सुगम धर्म

● डॉ॰ ताराचन्द मुहम्मद (सल्ल॰) की शिक्षाओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं–''जिस धर्म का आप (सल्ल॰) ने प्रचार किया, वह अत्यंत सरल था । इसमें अल्पतम धार्मिक विधान और रीति-रिवाज माने जाते थे, क्योंकि क़ुरआन के अनुसार, ईश्वर मनुष्य पर पड़े हुए बोझ को हल्का और आसान करना चाहता था । इसका केन्द्रीय सिद्धांत ईश्वर की एकता (अर्थात वह एक है) और सर्वाधिक महत्वपूर्ण कार्य प्रतिदिन पांच समय की नमाज़, साल में रमज़ान में महीने भर का रोज़ा, जमा निधि पर ढाई प्रतिशत के हिसाब से ज़कात, जीवन में एक बार सामर्थ्य रखने वाले व्यक्तियों को हज करना है । ये इस्लाम के स्तम्भ हैं । सामाजिक पक्ष में इसकी सर्वाधिक मनभावन विशेषता मुसलमानों की समानता और बंधुत्व पर ज़ोर है तथा इस्लामी समाज में किसी धार्मिक वर्ग की अनुपस्थिति है ।''

भाईचारे और समानता की शिक्षा

● प्रसिद्ध विद्वान श्री के॰एम॰ मुंशी कहते हैं कि मुहम्मद साहब का कथन याद दिलाता हूं कि हमारा व्यवहार एक-दूसरे के साथ भाईचारे व समानता का होना चाहिए । वास्तव में, नस्ल, वर्ण, धर्म और जाति में बंटी हुई इस दुनिया को ऐसी ही शिक्षा की नितांत आवश्यकता है ।

मुहब्बत और रहमत का पाक जज़्बा

'सत्उपदेश' के संपादक लिखते हैं–''एक आम विचार यह है कि इस्लाम तलवार के ज़ोर से फैला है । मगर हम इस बात को स्वीकार नहीं कर सकते, क्योंकि ज़बरदस्ती जो चीज़ किसी अत्याचारी को दी जाती है वह जल्द ही अत्याचारी से वापस भी ले ली जाती है । अगर इस्लाम का प्रचार ज़ुल्म के साथ हुआ होता तो इस्लाम का नाम आज बाक़ी नहीं रहता, परंतु ऐसा नहीं है । हम देख रहे हैं कि इस्लाम दिन-प्रतिदिन तरक़्क़ी की ओर अग्रसर है, क्यों ? इसलिए कि मुहम्मद (सल्ल॰) के अन्दर आत्मशक्ति थी, मनुष्य मात्र के लिए प्रेम था । आपके अन्दर मुहब्बत और रहम का पाक जज़्बा था एवं नेक विचारों की ओर आप रहनुमाई करते थे ।''

मानवता पर उपकार

● पंडित भगत साईं दास, एडवोकेट (कोहभरी) लिखते हैं–''श्री रामचन्द्र, श्री कृष्ण, गुरु नानक, हज़रत मूसा (अलैहि॰), हज़रत ईसा (अलैहि॰)–ये सब आलीक राजा थे और मैं कहता हूं कि इनमें एक आत्मा का शहंशाह भी था, जिसका मुक़द्दस नाम मुहम्मद (सल्ल॰) था, जिनके

पवित्र जीवन के संबंध में कुछ तुलना करना बहुत कठिन है । इसमें शक नहीं है कि प्रत्येक सुधारक ने आकर संसार में बहुत कुछ किया है, मगर हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) ने संसार पर इतने एहसान किये हैं, जिसकी मिसाल नहीं मिल सकती ।''

संतुलित जीवन-व्यवस्था

वरिष्ठ पत्रकार विद्या प्रकाश, जौनपुर (उ॰प्र॰) लिखते हैं-''हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) ने मानव-समाज को एक ऐसी व्यवस्था प्रदान की जो अतिवादी आग्रहों से मुक्त, संतुलित, स्पष्ट, सुनियोजित और सांगोपांगपूर्ण है, जिसमें जीवन जगत का कोई ऐसा बिन्दु बाक़ी नहीं दिखता जिसका गंभीरतापूर्वक निरुपण न किया गया हो । यह एक ऐसी व्यवस्था है जो न्यायपूर्ण, नैतिक, अम्नपसन्द और इन्साफ़परस्त है और जिसमें देश और समाज के कमज़ोर से कमज़ोर हर मज़लूम-मुहताज की परवशि, हिफ़ाज़त और तरक़्क़ी का पक्का और यक़ीनी भरोसा दिलाया गया है । महिलाओं की इज़्ज़त-आबरू की बेहतरीन सुरक्षा और हक़परस्ती का माक़ूल इन्तिज़ाम किया गया है। पांचों वक़्त की नमाज़ें फ़र्ज़ और नमाज़े-ईदैन से लेकर हज और उमरा के मुख़्तलिफ़ मरहलों पर आदमी को आदमी से, समाज को समाज से जोड़ने का उत्तम प्रबंध किया गया है। गृहस्थी और संन्यास, दुनियादारी और वैराग्य, भौतिकता और आध्यात्मिकता का ऐसा सामंजस्य अद्‌भुत और वैज्ञानिक है ।

...आज समाज में चतुर्दिक, असंतोष, आक्रोश और चित्तक्षोभ का दावानल धधक रहा है...इसका कारण यह है कि हम अल्लाह की हिदायत से अनजान हैं, भटक गये हैं या असलियत को जान-समझकर भी उससे बेख़बर हैं । यह निश्चित और अटल सत्य है कि हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) का मानवतावादी और कल्याणकारी संदेश ही हमें सच्चे अर्थ में भटकाव, अशांति और कलह से बचाकर हमारा उद्धार कर सकता है । आपका संपूर्ण जीवन-चरित्र अनुकरणीय और शिक्षाप्रद है । प्रत्येक जाति, समुदाय और वर्ग के लिए आपकी शिक्षाएं उपयोगी और कल्याणकारी हैं । हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) की शिक्षाओं पर अमल से ही वर्तमान समस्याओं का समाधान और शांति-स्थापना संभव है । इसके अलावा अन्य कोई विकल्प नहीं है हमारे पास ।''

सारे संसार के लिए रहमत

● डॉ॰ रमेश प्रसाद गर्ग के शब्दों में-

''पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) ने किसी के लिए बद्दुआ नहीं की, इसी लिए उन्हें 'रहमतुल्लिल-आलमीन' कहा जाता है । उन्होंने सबसे महान कार्य गुलामी का ख़ात्मा करके किया । दासों की ख़रीद-बिक्री का विरोध किया । काले-गोरे, ऊंच-नीच के अन्तर को मिटाया । आपने बताया कि सभी इन्सान एक ख़ुदा के बनाए हुए हैं और इस लिहाज़ से सब एक-दूसरे के बराबर हैं । किसी विशेष परिवार में जन्म लेने के कारण कोई व्यक्ति महान या बड़ा नहीं हो जाता । वह अपने अमल यानी कर्मों के द्वारा महानता प्राप्त करता है । जो जितना अधिक मुत्तक़ी और परहेज़गार है, वह उतना ही अधिक आदरणीय है । आपके अनुसार ईश्वर हमेशा से है और हमेशा रहेगा । उसके न तो मां है और न बाप । न कोई उसका भाई है, न पत्नी, न बेटा, न बेटी । वह हर प्रकार के सांसारिक रिश्तों और बंधनों से पाक है । वह असीम है । आसमान, ज़मीन और सारी सृष्टि का रचनाकार वही है । वही इन्सानों को पैदा करता है । वही रिज़्क़ देता है, जिलाता है और मारता है । इन्सान को उसी के आगे सिर झुकाना चाहिए और केवल उसी की इबादत क़रनी चाहिए । जो अच्छे कार्य करेगा, ईश्वर उसको स्वर्ग देगा, ख़राब कार्य करने वालों को नरक में स्थान मिलेगा । पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) की शिक्षाओं का सबसे बड़ा प्रभाव यह हुआ कि धीरे-धीरे आपके मानने वालों की संख्या काफ़ी बढ़ती गयी । आपने अपने अनुयायियों को जो शिक्षा दी उस पर स्वयं भी अमल किया । अपने विरोधियों से भी हमेशा प्रेम का व्यवहार किया ।''

मानव-सेवा

बाबू ब्रज बिहारी लाल, बी॰ए॰, एल॰एल॰बी॰ ने लिखा है-''हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) की शान में जानकारी न होने या शरारत से कहना कि आपकी शिक्षा क़त्ल और ख़ून ख़राबे की थी, बिल्कुल ग़लत और आधारहीन बात है । जिस व्यक्ति का हृदय नन्हे बच्चों के रोने से बेचैन हो जाए, जो हज़ारों गालियां सुनकर भी अपनी नज़र नीची रखे, बदतरीन दुश्मनों को भी क्षमा कर दे, सब कुछ ग़रीबों पर न्योछावर कर दे, जो स्वयं अपने हाथों से ग़ैर-मुस्लिमों की ख़िदमत करे और उनके साथ इज़्ज़त से पेश आये, क्या उनकी शान में ऐसा कहा जा सकता है ! हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) की शिक्षा हमेशा यह रही कि जो कार्य किया जाए हमेशा वह ख़ुलूस और सच्चाई से किया जाए । आपकी शिक्षा का मक़सद इन्सान की ख़िदमत-गुज़ारी है ।''

('हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) : सबके लिए' से)

स्त्री अस्मिता : कुछ विचारणीय बातें

■ रचना त्यागी 'आभा'

वर्ष 2001 में एक अंग्रेज़ी फ़िल्म आयी थी–'Everybody says I'm fine', जिसके साथ अभिनेता राहुल बोस ने निर्देशन की दुनिया में पदार्पण किया था ! फ़िल्म का कथानक, जो की राहुल बोस ने ही लिखा था, इतना वीभत्स व कुरूप था, कि फ़िल्म देखने के कई घंटे बाद तक दिमाग़ जैसे जड़ हो गया था ! समझ नहीं पा रही थी कि क्या सोचकर यह फ़िल्म बनायी गयी है ! क्या पैसा कमाने के लिए ऐसी फ़िल्में बनाने के सिवा और कोई रास्ता नहीं है ? एक निर्माता, निर्देशक या कलाकार समाज के प्रति अपनी नैतिक ज़िम्मेदारी कैसे भूल सकता है ? उस फ़िल्म में बाप-बेटी और सास-दामाद के अवैध संबंध बहुत ही घृणित और अपचनीय तरीक़े से दर्शाये गये थे ! देखकर एकदम झटका लगा था, कि क्या ऐसा वास्तव में कहीं संभव है ? लेखक की कल्पना ने उड़ान भी भरी, तो किस गर्त में !! संभव है कि उसके जीवन के कुछ अनुभवों ने उसे ऐसी कुत्सित कल्पनाएं करने पर विवश किया हो, पर उस समय मेरा मन राहुल बोस के प्रति घृणा से भर गया था, कि यह समाज में किस प्रकार की गंदगी फैलाना चाह रहा है ! समाज पर फ़िल्मों का बहुत गहरा प्रभाव पड़ता है, विशेषत: कुत्सित और कमज़ोर मानसिकता वाले लोगों पर ! जिन लोगों के मन में दूर-दूर तक उस प्रकार के निम्नतम विचार नहीं आये थे, क्या उस फ़िल्म के बाद भी नहीं आये होंगे ?

अब, इतने वर्षों बाद जब समाचारों में पिता द्वारा पुत्री के बलात्कारों की ख़बरें पढ़ती हूं, तो अनायास ही ध्यान उस फ़िल्म की तरफ़ चला जाता है ! मैं यह नहीं कहती कि उस फ़िल्म से पहले ऐसी दुर्घटनाएं नहीं होती होंगी, किन्तु समाज के जिस वर्ग तक वह मलिनता नहीं पहुंची थी, जो वर्ग इस से अछूता था, वहां तक इसे प्रसारित करने की क्या आवश्यकता है ? इतिहास साक्षी है कि प्राचीन समय से ही देशप्रेम व सांस्कारिक फ़िल्मों ने दर्शकों के मन-मस्तिष्क पर अपनी अमिट छाप छोड़ी है, इस हद तक, कि पर्दे पर अच्छे चरित्र की भूमिका निभाने वाले अभिनेता-अभिनेत्रियों को दर्शकों की आशा के अनुरूप अपने वास्तविक जीवन में आचरण करना अनिवार्य माना जाता था, क्योंकि दर्शक उस फ़िल्मी चरित्र से संवेगात्मक रूप से इतना जुड़ जाते थे कि पत्र-पत्रिकाओं में उनका और कोई रूप सहजता से स्वीकार नहीं कर पाते थे ! हालांकि अब वह दौर नहीं रहा है और दर्शक काफ़ी सजग हो गया है, तथा फ़िल्मी व वास्तविक चरित्र के अन्तर को सहजता से स्वीकार कर लेता है, किन्तु इस बात से अब भी इन्कार नहीं किया जा सकता कि मीडिया द्वारा फैलायी गयी अनैतिकता का हमारे समाज में बढ़ते आपराधिक आंकड़ों से सीधा संबंध है !

इसके साथ ही सेंसर बोर्ड की भूमिका पर भी गंभीर प्रश्न उठते हैं ! सेंसर का तो काम ही है किसी भी फ़िल्म अथवा कार्यक्रम द्वारा उपजने वाले संभावित ख़तरे को महसूस करना ! सही-ग़लत, आचरण दुराचरण और व्यभिचार को पहचानने का उनका विवेक समाप्त हो चुका है ? न केवल फ़िल्में, बल्कि ऐसे विज्ञापनों की भी आज के समय में भरमार है, जो अश्लीलता के पौधे को पूरी तन्मयता के साथ सींच रहे हैं और समाज का एक बड़ा वर्ग उससे खासी तरह प्रभावित हो रहा है, जिसकी संख्या दिन-प्रतिदिन तेज़ी से बढ़ती जा रही है ! क्या भारत में हो रहे बलात्कारों की संख्या व स्वरूप में वृद्धि इनसे प्रभावित नहीं है ? बिल्कुल है !! न सिर्फ़ टी॰वी॰, बल्कि कंप्यूटर व अन्य तमाम इलेक्ट्रॉनिक संसाधनों की मेहरबानी से यह दुष्प्रभाव घर-घर और बच्चे-बच्चे तक पहुंच रहा है ! सस्ती और तुरंत लोकप्रियता हासिल करने वाले मॉडल्स की वाढ़ आयी हुई है ! इंटरनेट स्कूली शिक्षा का एक अनिवार्य व अभिन्न अंग बन चुका है ! ऐसे में बच्चों को कैसे और कहां तक इंटरनेट से दूर रखा जा सकता है ? क्या इस संदर्भ में ब्रॉडकास्टिंग कमेटी कुछ नहीं कर सकती ? बेशक कर सकती है ! माता-पिता लाख कोशिश करके भी बच्चों को टी॰वी॰ और इंटरनेट से फैल रहे जीवाणुओं की चपेट में आने से नहीं रोक सकते, किन्तु सेंसर बोर्ड और ब्रॉडकास्टिंग मिनिस्ट्री चाहे तो सख़्त क़दम उठाकर इस तरह के कार्यक्रमों पर रोक लगा सकती है । मैं दावे से कह सकती हूं कि ऐसा करने से कई दामिनियां और गुड़िया सुरक्षित हो जाएंगी !

اللہ سود کو مٹاتا ہے اور صدقات کو بڑھاتا ہے۔ (سورہ بقرہ: ۲۷۶)

الخیر

بلا سودی کاپریٹیو بینک

AL-KHAIR

COOPERATIVE CREDIT SOCIETY LTD

(Registered under Multi-State Co-operative
Act, No. MSCS/CR/136/2002)

Registered office :
Haroon Nagar, Sect.-II, Phulwari Sharif, Patna-801505
Tel. : 0612-2252404

Gaya Branch :
Millat Campus, Near Railway Hospital, GAYA

Office Hours : 10 A.M. to 5 P.M.

जंगे आज़ादी के सिपाही राजा इदारत जहां और मौलाना करामत अली

■ विद्या प्रकाश

जनपद जौनपुर के विकास खंड खुटहन के अंतर्गत ग्राम मुबारकपुर जनपद का इस दृष्टि से ऐतिहासिक ग्राम माना और जाना जाता है कि मादरे वतन को विदेशी पराधीनता की लौह शृंखलाओं से मुक्त कराने के उद्देश्य से सन 1857 में प्रथम स्वातंत्र्य संग्राम से लेकर सन 1942 में गांधी जी के नेतृत्व में शुरू किये गये 'भारत छोड़ो अथवा करो या मरो' आन्दोलन तक इस ग्राम ने उल्लेखनीय भूमिका निभायी ।

सन 1857 के प्रथम स्वातंत्र्य संग्राम सेनानी अमर शहीद राजा इदारत जहां थे जिन्हें राज़शाही अवध के नवाब वाजिद अली शाह से मिली थी । उनकी छावनी मुबारकपुर (खुटहन) में थी । उनका दुर्ग, महल, गोदाम तथा मस्जिद यहीं पर स्थित थे । सन 1857 तक उनका शासन आज़मगढ़, जौनपुर, वाराणसी, ग़ाज़ीपुर, मिर्ज़ापुर, बलिया, सुल्तानपुर, फ़ैज़ाबाद तथा इलाहाबाद तक फैला था । प्रतिवेशी आज़मगढ़ जनपद के फूलपुर क्षेत्र स्थित माहुल में उनकी राजधानी थी । दीवान राय उनके वित्तमंत्री तथा मरूदूम बख़्श (तिघरा) तथा अमर शहीद अमर सिंह (आदमपुर, खुटहन) उनके सेनापति थे । शाही क़िला को उन्होंने स्वातंत्र्य आन्दोलन को सुनियोजित ढंग से संचालित करने के लिए अपना मुख्यालय बनाया था ।

यह वक़्त का वह दौर था जब मातृभूमि को गोरी हुकूमत की लौह ज़ंजीरों से आज़ाद कराने के मक़सद से लोगों का दिल बेचैन था और बेताब था । मुल्क में जनजागृति की लहर चल रही थी । सन 1856 में नवाब बांदा के यहां वैवाहिक कार्यक्रम के मौक़े पर देश भर के अनेक राजा, रियासतदारान और तालुकेदारान मौजूद थे । वहीं पर एक विशाल जलसा हुआ जिसमें यह पाया गया कि हिन्दुस्तान के अंतिम मुग़ल बादशाह बहादुर शाह ज़फ़र के जेरे-क़यादत तथा जेरे-रहनुमाई हम लोग अंग्रेज़ों को मालगुज़ारी देने के बजाय सीधे बहादुर शाह ज़फ़र को मालगुज़ारी देंगे और अंग्रेज़ों की प्रत्येक वस्तु का बहिष्कार करेंगे। उन्हें इस मुल्क की सरज़मीं से उखाड़ फेंकने की पूरी तैयारी करेंगे । इसके बाद चारों तरफ़ जलसे होने लगे । हर ओर देशभक्तिपूर्ण माहौल था और हर दिल में अपूर्व जोश और मादरे वतन की ख़िदमत का जज़्बा था । सन 1857 में देश में स्वतंत्रता संग्राम शुरू हो गया । चारों तरफ़ भारतवासी अंग्रेज़ों के ख़िलाफ़ शस्त्रसन्नद्ध और कठिबद्ध लड़ रहे थे । उत्तर भारत में झांसी की रानी लक्ष्मी बाई तथा राजा इदारत जहां ने मोर्चाबन्दी कर कमान संभाल ली और जंग छिड़ गयी । अंग्रेज़ पलटन का गुज़र जौनपुर से हुआ । उस समय राजा इदारत जहां मुबारकपुर (गमिरन, खुटहन) में थे । घमासान युद्ध शुरू हुआ तथा कई रोज़ तक चलता रहा । 10 मई 1857 को वे मस्जिद में नमाज़ पढ़कर मस्जिद से बाहर निकल रहे थे । वैसे ही उन्हें उनके सफ़ादार 40 सिपाहियों के साथ गिरफ़्तार कर लिया गया । 40 लोगों को एक आम के बाग़ में वहीं पेड़ की डाल में फांसी के फंदे में लटका दिया गया और राजा इदारत जहां को उन्हीं के हाथी पर बैठाकर आम्र वृक्ष पर फांसी से लटका दिया गया । आम का यह पेड़ आज भी गांव में विद्यमान होकर जांबाज़ वतनपरस्त बहादुरों की शहादत की दास्तान बयान कर रहा है । अमर शहीद राजा इदारत जहां की बेमिसाल शहादत तथा जांनिसारी की कहानी क्षेत्रवासियों के घर-घर आज भी सगर्व सुनायी जाती है । उनका हाथी मालिक के प्रति इतना वफ़ादार था कि वह उन्हें फांसी से लटके देखकर ममहित हो गया और सदमा लगा । ज़ोर से चिंघाड़ता हुआ वह भूमि पर गिर पड़ा और उसने तत्काल दम तोड़ दिया । मुबारकपुर में आज भी राजा इदारत जहां की क़ब्र टूटी-फूटी और उपेक्षित अवस्था में मौजूद है ।

राजा इदारत जहां को मौलाना करामत अली से बेइन्तिहा

अक़ीदत और मुहब्बत थी । दोनों में बेहद बाहमी मुहब्बताना ताल्लुक़ात थे । हस्तलिपि (कैलिग्राफ़ी) में वे मौलाना के शागिंद थे । हज़रत मौलाना करामत अली सैयद अहमद शहीद बरेलवी के ख़ुल्फ़ा में से थे । हज़रत सैयद करामत अली के शहादत के पश्चात उनका वाहिद मक़सद फिरंगियों को मादरे वतन से किसी भी सूरत में बाहर खदेड़ने का हो गया । जौनपुर नगर के मुहल्ला चितरसारी निवासी मौलाना सरफ़राज़ अली, मौलाना करामत अली के परम प्रिय थे । सुल्तानपुर जनपद के जनरल बख़्त ख़ां सन 1857 की गदर और जंगे आज़ादी की अग्रदूत तथा स्वातंत्र्य संग्राम के मेरुदंड स्वरूप थे । सन 1857 के प्रारंभिक दिनों में मौलाना करामत अली बंगाल में 18 साल तक इस्लाम व इन्सानियत की इशाअत और ख़िदमत के बाद अपने वतन जौनपुर वापस आ गये । उन्होंने अपने अज़ीज़ और शागिर्द सैयद सरफ़राज़ अली के मारफ़त जनरल बख़्त ख़ां को मुल्ला टोला स्थित अपने निवास स्थान पर आमंत्रित किया जो ईस्ट इंडिया कंपनी के तोपबरदार रेजीमेंट के कमांडर इन चीफ़ थे । मौलाना करामत अली ने उन्हें सन 1857 की क्रांति के मुख्य उद्देश्यों तथा विशिष्ट बिन्दुओं से अवगत किया तथा हिन्दुओं और मुसलमानों को साथ लेकर चलने और जज़्बे-ए- वतनपरस्ती के साथ काम करने की हिदायत और आशीर्वाद के साथ मेरठ भेजा, जहां से जंग-आज़ादी की शुरुआत हुई । वतन के इस महान सपूत ने सन 1857 की जंगे आज़ादी के दौरान दिल्ली की जानिब अपने कारवाने जंग को बढ़ाया । कई महीनों तक दिल्ली में कशमकश जारी रही और उन्होंने मुगलिया सल्तनत के अंतिम बादशाह बहादुर शाह जफ़र को अपना बादशाह घोषित कर दिया । दिल्ली में जंगे आज़ादी के दौरान जनरल बख़्त ख़ां की शहादत की ख़बर महीनों बाद जौनपुर पहुंची ।

जनपद जौनपुर के प्रसिद्ध करंजा कलां गांव में कई अंग्रेज़ परिवार तिल की खेती के मक़सद से रहा करते थे । जनरल बख़्त ख़ां की शहादत की ख़बर और जानकारी होने पर जनता बेक़ाबू हो गयी और उन्होंने प्रतिशोध की भावना से करंजा कलां में रहने वाले फिरंगियों को न केवल मारा-पीटा, बल्कि उनका पीछा भी किया । अपनी जान बचाने की गरज से अंग्रेज़ परिवार वहां से भागते हुए मुल्ला टोला आ गये । अंग्रेज़ पुरुष, महिलाएं और बच्चे मौलाना करामत अली के आवास परिसर के अन्दर घुस गये । मौलाना ने जब वजह पूछी तो उन्होंने अपने भागने का कारण साफ़-साफ़ बयान करते हुए शरण देने की विनती की ।

मौलाना संत हृदय तथा मज़हबे इस्लाम की इन्सानियत की नसीहतों-हिदायत का पालन करने वाले महान व्यक्ति थे । उन्होंने इस बात को नज़रअंदाज़ तथा दरगुज़र करते हुए कि ये हमारे दुश्मने क़ौम हैं, इन्सानियत के फ़रीज़ा का पालन करते हुए शरणागत अंग्रेज़ परिवारें की मदद की तथा उनके साथ नेकी और इन्सानियत का सुलूक किया तथा इन्सानियत की नज़ीर पेश की । उनमें इतना शरणागत वात्सल्य था । जान बचाकर उनकी शरण में अंग्रेज़ परिवारों से आये लोगों में पुरुष, औरतें तथा कमसिन बच्चे शामिल थे । स्वातंत्र्य संग्राम के दीवानों का हुजूम जब अंग्रेज़ों को खोजते-खोजते तथा पता लगाते-लगाते मौलाना के घर के फाटक पर पहुंचा और पूछा कि यहां अंग्रेज़ तो नहीं आये हैं तो मौलाना ने जवाब दिया कि यदि तुम चाहो तो फाटक के अन्दर आकर देख सकते हो । स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों ने उनकी बातों पर यक़ीन किया और वे वापस चले गये । मौलाना के सामने इन्सानियत की हिफ़ाज़त करना सबसे बड़ा मक़सद था जिसका उन्होंने विवेक और दूरदृष्टि के साथ ताज़िन्दगी निर्वाह किया । इन्सानी फ़र्ज़ अदायगी करते हुए उन्होंने वतन के दुश्मनों को अपनी निगरानी तथा ज़िम्मेदारी में सुरक्षित बनारस कैंट तक भिजवा दिया ।

मौलाना करामत ने राजा इदारत जहां को बुलाकर ब्रिटिश हुकूमत के ख़िलाफ़ जंग करने को कहा । उनकी प्रेरणा से राजा इदारत जहां ने अंग्रेज़ों के ख़िलाफ़ बाग़ियाना रुख़ इख़्तियार करते हुए खुल्लमखुल्ला एलाने जंग कर दिया । सन 1857 में ब्रिटिश सत्ता तथा दासता के विरुद्ध पूरे देश में लड़ाई चली मगर अंग्रेज़ों की कूटनीतिक चाल से स्वाधीनता संग्राम विफल हो गया । राजा इदारत जहां, संग्राम सिंह, अमर सिंह, मख़्दूम बख़्श आदि क्रांतिकारी देश भक्तों ने मादरे वतन की ख़िदमत में अपनी शहादत पेश की तथा देशवासियों को स्वातंत्र्य संग्राम का संघर्ष आगे बढ़ाने का पैग़ाम अपने लहू से इबारत लिखकर दिया । अंग्रेज़ों ने बुज़ुर्ग मुग़ल बादशाह बहादुर शाह ज़फ़र को गिरफ़्तार कर रंगून भेज दिया । जहां उन्होंने अंतिम सांस ली ।

मौलाना करामत अली तथा उनके छोटे भाई रजब अली को भी अंग्रेज़ों ने बागियों की फ़ेहरिस्त में शामिल कर लिया और दोनों बंधुओं को सज़ा-ए-फांसी का ऐलान कर दिया ।

मौलाना करामत अली तीन साल तक जंगलों में दर-बदर भटकते-छिपते हुए संघर्षपूर्ण जीवन व्यतीत करते रहे । उनके निवास स्थान पर शरण तथा संरक्षण प्राप्त करने वाले अंग्रेज़ शरणार्थियों में से एक तत्कालीन गवर्नर जनरल का सिक्रेट्री बन गया था । जब मौलाना के फांसी से मुताल्लिक़ दस्तावेज़ात पर उसकी निगाह पड़ी तो उसने कहा कि यह सच है कि मौलाना करामत अली ब्रिटिश हुकूमत के दुश्मन हैं लेकिन वह इन्सानियत के पैरोकार और क़द्रदां भी हैं । उन्होंने अपने इन्सानी कर्तव्यों का पालन करते हुए जौनपुर में अपने दुश्मन क़ौम को भी पनाह दी थी तथा उनकी जान बचायी थी । आज समय आ गया है जब हमें भी इन्सानियत के तक़ाज़ों के नाते उनको फांसी के चंगुल से निकालना और बचाना चाहिए तथा अंग्रेज़ हुकूमत के फ़ैसले को रद्द कराना चाहिए । अंग्रेज़ सिक्रेट्री ने मौलाना के इन्सानदोस्त उसूलों से मुताल्लिक़ जानकारी गवर्नर जनरल को दी और उन तमाम घटनाओं को तफ़्सीलवार पेश किया जो जौनपुर के मुल्ला टोला स्थित उनके आवास पर कुछ वर्ष पूर्व घटित हुई थी । उसने खुद अपनी ज़बानी बताया कि यह मौलाना की देन है कि हम लोग संकट की घड़ी में सकुशल सुरक्षित रहें ।

जब गवर्नर जनरल ने सारी बातें सुनी तो उसने रिपोर्ट को पुनः मलिका विक्टोरिया के पास इंग्लैंड भेज दिया तथा उसने दस्तावेज़ में यह लिख दिया कि मौलाना अंग्रेज़ी हुकूमत के शत्रु हैं मगर इन्सानियत के मित्र भी हैं और उन्होंने इन्सानियत के नाते अंग्रेज़ों के प्राण की रक्षा की है । जब मौलाना की यह रिपोर्ट गवर्नर जनरल महारानी विक्टोरिया के पास पहुंची तो उन्होंने इस आधार पर फांसी के फ़ैसले को वापस ले लिया तथा मौलाना को फांसी के हुक्मनामे से तत्काल बरी कर दिया । इतना ही नहीं, उन्हें जुल्कदर का ख़िताब भी दिया गया और राजा इदारत जहां की तमाम ज़ब्तशुदा मंकूला-ग़ैर-मंकूला जायदाद भी दे दी गयी । जब मौलाना को बुलाया गया तो उन्होंने जुल्कदर का ख़िताब तथा राजा इदारत जहां की ज़ब्तशुदा जायदाद को लेने से इन्कार कर दिया और बोले, 'मैं तो एक फ़क़ीर हूं । देश सेवा, इन्सानियत का पालन तथा सत्य मार्ग पर चलने का प्रचार करना ही मेरी ज़िन्दगी का मक़सद है । इसलिए ख़िताब और राजा इदारत जहां की जब्तशुदा जायदाद लेकर मैं क्या करूंगा ।'

मौलाना करामत अली जब तक जीवित रहे, नेकी के रास्ते पर चलते रहे तथा राजा इदारत जहां के परिवार में बचे हुए लोगों की हिफ़ाज़त तथा सरपरस्ती करते रहे और इसी को उन्होंने परमधर्म तथा परम कर्तव्य समझा ।

आज न राजा इदारत जहां हैं और न मौलाना करामत अली मगर मादरे वतन और इन्सानियत की राहे ख़िदमत में उनके द्वारा किये गये महान कार्य आज भी हमारे लिए प्रेरक हैं ।

वे इन्सानी तवारीख़ के ऐसे रोशन चिराग़ हैं जो शताब्दियों तक दिग्भ्रांत मानवता के लिए आलोक स्तंभ का कार्य करते रहेंगे । इन पर प्रत्येक भारतवासी को गर्व क्यों न हो । आज इन महान देशभक्तों की स्मृतियों को सुरक्षित रखने के लिए उनके नाम पर स्मारक बनाये जाने की आवश्यकता है ताकि समाज की नवीन पीढ़ी उनसे देशभक्ति तथा समाज सेवा की प्रेरणा ले सके । मुहल्ला रिज़्वी ख़ां निवासी राजा सैयद अंजुम हुसैन, राजा इदारत जहां तथा मुहल्ला मुल्ला टोला निवासी जाफ़र अहमद सिद्दीक़ी मौलाना करामत अली के वंशज परपौत्र हैं ।

मुनआम पब्लिक स्कूल

(सी०बी०एस०ई०, दिल्ली से सम्बद्धता प्राप्त, 10+2, ईंग्लिश मिडियम विद्यालय)
महाराजगंज, पो० दादपुर, जिला हजारीबाग, झारखण्ड।

नामांकण सूचना



हजारीबाग के प्राकृतिक सौन्दर्य से भरपूर पहाड़ी क्षेत्र में स्थापित, विशाल कैम्पस में फैला एक अति-आधूनिक शैक्षणिक संस्था जहां छात्र-छात्राओं के लिए गार्डन स्कूल की तमाम सुविधाएं उपलब्ध हैं।

सफलता का सफरवां साल - मुस्लिम लड़कीयों के लिए वायाद तोहफा

लड़कीयों के लिए 100 बेड का शानदार हॉस्टल

सत्र 2013-2014 के लिए छात्रावास में रह कर शिक्षा प्राप्त करने के इच्छुक छात्र-छात्राएं 150/- रू० अदा कर के फार्म एंव प्रास्पेक्टस स्कूल काउंटर से प्राप्त करें या 175/- रू० का ड्राफ्ट भेज कर डाक से भी प्राप्त किया जा सकता है। विशेष जानकारी हेतु सम्पर्क करें -

मो० 09431530878, Website : munammission.org
E-mail-munam_school2000edu@yahoo.com

एस०एम० नईम
डायरेक्टर
एम०ए०, बी०एड

वकील अहमद
प्रिन्सिपल
बी०एस०सी०, बी०एड

بسم اللہ الرحمن الرحیم

"नेकी यह है कि
अल्लाह की मुहब्बत में
अपना दिलपसन्द माल
रिश्तेदारों और यतीमों पर,
मिस्कीनों और मुसाफ़िरों पर,
मदद के लिए हाथ फैलाने
वालों पर और ग़ुलामों की
रिहाई पर ख़र्च करे ।"

(क़ुरआन)

Ek Hamdard, Ranchi
(Jharkhand)

इतना सबल बनो...

हर्गिज़ क़दम न पीछे रखना,
मिले भले ही असफलता,
क्षीण नहीं उत्साह हुआ तो,
मिल जाएगी तुम्हें सफलता ।

कांटों के ही मध्य सुमन,
खिल-खिलकर सदा विहंसते,
भू पर निज सौरभ बिखेर कर,
सबका दिल खुश करते ।

कांटों में ही खुश रह करके,
झूमा करती खूब लता,
क्षीण नहीं उत्साह हुआ तो,
मिल जाएगी तुम्हें सफलता ।

कई बार गिर-गिरकर चींटी,
ऊंचाई पर चढ़ती,
नहीं मानती हार कभी भी,
विजय तभी तो मिलती ।

नहीं दिख पड़ती चेहरे पर,
उसके कभी विकलता,
क्षीण नहीं उत्साह हुआ तो,
मिल जाएगी तुम्हें सफलता ।

तो फिर उठो, बढ़ो तुम आगे,
दृढ़ संकल्प न छूटे,
जब तक लक्ष्य नहीं पूरा हो,
श्रम की डोर न टूटे ।

इतना सबल बनो कि दूर–
हो जाए सब निर्बलता,
क्षीण नहीं उत्साह हुआ तो,
मिल जाएगी तुम्हें सफलता ।

डॉ० त्रिलोकी सिंह
ग्राम-हिन्दूपुर, पोस्ट-करछना,
इलाहाबाद (उ०प्र०)

हिन्दी ग़ज़ल

मीठा रह, ना खारा बन,
तू हर रोज़ करारा बन ।
अंधकार पर क़ाबू पा,
हरदम ही उजियारा बन ।
नफ़रत पर पा विजयश्री,
क़दम-क़दम पर प्यारा बन ।
हर मुश्किल के आगे तू,
पहलवान बन, दारा बन ।
सत्य का जिससे महल बने,
बजरी, चूना, गारा बन ।
जिससे सबकी प्यास बुझे,
नदिया की वो धारा बन ।
पश्चिमी रंग-रंग विहंस रहे,
मर्यादा का नारा बन ।
'शरद' भले ही झूठ बढ़ा,
सत्य का तू जयकारा बन ।

प्रो० (डॉ०) शरद नारायण खरे
विभागाध्यक्ष इतिहास
शासकीय महिला महाविद्यालय मंडला (म०प्र०)-481661

रे मन !

रे मन ! तू निराश न हो ।
'आशाओं' को जीवन में,
आत्मसात् कर लो,
'सुख-दुख' के फूलों को चुनकर
गले का हार बना लो,
'अंकुर' की तरह माटी में दबकर
वट-विशाल बनो,
वह 'हर्ष' नहीं 'अपकर्ष' है
जब 'उत्कर्ष' की अनुभूति न हो,
रे मन ! तू निराश न हो ।

ईश्वर दयाल जायसवाल
अध्यक्ष, अदबी विचार मंच
टांडा, अम्बेडकर नगर (उ०प्र०)

इस्लाम : दया एवं शान्ति का धर्म

■ डॉ॰ फ़रहत हुसैन

इस्लाम एक ऐसा धर्म है जो दया-भाव, प्रेम, भाईचारे और हमदर्दी का पूर्ण संतुलन के साथ मानव स्वभाव के अनुरूप उच्चतम आदर्श प्रस्तुत करता है । इस्लाम मानवीय गुणों को पूर्ण विस्तार से पवित्र कुरआन और हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) के कथनों व भाषणों के संकलन द्वारा प्रस्तुत करता है जिसे हम सैद्धांतिक पक्ष कह सकते हैं । इन सिद्धांतों तथा नियमों को स्वयं ईशदूत हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) तथा आपके उत्तराधिकारियों एवं अनुयायियों द्वारा इसी भू-भाग पर पूर्णत: लागू करके दिखाया गया है, जिसका विवरण इतिहास में प्रामाणिकता के साथ दर्ज है । मानव जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में दया-भाव संबंधी शिक्षाओं के वर्णन से पूर्व हम उन चार बिन्दुओं पर चर्चा करेंगे जो इस्लाम के दयालुतापूर्ण ईश्वरीय धर्म होने का ठोस आधार प्रस्तुत करते हैं–

1. 'इस्लाम' का अर्थ है अमन, शान्ति और सलामती ।

2. ईश्वर का सबसे बड़ा गुण है रहमान और रहीम अर्थात अत्यधिक दयावान और अत्यन्त कृपाशील ।

3. अन्तिम ईशदूत हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) को 'रहमते-आलम' अर्थात सम्पूर्ण जगत के लिए दयालु बनाकर भेंजा गया ।

4. मानवजाति के पथ-प्रदर्शन हेतु जो ईशवाणी अर्थात पवित्र कुरआन को अवतरित किया गया उसकी विशेषता भी मार्गदर्शक और रहमत (दयालुता) है ।

इन चारों बिन्दुओं की संक्षिप्त व्याख्या प्रस्तुत है–

1. इस्लाम

इस्लाम शब्द का एक अर्थ है अमन, शान्ति और सलामती तथा दूसरा अर्थ है आज्ञापालन, अनुसरण और समर्पण । अत: इस्लाम जीवन व्यतीत करने की वह पद्धति है, जिसमें मनुष्य अपने प्रभु के प्रति पूर्णरूप से समर्पित होकर अमन व सलामती प्राप्त करता है । वह इस संसार में मानसिक सन्तुष्टि के साथ-साथ शान्तिपूर्ण जीवन भी व्यतीत करता है तथा पारलौकिक जीवन में परम सुख प्राप्त करता है । इस्लाम के व्यावहारिक सिद्धान्तों द्वारा परिवार और समाज में अनुकूल वातावरण उत्पन्न होता है, जहां आपसी हमदर्दी, सहानुभूति, भाईचारा और सहयोग पाया जाता है । लेन-देन और खाने-कमाने में धोखा, झूठ, हेराफेरी और बेईमानी नहीं होती । राजनीति तथा शासन-प्रशासन निष्पक्ष, अत्याचार मुक्त तथा अनुशासित होता है । क़ानून द्वारा शीघ्र एवं निष्पक्ष न्याय प्रदान किया जाता है । सम्पूर्ण व्यवस्था दयाभाव, कृपाशीलता, करुणा, सहानुभूति तथा भाईचारे की भावना से ओत-प्रोत होती है । यदि कहीं कठोरता होती है तो उसका उद्देश्य भी शान्ति-स्थापना होता है ।

2. प्रभु कृपाशील, दयावान

प्रसिद्ध फ्रांसीसी चिंतक मौरिस बुकैले के अनुसार, "इस सृष्टि का एक-एक कण हमें एक कृपाशील, दयालु एवं सर्वशक्तिमान रचयिता का बोध कराता है ।"

इसमें सन्देह नहीं कि उसके अनेक गुणवाचक नाम हैं, परन्तु पवित्र कुरआन में सबसे अधिक प्रयुक्त होने वाले गुण हैं–रहमान व रहीम, जो एक ही धातु 'रहम' से बने हैं–बड़ा मेहरबान, बहुत रहम करने वाला अर्थात अत्यंत कृपाशील, अत्यधिक दयावान । कुरआन का प्रत्येक अध्याय जिस वाक्य से आरंभ होता है वह है 'बिसमिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम' (अल्लाह कृपाशील और दयावान के नाम से)। यह वाक्य कुरआन में 114 बार आया है । इसके अतिरिक्त सैकड़ों स्थानों पर कृपाशील, दयावान, क्षमा करने वाला, सलामती देने वाला, संरक्षक बताया गया है । ईश्वर सर्वशक्तिमान है और न्यायप्रिय भी है, इसलिए अत्याचारी और घमंडी उसकी सज़ा से बच नहीं सकते, मगर उसका दयाभाव सर्वोपरि है । कुरआन के कुछ महत्वपूर्ण उद्धरण प्रस्तुत हैं–

"सज़ा तो मैं (अल्लाह) जिसे चाहता हूं देता हूं, मगर मेरी दयालुता हर चीज़ पर छाई हुई है ।"

(कुरआन, 7:156)

"उसने (अल्लाह ने) दयालुता की नीति अपने ऊपर अनिवार्य कर ली है।" (कुरआन, 6:12)

"तुम्हारे रब ने दयालुता को अपने ऊपर अनिवार्य कर

दयालुतापूर्ण ईश्वरीय धर्म

लिया है । (यह उसकी दया ही है कि) अगर तुममें से कोई नादानी के साथ कोई बुराई कर बैठा हो फिर उसके बाद तौबा करे और सुधार कर ले तो वह उसे माफ़ कर देता है और नरमी से काम लेता है।'' (कुरआन, 6:54)

अपराध बोध से ग्रसित निराशजनों को तसल्ली दी गयी–''कह दो ! ऐ मेरे बन्दो, जिन्होंने अपने आप पर ज़्यादती कर ली है, अल्लाह की रहमत (दयाभाव) से निराश न हो जाना । निस्सन्देह अल्लाह सभी गुनाहों को माफ़ कर देता है । वह निश्चय ही बड़ा क्षमाशील एवं अत्यंत दयावान है।'' (कुरआन, 39:53)

हम इन्सान, ईश्वर की रचना हैं । वह अपने बन्दों से बहुत प्रेम करता है, इसलिए धरती पर बसने वालों को 'अल्लाह का कुटुम्ब' कहा गया । समस्त प्राणियों तथा इन्सानों के मन में जो प्रेम-भाव, दया-भाव और वात्सल्य पाया जाता है वह ईश्वर के प्रेम-भाव की एक सूक्ष्म झलक है । ईशदूत हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के कथन से यह बात स्पष्ट हो जाती है–

''अल्लाह ने अपने रहम (दयाभाव) के सौ भाग किये, उसमें से निन्नानवे को अपने पास रखा और एक भाग को धरती पर भेजा । इस एक भाग (अर्थात एक प्रतिशत) का प्रभाव है कि सृष्टि के जीव एक-दूसरे पर दया करते हैं, यहां तक कि घोड़ी अपने बच्चे को खुर से (चोटिल होने से) बचाने के लिए उसको उठा लेती है।''

(हदीस : बुख़ारी)

धरती पर भेजे गये एक प्रतिशत का प्रभाव हम दिन-रात देखते हैं। मां अपने बच्चे पर कितनी मेहरबान हैं । उसके लिए हर प्रकार के कष्ट सहती है । कष्ट उठाकर जनती है, दूध पिलाती है, उसका मल-मूत्र साफ़ करती है । जाड़ों की रात में जब वह बिस्तर गीला कर लेता है तो बच्चे को सूखे में सुलाती है, स्वयं चाहे दुख में रहे, बच्चे को सदा सुख देने का प्रयास करती रहती है । पशु-पक्षियों में भी यह भावना विद्यमान है । यह एक प्रतिशत का प्रभाव है । अनुमान लगाइए कि इससे 99 गुना दया, स्नेह, प्रेम और कृपा कितनी विशाल होगी, जो हमारा पालनहार हर क्षण हम पर प्रवाहित कर रहा है । फिर इस पर भी विचार करना चाहिए कि इस भव्य कृपाशीलता की शुक्रगुज़ारी और कृतज्ञता हम अपने पालनहार के प्रति कितनी कर रहे हैं ? हम उसके प्रति कितने समर्पित हैं ?

3. महा ईशदूत रहमते-आलम

महा ईशदूत हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ईश्वर के अन्तिम सन्देशवाहक हैं । ईश्वर की अपने बन्दों पर असीम कृपा है कि उसने हर युग में हर समुदाय के लिए पथ-प्रदर्शक नियुक्त किये, जो अपने-अपने कार्य-क्षेत्र एवं कार्य-अवधि में अपना कर्तव्य निभाते रहे । जब सभ्यता उन्नति करके वैश्विक दौर में पहुंची तो ईश्वर ने अपने अन्तिम सन्देशवाहक को प्रकाशना (दिव्य कुरआन) देकर समस्त मानवजाति के लिए नियुक्त किया और आपको रहमते-आलम (संपूर्ण जगत के लिए दयालुता) की उपाधि प्रदान की । (कुरआन (21:107) में है–

'वमा अरसलना-क इल्ला रहमतल्लिल आ-ल-मीन'

अर्थात, हमने आपको (अर्थात हज़रत मुहम्मद सल्ल० को) सम्पूर्ण जगत के लिए सर्वथा दयालुता (रहमत) बनाकर भेजा है ।

महा ईशदूत को परिस्थितिवश युद्ध भी करना पड़ा तथा न्याय-स्थापना एवं क़ानून व्यवस्था हेतु अपराधियों को दंड भी दिया, परन्तु आपके व्यक्तित्व का उभरा हुआ पक्ष दयालुता, क्षमादान, कृपा दृष्टि, स्नेह और सौहार्द से परिपूर्ण है, जिसे विरोधी भी स्वीकार करते हैं । महा ईशदूत हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) कमज़ोरों, बच्चों, महिलाओं, बूढ़ों और दास-दासियों के सहायक थे, अपनी पत्नियों, संतान और रिश्तेदारों के साथ प्रेम और स्नेह का व्यवहार करते थे, विरोधियों और शत्रुओं के लिए क्षमादाता थे, पशु-पक्षियों, पेड़-पौधों और अन्न-जल के प्रति दयाभाव रखते थे ।

मक्का नगर में मुहम्मद (सल्ल०) को और उनके अनुयायियों को मक्कावासियों के हाथों भयंकर कष्ट उठाने पड़े, यहां तक कि आपको और आपके परिवार वालों को

तीन वर्ष की नज़रबन्दी झेलनी पड़ी, परन्तु वे स्वयं सब कुछ सहन करते रहे और अपने साथियों को धैर्य धारण करने की नसीहत करते रहे, मगर कभी बद्दुआ या श्राप नहीं दिया, क्योंकि वे रहमते-आलम (संसार के लिए करुणानिधि) हैं । हां, कभी दुआ की आवश्यकता पड़ी तो पीछे नहीं हटे । हुआ यह कि उन्हीं दिनों मक्का और उसके आसपास के क्षेत्र में भयंकर सूखा पड़ गया । विरोधी परेशान होकर पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) की सेवा में पहुंचे और विपत्ति दूर करने के लिए ईश्वर से दुआ करने का अनुरोध किया । मामला सर्वसाधारण की कठिनाई दूर करने का था । आप (सल्ल०) ने ईश्वर के समक्ष प्रार्थना की, जो स्वीकार कर ली गयी और मक्कावासियों की मुसीबत दूर हो गयी ।

ताइफ़ की घटना तो चकित कर देने वाली है । मक्का नगर की कुछ दूरी पर एक सुन्दर पहाड़ी बस्ती 'ताइफ़' है । अल्लाह के पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने वहां जाकर इस्लाम का सन्देश उनके सामने रखा तो उन्होंने कड़ा विरोध किया । जब पैग़म्बर (सल्ल०) वहां से निराश लौट रहे थे तो उन्होंने आपको पत्थर मारे, जिससे आप चोटिल हो गये और आपके जूते ख़ून से भर गये । यह बड़ा हृदयविदारक दृश्य था । आप जैसे-तैसे एक बाग़ में पहुंच गये । ईश्वर की ओर से एक फ़रिश्ता आया और उसने कहा कि आप अनुमति दें तो ताइफ़ की इन दोनों पहाड़ियों के बीच मैं उन्हें कुचल कर समाप्त कर दूं । पैग़म्बर (सल्ल०) ने तुरन्त उत्तर दिया नहीं-नहीं, सम्भव है कि उनकी भावी पीढ़ी संमार्ग का अनुसरण करे । घायलावस्था में भी आपका यह आचरण ! वास्तव में आप रहमते-आलम हैं ।

दयालुता और क्षमाशीलता का जो उदाहरण मक्का विजय के समय दुनिया ने देखा वह आश्चर्य में डाल देता है । इस विजय में न लड़ाई है, न रक्तपात और न विजयी फ़ौज में बड़ाई और घमंड । गत दो दशकों से शत्रुता बरतने वाले, मुसलमानों से युद्ध करने वाले और ईशदूत की हत्या का षड्यंत्र रचने वाले आज बेबस खड़े हैं । हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) को उन पर पूर्ण आधिपत्य प्राप्त है । वे दंड के अधिकारी भी हैं और स्वयं अपराधबोध का शिकार भी हैं कि हमने अपने अहंकार से वशीभूत होकर अकारण हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) और उनके सत्य सन्देश का विरोध किया । यदि हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) उन्हें सज़ा देते तो किसी भी रूप में आपके कृत्य को ग़लत नहीं ठहराया जा सकता था ।

मगर आपकी घोषणा थी–"जाओ आज तुम सबको क्षमादान दिया गया, तुम सब मुक्त किये जाते हो ।" इस आम माफ़ी में वह महिला भी थी, जिसने आपके चहेते चाचा हज़रत हमज़ा (रज़ि०) को शहीद कराकर उनका कलेजा चबाया था । यह थी दयालुता की पराकाष्ठा और

Jamaat-e-Islami Social Service Society (Regd), Gaya

The Society is in service in the field of education, health and Islamic Understanding for the last 34 years. Our resources are limited, our task is tremendous. We seek your co-operation in the following activities:-

1. IQRA PUBLIC SCHOOL : Besides 800 paying students, about 150 poor or orphan girls & boys are provided free education upto Matriculation with Islamic Carriculam.

2. MILLAT HOSPITAL : Every year about 15,000 poor & needy patients are provided with free medical treatment & medicine besides other services.

3. ISLAMIC INFORMATION CENTRE : Established at Bodh-Gaya, where lakhs of foreigners visit every year during Nov-March. The Centre provides reading materials on Islam, distributes Islamic literature and invites interested visitors for discussion besides inter-faith dialogue on regular basis.

Kindly send your Cheque/Draft in favour of the society

(Nayyarruzzama)
Chairman

(Prof. Inamul Huque)
Secretary

J I S S S

Millat Campus, Leitch Road, Gaya-823001

इस्लाम इस व्यवहार से फैला । यही लोग आपके अनुयायी बनकर उस मिशन के वाहक बने ।

हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के दयाभाव और क्षमादान की घटनाओं से इतिहास के पन्ने भरे पड़े हैं, जिसे आपके विरोधी तक स्वीकार करते हैं । इस्लाम की स्वाभाविक सरल, सहज शिक्षाओं तथा ईशदूत के उत्कृष्ट दयाभाव तथा स्नेहपूर्ण आचरण के कारण ही लोग इस सन्देश की ओर खिंच आये । दिल तो दिल से जीता जाता है, तलवार से नहीं । तलवार तो आत्मरक्षा या उन हठधर्मियों के लिए होती है जो शराफ़त को कमज़ोरी समझते हैं । आशय यह है कि इस्लाम के अन्तिम ईशदूत हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) का सम्पूर्ण जीवन उनकी शिक्षाएं, उनका मिशन मानवहित, दयाभाव और हमदर्दी का उत्कृष्ट नमूना है ।

4. पवित्र क़ुरआन–मार्गदर्शन भी और रहमत भी

अब चौथी चीज़ क़ुरआन को लीजिए । मनुष्य से ईश्वर के अपार प्रेम और उसकी असीम दयालुता का ही परिणाम है कि उसने मानवजाति के मार्गदर्शन की समुचित व्यवस्था की । समय-समय पर अपने सन्देश और सन्देशवाहक धरती पर भेजता रहा । अन्तिम ईशवाणी 'क़ुरआन' अन्तिम संदेश-वाहक हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) पर अवतरित की गयी । क़ुरआन को पढ़ने से सहज ही स्पष्ट हो जाता है कि यह मानवजाति के लिए रहमत, दयालुता और ईश्वरीय अनुकंपा है ।

इस आशय के क़ुरआन के कुछ अंश प्रस्तुत हैं–"ऐ लोगो ! तुम्हारे पास तुम्हारे रब की ओर से एक उपदेश आ चुका है जो मन के रोगों के लिए उपचार है तथा आस्थावानों के लिए मार्गदर्शन और दयालुता है ।" (क़ुरआन, 10:57)

"हम क़ुरआन में जो कुछ अवतरित करते हैं वह आस्थावानों के लिए शिफ़ा (रोग-मुक्ति) तथा रहमत (दयालुता) है । परन्तु वह अत्याचारियों के घाटे ही में अभिवृद्धि करता है ।" (क़ुरआन, 17:82)

"अब तुम्हारे पास तुम्हारे रब की ओर से एक स्पष्ट प्रमाण, मार्गदर्शन और दयालुता आ चुकी है।" (क़ुरआन, 6:157)

"और निश्चय ही हम उनके पास एक ऐसी किताब ले आये हैं जिसे हमने ज्ञान के आधार पर विस्तृत कर दिया है जो ईमान लाने वालों के लिए मार्गदर्शन और दयालुता है।" (क़ुरआन, 7:52)

"हमने तुम पर ग्रंथ अवतरित किया हर चीज़ का स्पष्ट उल्लेख करने के लिए तथा आज्ञाकारियों के मार्गदर्शन, दयालुता और शुभ सूचना के रूप में ।" (क़ुरआन, 16:89)

क़ुरआन की शिक्षाएं भी दयाभाव से परिपूर्ण हैं । देखिए ईश्वर के निकट होने में कितना प्रेमभाव है–

"और जब तुम से मेरे बन्दे मेरे बारे में पूछें, तो मैं तो निकट ही हूं, पुकारने वाले की पुकार का उत्तर देता हूं जब वह मुझे पुकारता है ।" (क़ुरआन, 2:186)

अपराध बोध से ग्रस्त दुखी मन को क़ुरआन का यह सन्देश कि–"अल्लाह की रहमत से मायूस न हो जाओ" (क़ुरआन, 39:53) कितना बड़ा सहारा है ।

रहमत और दयालुता यही है कि क़ुरआन में मनुष्य के लाभ और कल्याण की शिक्षाएं हैं । इन्सान को जहां घाटा हो सकता है उससे सचेत कर दिया गया है । उसकी मिसाल ऐसी है कि आप अंधेरे में खड़े हैं, कुछ भी नहीं देख पा रहे हैं, ऐसे में टार्च के प्रकाश में आपके सामने का सब कुछ चमक उठे–"जो लोग ईमान लाते हैं अल्लाह उनका रक्षक और सहायक है जो उन्हें अंधकार से निकालकर प्रकाश में लाता है ।" (क़ुरआन, 2:257)

उपरोक्त प्रारंभिक चर्चा से स्पष्ट है कि इस्लाम में ईश्वरीय गुणों, हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के आचरण तथा क़ुरआनी शिक्षाओं में दयाभाव का पहलू बहुत उभरा हुआ है और निस्सन्देह इस्लाम दयालुतापूर्ण ईश्वरीय धर्म है । इस तथ्य की पुष्टि के लिए हम इस्लाम के व्यावहारिक पक्ष पर दृष्टि डालेंगे और यह जानने का प्रयास करेंगे कि पारिवारिक संबंधों, सामाजिक गतिविधियों, शासन-प्रशासन के कार्यों, आर्थिक क्रियाकलापों तथा धार्मिक या आध्यात्मिक पहलुओं में दयाभाव और कृपाशीलता की स्थिति क्या है ?

For Information On
City Shops, Roads, Restaurants, Magazine, Schools and much more.
Syed Shahbaz Alam Barvi
Business Development Director (09049185093)
Visit us:
www.shoppinglanes.com

درسیات کی مقبول عام درسی کتاب ''سچّا دین'' کے ہندی اڈیشن

सच्चा दीन

लड़कों और लड़कियों के लिए दीनी तालीमात का सेट

مجلس تدوین وترتیب درسیات کی نظر ثانی اور حذف واضافہ کے بعد نئی کمپوزنگ اور نئے سائز میں بچوں کو اسلامی عقائد، عبادت، سیرت رسول ﷺ، سیرت انبیاء وصلحا، اخلاق و عادات اور معاشرتی آداب سے متعلق ضروری معلومات عام فہم اور دل نشیں انداز میں بہم پہنچائی گئیں ہیں۔

ہر سبق کے بعد مشکل الفاظ کے معانی اور مناسب مشقی سوالات بھی دیے گئے ہیں۔ اس صورت میں کتاب کی اہمیت میں اور اضافہ ہوگیا ہے۔

• [حصہ اوّل] سائز $\frac{20 \times 30}{8}$	• صفحات: 112	• قیمت: 50.00
• [حصہ دوم] سائز $\frac{20 \times 30}{8}$	• صفحات: 124	• قیمت: 46.00
• [حصہ سوم] سائز $\frac{20 \times 30}{8}$	• صفحات: 140	• قیمت: 70.00
• [حصہ چہارم] سائز $\frac{20 \times 30}{8}$	• صفحات: 144	• قیمت: 70.00

مرکزی مکتبہ اسلامی پبلشرز، نئی دہلی ۲۵

D-307, Dawat Nagar, Abul Fazl Enclave, Jamia Nagar, New Delhi-110025
Phone: 26971652, 26954341, 26946447(D) Fax: 26947858
E-mail: mmipublishers@gmail.com • Website: www.mmipublishers.net

तब और अब

❖ ख़ालिद रहीम

छोटा-सा सुनसान स्टेशन, आधी रात का समय, अजनबी शहर, मैं प्लेटफ़ार्म पर इधर-उधर देख रहा था। अभी-अभी एक पैसेंजर ट्रेन मुझे यहां उतार कर गयी थी। मुझे ख़ुद अपनी समझ पर हैरत होने लगी। आयरलैंड यूनीवर्सिटी के लिए मुझे एक रिसर्च पेपर लिखने का ऑफ़र मिला था कि मैं देश की एक ऐसी सभ्यता के बारे में लिखूं जिसे आधुनिक सभ्यता की गंदगियों और वैज्ञानिक अनुसंधानों की सुविधाओं ने छुआ तक न हो। इसी पेपर के आधार पर मुझे वहां दाख़िला और नौकरी मिलने वाली थी। मेरे एक मित्र ने मुझे इस शहर का नाम बताया था। मेरे द्वारा वहां के किसी जानकार का पता मांगने पर उसने कहा था कि इसकी कोई ज़रूरत नहीं, यहीं से तो उकी सभ्यता की खोज होगी।

स्टेशन पर इतना सन्नाटा था, मैंने सोचा शहर का क्या हाल होगा। मैं अभी खड़ा सोच ही रहा था कि किधर से बाहर निकलूं कि एक कुली सामने आकर खड़ा हो गया और पूछने लगा सामान उठाऊं ? मेरा सामान ही कितना था, बस एक बैग था, जिसे मैं ख़ुद ही उठा लिया करता था। मगर यह सोचकर कि इससे कुछ जानकारी ही मिल जाएगी मैंने बैग उसे थमा दिया और उसके पीछे चल पड़ा। वह मुझे तांगों के अड्डे पर ले गया। मैंने पूछा क्या कोई और सवारी नहीं है तो उसने कहा हां साईकिल रिक्शा चलता है मगर दिन में। रात में केवल तांगा ही चलता है। इतने में एक तांगे वाला उठकर सामने आ गया और पूछने लगा कहां जाना है बाबू जी ? मैंने कहा शहर जाना है। तांगे वाले ने मेरा सामान उठाकर रखा मैं भी कुली को पैसे देने के बाद पिछली सीट पर बैठ गया और तांगा चल पड़ा।

मैंने पूछा शहर कितनी दूर है ? वह बोला काफ़ी दूर है। स्टेशन शहर से बाहर है। आप किधर जाएंगे ? उसने पूछा। मुझे किसी होटल में ले चलो। उसने कहा यहां होटल तो कोई नहीं है। मैंने कहा कोई सराय जहां मैं रात बिता सकूं ? उसने कहा नहीं, यहां कोई सराय भी नहीं। तो नये लोग कहां ठहरते हैं ? मैंने पूछा उसने कहा इस शहर के लोग बड़े मेहमान नवाज़ हैं, जो भी दरवाज़ा खटखटाए उसे अपने घर ठहरा लेते हैं। मैं सोच में पड़ गया।

तांगा सुनसान सड़कों पर चलता रहा। चौराहों पर कारपोरेशन की बत्तियां जल रही थीं और दुकानें बन्द थीं। किसी-किसी दुकान के बाहर लोग सोये हुए नज़र आते थे। तांगा एक तंग से बाज़ार में आ गया। तांगे वाले ने बताया कि यह इस शहर का सबसे बड़ा बाज़ार है। बाज़ार सूना पड़ा था। मैंने पूछा यहां बाज़ार कितने बजे बन्द होता है। उसने बताया कि इशा की अज़ान होते ही दुकानें बन्द हो जाती हैं और लोग मस्जिद की ओर भागते हैं। नमाज़ पढ़कर लोग अपने घरों को चले जाते हैं और खाना खाकर सो जाते हैं। इतनी जल्दी ? मैं हैरान हुआ। हां जी उसने कहा फिर फ़ज्र की अज़ान के साथ ही वे जाग जाते हैं। नमाज़ के बाद नाश्ता करके दुकान खोल देते हैं।

बाज़ार से गुज़रकर तांगा एक गली में आकर रुक गया। यह कौन-सी जगह है ? मैंने पूछा तो उसने बताया कि यह हाजी उबैदुल्लाह का घर है। ज़्यादातर मुसाफ़िर इनके मेहमान बनते हैं। मैंने पूछा अगर उन्होंने दरवाज़ा नहीं खोला तो ? कोई बात नहीं दूसरा दरवाज़ा खुल जाएगा। वह तांगे से उतरकर दरवाज़ा खटखटाने लगा। मैं भी नीचे उतर आया। घड़ी देखी तो रात का एक बज रहा था। सारा माहौल सोया हुआ था, कोई आहट नहीं थी। अचानक दरवाज़ा खुला और एक बुज़ुर्ग ने बाहर झांका।

तांगे वाले ने कहा–आपके मेहमान आये हैं। बुज़ुर्ग ने दोनों पट खोल दिये। आइये अन्दर आ जाइये। मैंने तांगे वाले को पैसे दिये और बैग उठाकर डरता झिझकता अन्दर चला गया। मैं अपना परिचय कराना चाहता था मगर उन्होंने मुझे टोक दिया, कहा आप दूर से आये हैं, थके हुए होंगे। बाथरूम की ओर इशारा किया कि आप फ्रेश हो लें, मैं आपके खाने का इन्तिज़ाम करता हूं।

फिर रुक कर बोले इस समय घर में जो कुछ है वही पेश कर सकता हूं। मैंने जल्दी से कहा, 'कोई बात नहीं, आप घर वालों को तकलीफ़ न दें, खाने की ज़रूरत नहीं'। वे बोले, "बसते घर में मेहमान भूखे नहीं सोते।" मैंने हाथ मुंह धोये। साथ वाले कमरे में मेरा बिस्तर लगा हुआ था।

मेरे मन में आशंका पैदा होने लगी । यह कैसा आदमी है ! न मेरा पता मालूम किया, न कुछ और ही पूछा और ये सत्कार, मैं कहीं किसी मुसीबत में न फंस जाऊं ।

इतने में वे पानी और ग्लास लेकर आ गये । उनके पीछे-पीछे घर की नौकरानी खाने का ट्रे उठाये हुए थी । उसने क़ालीन पर दस्तरख़्वान बिछाया और खाना लगा दिया । गर्म-गर्म रोटी और सब्ज़ी । मुझे लगा कि मैं वाक़ई भूखा हूं । अभी दो-तीन निवाले ही खाये थे कि वे नौकरानी के साथ फिर आ गये । अब नौकरानी ने ट्रे से पांच अलग-अलग तरह के सालन की प्लेटें निकाल कर रखीं । मैं हैरान हो गया । खाने के बाद मैंने उन्हें अपने आने का उद्देश्य बताया और यह भी बता दिया कि मुझे यहां एक सप्ताह रहना है । वे बड़े खुश हुए और मुझे कई लोगों के पते बताए जो थेसिस तैयार करने में मेरे काम आ सकते थे ।

उनके घर का खाना बहुत स्वादिष्ट होता था, मुझे नींद भी बहुत मीठी आती थी, बैठक को ही उन्होंने मेरा कमरा बना दिया था । सुबह-सुबह ही मुझे नाश्ता कराके वे अपनी दुकान पर चले जाते थे । उनके बेटे और घर के दूसरे लोग भी चले जाते । सब ईशा की नमाज़ पढ़कर घर आते । मुझे भी फ़ज्र की अज़ान के साथ उठने और मस्जिद जाकर नमाज़ अदा करने की आदत पड़ गयी । रात को भी मैं ईशा की अज़ान सुनकर मस्जिद पहुंच जाता । वहां सब मुहल्ले वाले एक-दूसरे से बड़े अच्छे से मिलते, उनकी ख़ैरियत पूछते और मुहल्ले के बारे में एक-दूसरे को बताते ।

मैं जब कभी उनका शुक्रिया अदा करता तो वे कहते कि मेहमान तो अल्लाह की रहमत होता है । एक दिन मैंने उनसे फिर उस रात अचानक पांच तरह के सालन आ जाने का रहस्य पूछा तो वे मुस्कराए और मुझे अपने साथ छत पर ले गये । छत की दीवारों पर मैंने देखा कि छोटी-छोटी खिड़कियां बनीं थीं । उन्होंने एक खिड़की खोल दी । दूसरी ओर किसी का घर था । एक-एक करके उन्होंने सभी खिड़कियां खोल दीं । हरेक की दूसरी ओर कोई घर था । हाजी साहब कहने लगे ये सब हमारे पड़ोसी हैं । हमारे यहां की विशेषता यह है कि हम पड़ोसी के अधिकारों को बहुत महत्व देते हैं । हम एक-दूसरे का समाचार लेते रहते हैं और समय पड़ने पर एक-दूसरे की मदद करते रहते हैं । जो चीज़ घर में नहीं होती वह दूसरे घर से मिल जाती है । उस रात मेरी पत्नी ने इन्हीं खिड़कियों को खटखटाया था और उन्हें बताया कि एक नया मेहमान आ गया है तो हरेक घर से कुछ न कुछ मिल गया, जो हमने तुम्हारे सामने रख दिया । यही है हमारी सभ्यता का निचोड़ । हम लोग बिल्कुल चिन्तामुक्त होते हैं, क्योंकि हर घर का सम्पर्क दूसरे से बना हुआ है । हमें बाहर से किसी को बुलवाना नहीं पड़ता । हम लोग एक परिवार की तरह रहते हैं । मुहल्ले की मस्जिदों में भी हम एक-दूसरे की ख़ैरियत लेते रहते हैं ।

मेरी थेसिस पूरी हो चुकी थी । मैं यहां की सभ्यता से बहुत प्रभावित था । मैंने डरते-डरते हाजी जी से कहा कि आप अनुमति दें तो एक बात कहूं । उन्होंने कहा, हां-हां कहो, क्या बात है ? मैंने कहा कि आप मुझे इस सभ्यता का हिस्सा बना लें । वे बोले, मैं समझा नहीं, तो मैंने स्पष्ट कहा कि मुझे अपने परिवार का सदस्य बना लें । अपने परिवार में ही मेरी शादी करा दें ।

हाजी जी थोड़ी देर तक मुंह झुकाकर बैठे रहे और मैं डरता रहा । फिर वे सिर उठाकर बोले मैं तुम्हारी भावनाओं का सम्मान करता हूं । मेरी बेटियों की शादियां तो हो चुकी हैं । हां मेरी एक अनाथ भांजी मेरे साथ रहती है, जिसे मैंने अपनी बेटी की तरह ही पाला है । अगर तुम्हें मंज़ूर हो तो...। जी हां, जी हां, मैंने तुरन्त ही कह दिया । आपके संरक्षण में रहने वाली तो बड़ी भाग्यशाली होगी ।

अगले महीने मेरे-माता पिता ने आकर रिश्ते की बात पक्की की और मेरी शादी हो गयी । नूरे सहर मेरे घर आ गयी । जल्दी ही आयरलैंड यूनीवर्सिटी ने मेरा लेख पाठ्यक्रम में शामिल कर लिया और मुझे रिसर्च ब्रांच में बड़ी अच्छी नौकरी दे दी । मैं अपनी पत्नी नूरे सहर के साथ आयरलैंड रह गया । नूरे सहर ने मेरा जीवन स्वर्ग बना दिया । हमारे चार बच्चे हुए, दो बेटे और दो बेटियां । नूरे सहर दो चार साल में अपने शहर हो आती थीं अलबत्ता मुझे कभी दोबारा जाने का अवसर नहीं मिल सका । फिर जब मैंने अपना व्यवसाय शुरू कर लिया तो बिल्कुल बंध कर रह गया ।

लम्बा समय बीत गया । मेरे सभी बच्चों की शादी हो गयी । अब नूरे सहर बीमार रहने लगी । उसने अपने घर जाने की इच्छा जतायी तो मैंने वहां भेज दिया । घर पहुंच कर वह और ज़्यादा बीमार हो गयी । एक दिन उसने फ़ोन पर मुझे बताया कि उसका समय पूरा हो चुका है । वह वापस आना नहीं चाहती, यहीं दफ़न होना चाहती है । उसने मुझ से यह

भी कहा कि मेरी क़ब्र पर ज़रूर आना । उसी रात उसकी मौत हो गयी ।

कल रात मैं पूरे 50 वर्षों बाद उस स्टेशन पर उतरा । उसी ट्रेन से उतरा । रात का वही समय था । अन्तर केवल यह था कि तब मैं 25 वर्ष का था अब 75 वर्ष का हूं । मेरे हाथ में वैसा ही एक बैग था । स्टेशन की शक्ल बदली हुई थी । बिजली के बड़े-बड़े लैम्प जल रहे थे । स्टेशन पर दो-तीन स्टॉल भी बन गये थे, खाना, चाय, ठंडा सब कुछ मिल रहा था । बुक स्टॉल पर रंगीन पत्रिकाएं भी लटक रही थीं । काफ़ी चहल-पहल थी ।

पहले की ही तरह एक कुली मेरे पास आया और मैं बैग उसे पकड़ा कर उसके पीछे चलने लगा । बाहर भी हर तरफ़ उजाला था और पार्किंग में टैक्सियां खड़ी थीं, साथ ही ऑटो रिक्शे भी थे । मैंने एक टैक्सी ली और शहर की ओर चल पड़ा । टैक्सी वाले ने मेरे पूछने पर बताया कि तांगे बन्द कर दिये गये क्योंकि बहुत गंदगी फैलाते थे, साइकिल रिक्शा पर भी प्रतिबंध लगा दिया गया, क्योंकि वे अमानवीय थे । रास्ते में सब कुछ बदला हुआ था । सड़कों पर लाईटें जल रहीं थीं । घरों के बाहर कारें खड़ी थीं । मार्केट का नक़्शा भी बदला हुआ था । कुछ होटल रात के इस समय भी खुले हुए नज़र आये ।

मैं अपने गंतव्य पर पहुंच चुका था । हाजी साहब को गुज़रे हुए 20 वर्ष बीत चुके थे । मैंने अपने आने की सूचना दी । इस घर का नक़्शा भी बदला हुआ था। चार मंज़िलें बनी हुई थीं और एक बड़ा-सा काला गेट लगा हुआ था ।

बार-बार घंटी बजाने पर अन्दर से एक वर्दीधारी चौकीदार ने ललकारा । मैंने अपना नाम बताया तो उसने गेट खोल दिया । फिर मेरा सामान उठाकर एक छोटे से कमरे में ले आया । मैंने कहा अन्दर सूचना दे दो । वह बोला इस समय सूचना नहीं दी जा सकती । सब लोग सो रहे हैं । साहब ने कहा था कि आपको इसी कमरे में ठहरा लूं । सुबह लोग उठेंगे तो आप से मिलेंगे । मैंने यूं ही पूछ लिया–कुछ खाने को मिल जाएगा ? उसने कहा साहब अन्दर किचन तो बन्द हो गया है, आप कहें तो नुक्कड़ वाले होटल से ला दूं ? नहीं मैंने उसे मना कर दिया, होटल का खाना मेरे लिए ठीक नहीं है । मैंने चौकीदर को भेज दिया और पिछले दिनों को याद करने लगा । सोते-जागते रात गुज़र गयी । फ़ज्र की अज़ान सुनकर मैं मस्जिद पहुंच गया । मस्जिद में कुछ बूढ़े और कुछ मज़दूर टाइप के लोग थे । एक सफ़ (पंक्ति) भी पूरी नहीं हुई । मौलवी साहब ने नमाज़ पढ़ायी और लोग अपने-अपने रास्ते हो लिए । किसी ने किसी की ख़ैरियत भी नहीं पूछी । मैं ऐसे ही टहलता हुआ बाज़ार के दूसरे छोड़ पर पहुंच गया । एक भी दुकान नहीं खुली थी ।

मैं घूम फिर कर घर वापस आ गया । सारे लोग सोये पड़े थे । मैंने चौकीदार से पूछा कि लोग कब उठेंगे । उसने कहा कोई नियत समय नहीं है, जब जिसकी आंख खुल जाए । तो तुम्हें पता कैसे चलता है ? मुझे चाय की तलब हो रही थी । चौकीदार मेरे लिए नुक्कड़ वाले होटल से चाय लाने को तैयार था, मगर मैंने उसे रोक दिया और खुद एक गंदे से होटल मैं आ बैठा । चाय पीकर वापस आ गया । मेरे लिए समय बिताना कठिन हो रहा था । अचानक मुझे हाजी साहब की छत पर बनी खिड़कियों का ख़्याल आया । मैंने चौकीदार से कहा कि मैं छत पर जाना चाहता हूं । उसने कहा छत पर कुछ नहीं है । पानी की टंकियों के अलावा । फिर भी मुझे सीढ़ियां दिखा दो । उसने कहा चलिए मैं आपके साथ चलता हूं । वाक़ई वह छत कहीं नहीं थी । छत पर पानी की टंकियां बनी थी और डिश एंटीने लगे थे और कुछ काठ-कबाड़ पड़ा था ।

मैंने सीढ़ियों की तरफ़ पांव बढ़ाये और नीचे उतरने लगा । नीचे तेज़ पाश्चात्य संगीत बज रहे थे । शायद घर के लोग जाग गये थे । आख़िरी मंज़िल के दरवाज़े पर हाजी जी का पोता नाइट सूट में खड़ा था । मुझे देखकर उसने हाथ आगे बढ़ाया, हेलो अंकल । कल रात देर तक पार्टी होती रही है, मैं स्टेशन पर गाड़ी भेजना भूल गया । आपको कोई तकलीफ़ तो नहीं हुई ।

फिर वह जल्दी से बोला, आप आंटी की क़ब्र पर जाएंगे न मैंने अपना चपरासी बुला लिया है, वह आपको ले जाएगा, मुझे ज़रा एक मीटिंग में जाना है रात को मिलेंगे । वह मेरे जवाब का इंतिज़ार किये बिना ही अन्दर चला गया । यह भी नहीं पूछा कि मैंने नाश्ता किया या नहीं ? कुछ खाया कि नहीं ? कहां सोया ? मैंने अपना बैग उठाया और चपरासी के साथ क़ब्रिस्तान आ गया। उसने मुझे क़ब्र दिखा दी तो मैंने उसे जाने को कह दिया । मैं बहुत फूल लेकर आया था । सारे फूल मैंने नूरे सहर की क़ब्र पर डाल दिये । फिर मेरा दिल भर आया क्या-क्या न याद आया, मैं बैठा रोता रहा, चुप-चाप रोता रहा ।

अनाथ लड़कों की पुकार

VOICE OF ORPHAN BOYS

यतीमख़ाना इस्लामिया (गया)



एक परिचय

● दीनी और असरी शिक्षा की अपनी तरह की जानी-मानी रिहाइशी पाठशाला ● 95 वर्षों की सेवाएं ● बहुत से विभाग ● शिक्षा के पड़ाव : प्राथमिक से मैट्रिक तक ● हिफ़्ज़ का विभाग : हिफ़्ज़ के साथ-साथ मैट्रिक ● हर वर्ष बिहार स्कूल बोर्ड परीक्षा का 100 प्रतिशत रिज़ल्ट ● पत्राचार शिक्षा 2013-2014 के सत्र के लिए 11वीं, 12वीं और बी॰ए॰ और लाइब्रेरी साइंस (BLIS) में प्रवेश जारी ● कंप्यूटर की भी शिक्षा ● किफ़ाला स्कीम के तहत एक अनाथ छात्र पर वार्षिक ख़र्च 12000/- रुपये प्रति वर्ष ● कुल वार्षिक ख़र्च 16 लाख से अधिक ● आमदनी का स्रोत : मुस्लिम अवाम के चन्दे ● 125 अनाथ बच्चे जिनका पूरा ख़र्च इदारा ही उठाता है ।

● जिस रूप में संभव हो मदद करके अल्लाह से बड़ा इनाम प्राप्त करें–उदाहरण के लिए ● ज़कात ● सदक़े ● अतिया ● पैदावार की ज़कात ● क़ुरबानी की खाल ● एक अनाथ बच्चे का वार्षिक ख़र्च ● अपने या किसी बुज़ुर्ग के नाम पर कमरा या हॉल बनवाना आदि ।

● याद रखें यहां हर वर्ष ऑडिट (Audit) भी कराया जाता है । आप खुद यतीमख़ाना इस्लामिया पहुंच कर बराबरी का व्यावहारिक नमूना अपनी आंखों से देखें कि किस प्रकार अनाथ और मां-बाप वाले बच्चे मिल-जुलकर रहा करते हैं ।

इनायत पोलिटेक्निक (ENAYETH POLYTECHNIC) की इमारत के निर्माण का काम ज़ोरो शोर से जारी है।

यह इदारा आप से उदार सहायता की अपील करता है ।

नोट : यह इदारा विदेशी मुद्रा के क़ानून FCRA के तहत भी रजिस्टर्ड है ।

Foreign Donors विदेशी चन्दा देने वाले

अब आप विदेश से BANK A/c No. 3004020100000187

BANK CODE NO. UBININBBJAM,

UNION BANK OF INDIA (MAIN BRANCH, GAYA)

में अपनी रक़म भेज सकते हैं

चेक या ड्राफ्ट पर केवल यह लिखें–THE GAYA MUSLIM ORPHANAGE

चेक, ड्राफ़्ट, मनीऑर्डर या ख़त भेजने का पता

Hon. SECRETARY, THE GAYA MUSLIM ORPHANAGE
At+P.o : CHERKI-824237, Distt : GAYA (BIHAR) INDIA

LOCAL DONARS मक़ामी चन्दा देने वाले

BANK A/C NO. : 10581, UNION BANK OF INDIA (MAIN BRANCH, GAYA)
CORE BANKIN G A/C NO.: 300402010010581, ☎ 0631-2734428 ● Mobile : 9955655960
E-mail : gmocde@yahoo.co.in, Website : www.gmogaya.com

नोट : कोर बैंकिंग वाले हज़रात E-mail या डाक से अपना मुकम्मल पता भेज दिया करें ताकि उसी पते पर रक़म की रसीद रवाना की जा सके ।

अध्यक्ष : डॉ॰ फ़रासत हुसैन **एज़ाज़ी नाज़िम : डॉ॰ मुहम्मद एहतिशाम रसूल**

बच्चों के चरित्र-निर्माण की ओर अपेक्षित ध्यान दीजिए

■ डॉ॰ जगदीश गांधी
(संस्थापक-प्रबंधक
सिटी मोन्टेसरी स्कूल, लखनऊ)

प्रत्येक 'बालक' ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ कृति है और सारे विश्व का सुखमय भविष्य ईश्वर की इन्हीं सर्वश्रेष्ठ कृतियों द्वारा किये जाने वाले कार्यों पर ही निर्भर रहता है । इसलिए यदि आज की बाल एवं युवा पीढ़ी के साथ ही आगे जन्म लेने वाली पीढ़ियों का चरित्र संतुलित एवं उद्देश्यपूर्ण शिक्षा से पोषित कर दिया जाए तो निश्चित ही कल सारी दुनिया का भविष्य अत्यन्त ही सुरक्षित तथा शांतिपूर्ण होगा । राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी का मानना था कि, ''समस्त शिक्षा का अन्तिम उद्देश्य 'चरित्र का निर्माण' होना चाहिए ।'' वे कहते थे कि ''शिक्षा से मेरा अभिप्राय बालक और वयस्क के शरीर, मन, आत्मा का पूरा विश्वास करना है ।'' ईश्वर की इसी सर्वश्रेष्ठ कृति के संबंध में किसी ने सही कहा है कि ''बच्चे को जन्म देना कठिन काम अवश्य है परन्तु उसको मनुष्यता सिखाना उससे भी अधिक कठिन काम है ।''

प्रत्येक मनुष्य की तीन वास्तविकताएं होती हैं

प्रत्येक मनुष्य की तीन वास्तविकताएं हैं । पहला, मनुष्य एक भौतिक प्राणी है । दूसरा, मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है तथा तीसरा, मनुष्य एक आध्यात्मिक प्राणी है । इसलिए इन तीनों प्रकार की शिक्षाओं से परिपूर्ण सम्पूर्ण व्यक्तित्व के धनी बालकों के द्वारा ही सारी दुनिया में एकता एवं शांति की स्थापना संभव है । अतः हमें ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ कृति 'बालक' को बचपन से ही तीनों वास्तविकताओं के अनुरूप उसे (1) भौतिक (2) सामाजिक तथा (3) आध्यात्मिक तीनों प्रकार की संतुलित शिक्षा एवं उद्देश्यपूर्ण शिक्षा देकर उसके सम्पूर्ण व्यक्तित्व का संतुलित विकास करना है । और यही संतुलित व उद्देश्यपूर्ण शिक्षा ही मनुष्य को भौतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक तीनों ही क्षेत्रों में आगे बढ़ने का सुअवसर भी प्रदान करती है ।

मनुष्य का जन्म तो सहज होता है लेकिन मनुष्यता उसे कठिन परिश्रम से प्राप्त करनी पड़ती है

किसी भी व्यक्ति के व्यक्तित्व का विकास उसके चरित्र से होता है और चरित्र से ही मनुष्य की पहचान होती है । इस संसार में जो भी लोग अपने जीवन में उन्नति के शिखर पर पहुंचे वे अपने मन, वचन और कर्म से अत्यन्त ही पवित्र और महान थे । वास्तव में इस संसार में रहते हुए जो व्यक्ति लोक कल्याण के लिए अपने जीवन को समर्पित कर देता है, वही सच्चा धार्मिक, ज्ञानी और संस्कृतिवान मनुष्य है । इस प्रकार मनुष्य का जन्म तो सहज होता है लेकिन मनुष्यता उसे कठिन परिश्रम से प्राप्त करनी पड़ती है । शिक्षा के संबंध में स्वामी विवेकानन्द जी ने भी कहा है कि जो शिक्षा साधारण व्यक्ति को जीवन संग्राम में समर्थ नहीं बना सकती, उसमें स्वाभिमान पैदा नहीं कर सकती वह शिक्षा नहीं है ।

सम्पूर्ण मानव जगत की एकता के लिए काम करें

इस युग के अवतार बहाउल्लाह के मूल संदेशों में प्रमुख है 'सम्पूर्ण मानव जगत की एकता ।' मानवजाति को संबोधित करते हुए वे कहते हैं कि–''तुम एक ही वृक्ष के फल और एक ही शाख की पत्तियां हो ।'' इस कथन का अर्थ है कि मानव जगत एक विशाल वृक्ष के समान है, वहां के निवासी इस वृक्ष की विभिन्न शाखाएं और हर मनुष्य इन शाखाओं पर सुशोभित फल-फूल हैं । परमपिता परमात्मा की इस सर्वोच्च कृति की शिक्षा के संबध में प्रसिद्ध कवि रवीन्द्रनाथ टैगोर जी का मानना है कि शिक्षा प्रत्येक देश के सामाजिक जीवन का साधन है तथा सार्वभौम विश्व संस्कृति के निर्माण के विभिन्न राष्ट्रीय संस्कृतियों की संग्रहकर्ता है ।

अपने लक्ष्य की प्राप्ति तक संघर्ष करें

स्वामी विवेकानन्द जी ने कहा है कि "उठो, जागो, स्वयं जागकर औरों को भी जगाओ । अपने नर जन्म को सफल करो और तब तक रुको नहीं जब तक कि लक्ष्य प्राप्त न हो जाए ।" मैथलीशरण गुप्त जी ने भी कहा है कि काम कितना ही कठिन हो पर जो घबड़ाते नहीं । काम करने की जगह बातें बनाते जो नहीं ।। काम है वह कौन जो होता नहीं उनके किये । वे नमूना आप बन जाते हैं औरों के लिये।। इसलिए हमें प्रत्येक बालक को भौतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक तीनों ही प्रकार की शिक्षाओं से युक्त करके उसे इस बात के लिए तैयार करना है कि वह अपने जीवन में किसी भी काम को करते हुए तब तक न रुके जब तक कि उसे अपने लक्ष्य की प्राप्ति न हो जाए ।

शिक्षा ही भौतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक तीनों ही क्षेत्रों में आगे बढ़ने का अवसर देती है

शिक्षा ही वह साधन है जो मनुष्य को भौतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक तीनों क्षेत्रों में आगे बढ़ने का अवसर देती है । वास्तव में शिक्षा ही अंधविश्वासों और कुरीतियों को दूर कर मनुष्य में शुद्ध ज्ञान विकसित करती है । शिक्षा ही जीवन-मूल्यों का महत्व बताकर मनुष्य को सदाचरण के लिए प्रेरित भी करती है । इस प्रकार संतुलित एवं उद्देश्यपूर्ण शिक्षा ही प्रत्येक मनुष्य में नैतिकता, आत्मबल, सेवा और त्याग की भावना को जाग्रत करके उसके सम्पूर्ण व्यक्तित्व का विकास करती है । इसलिए ईश्वर की इस सर्वश्रेष्ठ कृति 'बालक' को मानवजाति का गौरव एवं ईश्वर का उपहार बनाने के लिए प्रत्येक माता-पिता एवं शिक्षकों का यह प्रथम दायित्व है कि वह संतुलित एवं उद्देश्यपूर्ण शिक्षा के माध्यम से उनके सर्वश्रेष्ठ व्यक्तित्व का निर्माण करें ।

सेहतमन्द और रचनात्मक पत्रकारिता का प्रतीक

कान्ति

स्वस्थ चेतना का वाहक हिन्दी साप्ताहिक अख़बार

मीडिया आज का सबसे शक्तिशाली माध्यम है । इसी से जनमत बनाये और बिगाड़े जा सकते हैं । एक छोटी-सी अफ़वाह शांति से रह रहे लोगों के बीच दंगे का कारण बन जाती है और सच्ची जानक़ारी अशांतिपूर्ण माहौल को शांतिपूर्ण बना देती है ।

आज की बेमक़सद पत्रकारिता ने मीडिया की भूमिका को बिगाड़ कर रख दिया है । हिंसा, अपराध, कुकृत्य और अनैतिक कारनामों एवं महत्वहीन चीज़ों की सनसनीख़ेज़ प्रस्तुति ही पत्रकारिता समझी जाने लगी है । घोटालों, अनियमितताओं, राजनीतिक उठापटक की गाथाओं और नेताओं के काले कारनामों की एकांगी और प्रायोजित रिपोर्टिंग आदि से लोग तंग आ चुके हैं ।

इस विषमता भरे माहौल में 'कान्ति' (साप्ताहिक) एक ऐसा अख़बार है, जो नकारात्मक मुद्दों से हटकर सही दिशा में लोगों की रहनुमाई करता है । समाज में फैली बुराइयों एवं कुरीतियों का पर्दाफ़ाश करता और सार्वजनिक दोषों को निष्पक्षता एवं निर्भीकतापूर्वक सामने लाता है । आपकी समस्याओं को समझता और उनका हल पेश करता है । यह आपके मन को ही नहीं, आपकी आत्मा को भी संतुष्ट करता है । इसमें हर इन्सान के अंत:करण की स्वाभाविक ज़रूरत को पूरा करने के लिए आध्यात्म और रूहानियत पर सारगर्भित आलेख, दस्तावेज़ी और ज्ञानवर्द्धक रिपोर्टें और अन्य सामग्रियां प्रकाशित की जाती हैं ।

'कान्ति' (साप्ताहिक) आज से लगभग 54 वर्ष पूर्व प्रकाशित ऐसा अख़बार है जो इन्सानों को नेकी और भलाई के लिए उभारता है । अच्छे समाज के निर्माण और इन्सानों की ज़िन्दगियों को कामयाब बनाने के लिए रहनुमाई करता है । इस्लाम और मुसलमानों के बारे में फैली और फैलाई जा रही ग़लतफ़हमियों को सही तथ्य पेश कर दूर करने की कोशिश करता है । साथ ही देश और दुनिया की हलचल से बाख़बर रखता है और ख़बरों व घटनाओं पर संतुलित एवं शिक्षाप्रद टिप्पणी तथा विश्लेषण करता है ।

'कान्ति' पढ़िए और पढ़ाइए

इसे जन-जन तक पहुंचाने में आपका सहयोग अपेक्षित है।

प्रति कॉपी- ₹ 5 • वार्षिक- ₹ 250

प्रबंधक 'कान्ति' (साप्ताहिक)

डी-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव,
जामिया नगर, नयी दिल्ली-110025

फ़ोन : 09818799223, 011-26949430

ADVT.

बड़ी ज्वलंत समस्या है कन्या भ्रूण-हत्या

● डॉ॰ रज़ीउल इस्लाम नदवी

कन्या भ्रूण-हत्या वर्तमान समय की गंभीर सामाजिक समस्याओं में से एक है, इसी के कारण लिंग संतुलन बिगड़ रहा है । लड़कों की संख्या अधिक और लड़कियों की कम होती जा रही है । इसके कारण समाज पर अत्यधिक बुरे और ख़तरनाक प्रभाव पड़ रहे हैं । बुद्धिजीवी वर्ग चिंतित है और इस बुराई से निबटने का उपाय सोच रहा है । सामाजिक संस्थाएं भी इसकी रोकथाम की कोशिश में हैं और जिसको जो समझ में आ रहा है, कर रहा है । सरकारी स्तर पर भी इसकी रोकथाम के लिए क़ानून बनाये गये हैं । इनमें कठोरतम सज़ाओं का प्रावधान है, लेकिन इस बुराई की समाप्ति के कोई संकेत नज़र नहीं आ रहे हैं । ईश्वर की बनायी हुई प्राकृतिक व्यवस्था में इंसानी हस्तक्षेप से पैदा होने वाली गड़बड़ियों और असंतुलन के परिणाम को इन्सान झेलने के लिए विवश है ।

पहले जनसंख्या की समस्या को हव्वा बनाकर पेश किया गया । इससे निबटने के लिए 'परिवार नियोजन' की तरह-तरह की स्कीमें बनायी गयीं । बर्थ कंट्रोल के क़ानून बने । मामला आगे बढ़ा, तो अब लिंग निर्धारण की कोशिश की जाती है । विभिन्न उपकरणों की सहायता से यह पता लगाने की कोशिश की जाती है कि भ्रूण जो मां के पेट में पल रहा है, उसका लिंग क्या है ? यदि यह पता चल जाता है कि वह लड़की है, तो गर्भपात करा दिया जाता है ।

भारत में प्रति दस वर्ष पर जनगणना होती है । सन 2001 में देश की आबादी एक अरब दो करोड़ सत्तर लाख पन्द्रह हज़ार (1,02,70,15,000) को पार कर गयी है । इनमें पुरुषों की संख्या 53,12,77,000 और महिलाओं की संख्या 49,57,38,000 बतायी गयी है, अर्थात 100 पुरुषों की तुलना में 93 महिलाएं हैं । सन 1991 की जनगणना की तुलना में यह अंतर और भी अधिक था ।

(राष्ट्रीय सहारा, 7 सितम्बर 2006)

देश के कई राज्यों में लड़कों और लड़कियों के बीच अनुपात में बहुत अंतर है । इनमें विशेष रूप से गुजरात, महाराष्ट्र, राजस्थान, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली और हिमाचल प्रदेश उल्लेखनीय हैं । इन राज्यों में 1000 लड़कों की तुलना में लड़कियों की संख्या 800-900 के बीच है । सन 1991 की जनगणना में पंजाब में 1000 लड़कों की तुलना में लड़कियों की संख्या 875 थी, जो सन 2001 में घटकर 793 हो गयी । इसी तरह महाराष्ट्र में सन 1991 की जनगणना में 1000 लड़कों की तुलना में लड़कियों की संख्या 948 थी, जो सन 2001 में घटकर 917 हो गयी है । (राष्ट्रीय सहारा, 22 अगस्त, 2006)

राजस्थान के सरहदी इलाक़े जैसलमेर की आबादी में 1000 लड़कों की तुलना में लड़कियों की संख्या केवल 785 है । (राष्ट्रीय सहारा, 9 सितम्बर, 2006)

आगरा डिवीज़न में 1000 लड़कों की तुलना में लड़कियों की संख्या फ़िरोज़ाबाद में 887, एटा में 891, आगरा में 866, मथुरा में 872, हाथरस में 886 और अलीगढ़ में 885 है । (राष्ट्रीय सहारा, 29 मई, 2006)

लड़कियों से छुटकारा पाने का यह रुझान समाज में लड़कियों को कम हैसियत हासिल होने की वजह से है । उन्हें लड़कों की तुलना में कमतर समझा जाता है । उनके अस्तित्व को माता-पिता अपने ऊपर बोझ समझते हैं । उनका लालन-पालन, उनकी सुरक्षा, उनके विवाह में होने वाली परेशानियां आदि उनके लिए बोझ बन जाती हैं । इन सबके अतिरिक्त भी बच्चियों के मामले में ऐसी नाज़ुक और संगीन समस्याएं सामने आती रहती हैं कि मां-बाप इसी में भलाई समझते हैं कि जन्म से पहले ही उससे छुटकारा पा लिया जाए ।

जब अल्लाह के अन्तिम दूत इस दुनिया में आये, उस समय भी लड़कियों को भारी बोझ समझा जाता था । उनके माता-पिता को इस बात की आशंका सदैव सताती रहती थी कि अच्छा रिश्ता न मिलने की स्थिति में उन्हें अपनी बेटी की शादी दूसरे क़बीलों में करनी होगी । यह भी ख़तरा रहता था कि लुटेरे जब आक्रमण करेंगे, तो वे उन्हें पकड़ ले जाएंगे और उन्हें दासियां बना लेंगे । यही कारण था कि जब

उनमें से किसी के यहां लड़की पैदा होती थी, तो उसका चेहरा उतर जाता था ।

"और जब उनमें से किसी को बेटी की शुभ सूचना मिलती है तो उसके चेहरे पर कलौंस छा जाती है और वह घुटा-घुटा रहता है । जो शुभ सूचना उसे दी गयी वह (उसकी दृष्टि में) ऐसी बुराई की बात हुई कि उसके कारण वह लोगों से छिपता-फिरता है कि अपमान सहन करके उसे रहने दे या उसे मिट्टी में दबा दे । देखो कितना बुरा फ़ैसला है जो वे करते हैं ।" (क़ुरआन, 16:58-59)

लड़कियों से छुटकारा पाने के लिए इस्लाम के आगमन से पहले अरब के कुछ क़बीलों (Tribes) में बड़ी घिनौनी-घिनौनी प्रथाएं थीं–

"जब जन्म का समय क़रीब आता, तो एक गढ़ा खोद दिया जाता था । फिर यदि लड़की पैदा होती, तो जन्म के तुरंत बाद उसे गढ़े में दफ़्न (गाड़) कर दिया जाता था ।"

(इब्ने-अब्बास)

"लड़की पैदा होते ही उसे मारकर कुत्ते के आगे डाल दिया जाता था ।" (क़तादा)

(क) "किसी पहाड़ की चोटी पर ले जाकर फेंक दिया जाता था ।

(ख) पानी में डुबा दिया जाता था ।

(ग) ज़िब्ह (वध) कर दिया जाता था ।

(घ) जब वह कुछ बड़ी हो जाती थी, तो एक दिन उसे ख़ूब सजा-संवार कर रेगिस्तान में ले जाया जाता था, जहां ख़ूब गहरा गढ़ा खोदकर उसमें धकेल दिया जाता था और ऊपर से मिट्टी बराबर कर दी जाती थी ।"

(तफ़्सीर कबीर)

आज की परिस्थितियां भी कुछ अलग नहीं हैं । जैसलमेर (राजस्थान) के एक गांव 'देवड़ा' के बारे में एक रिपोर्ट प्रकाशित हुई है कि वहां पिछले 100 वर्षों में किसी बच्ची की शादी नहीं हुई है । पैदा होते ही उन्हें मार दिया जाता है । कभी-कभी तो यह काम खुद उनकी मां करती है । वह अपने दूध के साथ बच्ची को अफ़ीम खिला देती है । नाक पर रेत की पोटली रख देती है या मुंह और नाक में रेत भर देती है । मुंह पर रज़ाई या तकिया रख देती है, ताकि बच्ची का दम घुट जाए, या मुंह में नमक भर देती है ।

(राष्ट्रीय सहारा, 9 सितम्बर, 2006)

समाज का वह वर्ग जो अपने को एडवांस मानता है, वह तो इतना निर्दयी होता है कि शिशु के जन्म तक की भी प्रतीक्षा नहीं करता । गर्भ में ही स्केनिंग करके पता लगा लिया जाता है कि गर्भ में पलने वाली नन्हीं-सी जान लड़का है या लड़की । यदि लड़की हुई, तो गर्भपात करा दिया जाता है । इस तरह भ्रूण-हत्या रोकने के लिए सन 1994 में क़ानून बनाया गया । (Natal Diagnostic Technique Regulation and Prevention of Misuse Act) इस क़ानून के तहत बच्चे के लिंग का पता लगाना क़ानूनी अपराध समझा गया, लेकिन इसके बावजूद हर साल 5-7 लाख लड़कियों की मां के गर्भ में ही हत्या कर दी जाती है ।

(राष्ट्रीय सहारा, 6 जून, 2006)

इस तरह के Fertility Centre पर समय-समय पर छापा भी मारा जाता है । इस काम में लिप्त डॉक्टरों को गिरफ़्तार भी किया जाता है, उनके विरुद्ध मुक़दमे भी चलते हैं और उन्हें सज़ा भी दी जाती है, मगर इन तमाम कोशिशों के बावजूद इस सामाजिक बुराई का ख़ात्मा तो क्या, इसके फैलाव को रोकना भी संभव नहीं हो सका है ।

इस्लामी उपाय

इस्लाम भ्रूण-हत्या को गंभीर अपराध मानता है । उसको रोकने के लिए विभिन्न प्रकार की युक्तियां अपनाता है । जिन आशंकाओं और संभावित ख़तरों के कारण लोग भ्रूण-हत्या कर रहे हैं उन्हें दूर करता है । इस्लाम लड़कियों को सौभाग्यशालिनी व कल्याणकारिणी समझता है। उनके लालन पालन और अच्छे प्रशिक्षण की भी शिक्षा देता है । सामाजिक स्तर पर यह बहुत ही लाभदायक सिद्ध हुआ है ।

इस्लाम ने सबसे पहला काम यह किया कि लोगों को मानसिक रूप से इसके लिए तैयार किया । कोई भी क़ानून उस समय तक प्रभावशाली नहीं हो सकता, जब तक लोग उसे मानने के लिए तैयार न हों । लोग उसकी ख़ूबियों से अवगत न हों और उसके न मानने की हानियों को न जान जाएं ।

इस्लाम ने बताया कि यह एक शैतानी कार्य है :

"इसी प्रकार बहुत से बहुदेववादियों के लिए उनके साझीदारों ने उनकी अपनी संतान की हत्या को सुहाना बना दिया है, ताकि उन्हें विनष्ट कर दें और उनके लिए धर्म को संदिग्ध बना दें ।" (क़ुरआन, 6:137)

"वे लोग कुछ जाने-बूझे बिना घाटे में रहे, जिन्होंने

मूर्खता के कारण अपनी संतान की हत्या की ।''

(क़ुरआन, 6:140)

अरब के कुछ क़बीले (Tribes) अपनी लड़कियों की हत्या केवल इसलिए कर देते थे, कि वे उन्हें आर्थिक बांझ समझते थे । लड़के तो बड़े होकर उनका हाथ बटाते थे, लेकिन लड़कियां बड़ी होकर कुछ नहीं करती थीं ।

क़ुरआन ने यह स्पष्ट किया कि आजिविका की चाबियां तो अल्लाह के हाथ में हैं । इस धरती पर जितने भी प्राणी हैं, उनकी रोज़ी का ज़िम्मा ईश्वर ने अपने ऊपर ले रखा है । कोई शक्तिशाली हो या कमज़ोर, हट्टा-कट्टा हो या अपंग, स्वयं रोज़ी रोटी के लिए दौड़-धूप करता हो या वह किसी दूसरे पर निर्भर हो, उसे रोज़ी मिलती है, तो अल्लाह (ईश्वर) की आज्ञा और उसकी मर्ज़ी से ही :

''और निर्धनता के कारण अपनी संतान की हत्या न करो, हम तुम्हें भी रोज़ी देते हैं और उन्हें भी ।''

(क़ुरआन, 6:151)

''और निर्धनता के भय से अपनी संतान की हत्या न करो, हम उन्हें भी रोज़ी देंगे और तुम्हें भी । वास्तव में उनकी हत्या बहुत ही बड़ा अपराध है ।''

(क़ुरआन, 17:31)

लड़कियों की हत्या को उन घृणित कृत्यों में शामिल किया गया है, जिसके बारे में आख़िरत (परलोक) के दिन पूछताछ होगी :

''और जब जीवित गाड़ी गयी लड़की से पूछा जाएगा कि उसकी हत्या किस गुनाह के कारण की गयी ।''

(क़ुरआन, 81:8-9)

इस्लाम में लड़कियों की हत्या की गिनती उन कामों में की गयी है, जिन्हें ईश्वर ने अवैध (हराम) क़रार दिया है :

''अल्लाह ने तुम पर हराम क़रार दिया है मां-बाप, की अवज्ञा, लड़कियों को ज़िन्दा दफ़न करना और फ़िज़ूलख़र्ची ।''

(मुस्लिम)

सन्तान की हत्या न करने की प्रतिज्ञा

ईशदूत हज़रत मुहम्मद (सल्ल०)[1] अपने अनुयायियों से बैअत (प्रतिज्ञा) लेते समय जिन बातों का इक़रार (वादा) करवाते थे, उनमें एक बात यह भी होती थी कि अपनी संतान की हत्या नहीं करेंगे । 'हुदैबिया की संधि' के बाद और मक्का-विजय से पहले बहुत-सी महिलाएं मक्का से हिजरत (प्रवास) करके मदीना पहुंचीं । ईश्वर ने अपने ईशदूत हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) को उनसे बैअत लेने का आदेश दिया :

''ऐ नबी ! जब तुम्हारे पास ईमानवाली स्त्रियां आकर तुमसे इस पर 'बैअत' (प्रतिज्ञा) करें कि वे अल्लाह (ईश्वर) के साथ किसी चीज़ को साझी नहीं ठहराएंगी और न चोरी करेंगी और न व्यभिचार करेंगी, और न अपनी औलाद (संतान) की हत्या करेंगी और न अपने हाथों और पैरों के बीच कोई आरोप गढ़कर लाएंगी, और न किसी भले काम में तुम्हारी अवज्ञा करेंगी, तो उनसे 'बैअत' ले लो और उनके लिए अल्लाह से क्षमा की प्रार्थना करो । निश्चय ही अल्लाह बहुत क्षमाशील, अत्यंत दयावान है ।''

(क़ुरआन, 60:12)

इसी तरह का अहद (प्रतिज्ञा) ईशदूत ने मर्दों से भी लिया । मदीना हिजरत करने से पहले यसरिब के जिन ख़ुशनसीब लोगों ने ईशदूत के हाथ पर 'बैअत' (प्रतिज्ञा) की थी उनमें हज़रत उबादा बिन सामित (रज़ि०) भी थे । वे बयान करते हैं कि ईशदूत हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने फ़रमाया :

''मुझसे बैअत (प्रतिज्ञा) करो उस चीज़ पर कि अल्लाह के साथ किसी को शरीक नहीं ठहराओगे, चोरी नहीं करोगे, व्यभिचार नहीं करोगे और अपनी संतान की हत्या नहीं करोगे ।''

(बुख़ारी)

इस्लाम इस बात को नहीं मानता कि लड़की का अस्तित्व आदमी के लिए मुसीबत या परेशानी का कारण है, बल्कि उसने लड़की को जन्नत (स्वर्ग) में प्रवेश करने का एक साधन बताया है ।

हज़रत इब्ने-अब्बास (रज़ि०)[2] कहते हैं कि ईश्वर के दूत हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने फ़रमाया :

''जिस व्यक्ति को दो लड़कियां हों, वह जब तक उनके पास रहें, वह उनके साथ अच्छा व्यवहार करता रहे, तो वह उसके स्वर्ग में प्रवेश का साधन बनेंगी ।''

(सुनन इब्ने-माजा)

हज़रत उक़बा बिन आमिर (रज़ि०) कहते हैं, अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया :

1. (सल्ल०)--इसका पूर्ण रूप है, सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम, जिसका अर्थ है, अल्लाह उन पर रहमत और सलामती की बारिश करे ।
2. (रज़ि०)--इसका पूर्ण रूप है, रज़ियल्लाहु अन्हु, इसका अर्थ है, अल्लाह उनसे राज़ी हो ।

"जिस व्यक्ति को तीन लड़कियां हों, वह सब्र करे और उनको अपनी हैसियत के अनुसार खिलाये, पिलाये, पहनाये वह प्रलय के दिन नरक से उसके लिए ओट बन जाएंगी।" (सुनन इब्ने-माजा)

हदीसों में लड़कियों की शिक्षा एवं प्रशिक्षण की बहुत ताकीद (ज़ोर देकर) की गयी है। हज़रत अबू सईद अल-ख़ुदरी (रज़ि॰) से रिवायत (उल्लिखित) है कि ईशदूत हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) ने फ़रमाया :

"जिस व्यक्ति ने तीन लड़कियों का लालन-पालन किया, उन्हें अदब (शिष्टता) सिखाया, उनकी शादी की और उनके साथ सद्व्यवहार करता रहा, तो उसके लिए स्वर्ग है।" (अबू दाऊद)

हज़रत इब्ने-अब्बास (रज़ि॰) से रिवायत है कि आप (सल्ल॰) ने फ़रमाया :

"जिस व्यक्ति ने अपनी तीन बेटियों या तीन बहनों का लालन-पालन किया, उन्हें अदब (शिष्टता) सिखाया, उनके साथ हमदर्दी (सहानुभूति) का मामला किया, यहां तक कि ईश्वर ने उन्हें बेनियाज़ (निःस्पृह) कर दिया, उसके लिए अल्लाह ने स्वर्ग अनिवार्य कर दी है।

बयान करने वाले कहते हैं कि यह सुनकर एक व्यक्ति ने पूछा : ऐ ईश्वर के दूत ! यदि किसी को दो बेटियां या दो बहनें हों और वह उनके साथ ऐसा व्यवहार करे ?" आप (सल्ल॰) ने फ़रमाया : "उसके लिए भी यही बदला (प्रतिफल) है।"

बयान करने वाला आगे कहता है कि यदि उपस्थित लोगों में से किसी ने कोई एक लड़की या बहन के साथ सद्व्यवहार के बारे में पूछा होता, तो ईशदूत यही जवाब देते। (शरह-अल-सुन्ना)

इस्लाम की ये शिक्षाएं लड़कियों को समाज में इतनी प्रतिष्ठा और सम्मान प्रदान करती हैं कि इससे अधिक की कल्पना भी नहीं की जा सकती। जिन समाजों में लड़कियों के अधिकार छीन लिये गये हैं, या उन्हें कमतर समझा जाता है, उन्हें उनकी हालत सुधारने और उन्हें उच्च स्थान देने के लिए इन शिक्षाओं से मदद मिलेगी।

BOOKS ON ISLAM IN BENGALI

Bangla Islami Prakashani Trust

a renowned and popular Publishing House, invites all of you to collect

Bengali Books on Islamic Sociology, Economics, Politics, History, Life of Prophet Mohammad (S) and his achievements in the making of Society, Translation of

HOLY QU'RAN

&

HADEETH etc.







ISLAMIC BOOK CENTRE

C/o, Bangla Islami Prakashani Trust 27B, Lenin Sarani,
Kolkata-700013, Ph. : 033 2249 0987

एड्स : ज्यों-ज्यों दवा ढूंढ़ी, मर्ज़ बढ़ता गया

■ योगेश कुमार गोयल

एड्स यानी 'एक्वायर्ड इम्यूनो डेफिशिएंसी सिन्ड्रोम', जिसका अर्थ है रोगों से लड़ने की क्षमता कम होने से अप्राकृतिक रोगों के अनेक लक्षण प्रकट होना और एच॰आई॰वी॰ का अर्थ है ह्यूमन इम्यूनो डेफिशिएंसी वायरस अर्थात रोगों से लड़ने की क्षमता कम करने वाला विषाणु । स्वास्थ्य विशेषज्ञों के अनुसार जिस व्यक्ति के शरीर में एच॰आई॰वी॰ वायरस हो, उसे एड्स होने की संभावना बढ़ जाती है और एड्स का शिकार होने पर रोगी धीरे-धीरे मृत्यु की ओर खिंचा चला जाता है । शरीर में प्रवेश करने के बाद एच॰आई॰वी॰ वायरस शरीर की विभिन्न रोगों से लड़ने की क्षमता को कम करने लगता है और कुछ वर्षों बाद यह क्षमता पूर्णतया नष्ट हो जाने के उपरांत रोगी मृत्यु की गोद में चला जाता है ।

हालांकि एड्स नामक यह भयावह और जानलेवा बीमारी अभी तक लाइलाज ही मानी जा रही है लेकिन अमेरिका तथा कुछ अन्य विकसित देशों के अलावा तंजानिया उगांडा, जाम्बिया, आईलैंड, आस्ट्रेलिया आदि देश भी इसका इलाज ढूंढ़ने के लिए प्रयासरत हैं । संयुक्त राष्ट्र भी इस दिशा में सक्रिय भूमिका निभा रहा है ।

एड्स नामक यह भयावह बीमारी आज एक पालतू जीव की भांति दुनिया भर के करोड़ों लोगों के शरीर में पल रही है । आज समूचे विश्व में कोई भी राष्ट्र स्वयं के पूर्णतया 'एड्स मुक्त' राष्ट्र होने का दावा नहीं कर सकता । हालांकि यह सही है कि एड्स की रोकथाम के लिए अन्य बीमारियों की तुलना में कई गुना अधिक धनराशि ख़र्च की जा रही है लेकिन इसके बावजूद इस दिशा में अब तक कोई ख़ास सफलता नहीं मिली है । जहां तक भारत में एड्स के प्रसार के कारणों का सवाल है तो इसके लिए सरकारी व ग़ैर-सरकारी स्तर पर स्वास्थ्य संबंधी जागरूकता और ज़िम्मेदारी के अभाव को प्रमुख रूप से ज़िम्मेदार माना जा सकता है और एक प्रमुख कारण हमारे देश में अशिक्षा, निर्धनता, अज्ञानता व बेरोज़गारी भी है ।

अशिक्षा, निर्धनता, बेरोज़गारी जैसी समस्याएं देश की आज़ादी के 54 वर्षों बाद भी हमारे लिए अभिशाप बनी हुई हैं । इसे भारत का दुर्भाग्य ही कहा जाना चाहिए कि किसी भी राजनीतिक दल ने एड्स की भयावहता को समझते हुए भी आज तक कभी इसे राजनीतिक मुद्दा नहीं बनाया । एड्स की वजह से जहां इसके शिकार होने वाले लोग कुछ ही वर्षों में यह दुनिया छोड़ जाते हैं, वहीं इसकी वजह से देश का उत्पादन बढ़ जाता है, विकास कार्यों पर बुरा प्रभाव पड़ता है और जनहित के लिए बनी अनेक योजनाएं धरी की धरी रह जाती हैं । इसके अलावा राजनीतिक सुधार, सामाजिक स्थिरता और क़ानून व्यवस्था पर इसका जो प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है, वह अलग ।

वैसे तो एड्स नामक यह ख़तरनाक बीमारी प्रत्यक्ष रूप से 1981 में कैलिफोर्निया में सामने आयी थी लेकिन भारत का इससे 6 जून 1986 को मुंबई में सामना हुआ था, जब मुंबई के एक व्यक्ति में एड्स के लक्षण पाये गये थे । इन 27 वर्षों में ही देश में एड्स संक्रमितों की तादाद अत्यधिक बढ़ गयी है । यह भारत का दुर्भाग्य ही है कि आज भारत एड्स संक्रमण के मामले में अन्य देशों से काफ़ी आगे निकल चुका है । यूनीसेफ़ की एक रिपोर्ट में बताया गया है कि भारत में प्रतिदिन 200 से अधिक बच्चे एच॰आई॰वी॰ से संक्रमित हो रहे हैं । एक रिपोर्ट में यह भी बताया गया है कि एच॰आई॰वी॰ संक्रमण के 60 प्रतिशत मामले 15-25 वर्ष आयु वर्ग के युवाओं के हैं ।

जहां तक भारत में एड्स नियंत्रण हेतु सरकार द्वारा तैयार की जा रही नीतियों की बात है तो इन्हें समय-समय पर अन्तर्राष्ट्रीय स्वास्थ्य विशेषज्ञों, शोधकर्ताओं तथा स्वयंसेवी संगठनों द्वारा अपर्याप्त बताया जाता है । पिछले कुछ वर्षों में कई ग़ैर-सरकारी स्वयंसेवी संगठनों ने इस बात पर गहरी चिंता जतायी हैं कि सरकार एड्स को अभी भी एक प्रमुख समस्या के रूप में महत्व नहीं दे रही है और इस बीमारी की चपेट में आये लोगों तथा एच॰आई॰वी॰ नियंत्रण हेतु सरकार द्वारा कारगर क़दम नहीं उठाये जा रहे हैं ।

अनाथ लड़कियों की पुकार

VOICE OF ORPHAN GIRLS

मुस्लिम लड़कियों का यतीमख़ाना (गया)

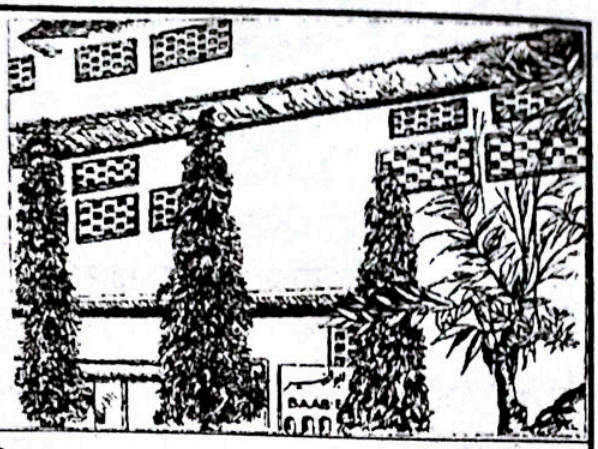

संक्षिप्त परिचय

लड़कियों के लिए आधुनिक और इस्लामी तालीम से लैस राष्ट्रीय स्तर का एक आदर्श रिहाइशी इदारा

संस्था ने अपनी उम्र के 25 वर्ष दिसम्बर 2011 में ही पूरे कर लिए मगर अब तक माली दुश्वारियों के सबब अपना सिल्वर (Silver Jubilee) भी नहीं मना सका ।

● 25 वर्षीय सेवाएं ● 19 विभाग ● शिक्षा : प्राथमिक से मैट्रिक तक ● पत्राचार शिक्षा I.A., B.A. एवं Library Science ● 6 छात्राओं ने हिफ़्ज़ के साथ मैट्रिक पास किया ● प्रौढ़ शिक्षा ● वोकेशनल सेन्टर ● कटिंग और सिलाई: 6 बैच 70 छात्राएं ● ज़री वर्क्स : 3 बैच 40 छात्राएं ● 1993 ई० से 2012 ई० तक 66 अनाथ बच्चियों और 41 मां-बाप वाली बच्चियों ने मैट्रिक पास किया ● वार्षिक ख़र्च : 22 लाख रुपये से अधिक ● आमदनी का स्रोत : मुस्लिम अवाम के चन्दे ● इदारा 120 अनाथ बच्चियों का सारा ख़र्च पूरा करता है ● किफ़ाला स्कीम के तहत एक यतीम बच्ची का वार्षिक ख़र्च 12,000/- रुपये है–आप भी एक अनाथ बच्ची का ख़र्च उठा कर सवाब में शरीक हों ।

सहायता के विभिन्न रूप : ● ज़कात ● सदक़े ● अतिया ● पैदावार की ज़कात ● दीनी किताबें ● ज़मीन की ख़रीदारी और क़र्ज़ की अदायगी ● स्टाफ़ की मासिक आय के लिए 1,00,000/- रुपये से अधिक ● मां-बाप या रिश्तेदारों के नाम कमरा या हॉल बनवाना और निर्माण कार्यों के लिए ईंटें, सीमेंट, सरिया और अन्य सामग्री या उसका मूल्य देना ● यहां प्रतिवर्ष हिसाब चेक किये जाते हैं और ऑडिट होता है । ● इदारा में खुद आकर बराबरी का नमूना देखें कि अनाथ बच्चियां और वे बच्चियां जिनके मां-बाप हैं किस तरह मिलकर रहा करती हैं ।

यह इदारा आप से उदार सहायता की अपील करता है ।

विदेशी चन्दा देने वाले : भारत सरकार से "मुस्लिम लड़कियों का यतीमख़ाना (गया) को विदेशों से चन्दा लेने का इजाज़तनामा प्राप्त हो गया है ।

Foreign Donors विदेशी चन्दा देने वाले

विदेशों में रहने वाले अब BANK A/c No. 300402010009042

BANK CODE NO. UBININBBJAM में अपनी रक़म भेज सकते हैं ।

चेक या ड्राफ्ट पर केवल यह लिखें–"THE GAYA MUSLIM GIRLS ORPHANAGE"

Address for correspondence : रक़म भेजने और संपर्क करने का पता

GENERAL SECRETARY, THE GAYA MUSLIM GIRLS ORPHANAGE

At : KOLOWNA, P.O.: CHERKI-824237, Distt.: GAYA (BIHAR) INDIA, ☎ 0631-2734437 ● Mobile : 9934480190

E-mail : thegayamuslimgirlsorphanage@gmail.com, Website : www.gmgo.org

LOCAL DONORS मक़ामी चन्दा देने वाले

BANK CODE-UBI No. 530042 UNION BANK OF INDIA (MAIN BRANCH, GAYA)

CORE BANKING A/C NO.: 300402010007752

नोट : कोर बैंकिंग वाले हज़रात E-mail या डाक से अपना मुकम्मल पता भेज दिया करें ताकि उसी पते पर रक़म की रसीद रवाना की जा सके ।

संस्थापक महासचिव : इक़बाल अहमद ख़ां

मूड

❖ ईश्वर दयाल जायसवाल

ऊंह ! एक नि:श्वास छोड़ा और क़लम तथा पैड को रखकर चारपाई पर लेट गया । सोचा था अख़बारी चौखट में अपना भी कुछ सिक्का जम जाए पर मूड के रोग से पीड़ित आज भी कुछ न लिख सका । इधर कई दिनों से जब भी लिखने बैठता, क़लम दो-चार लाइन चलकर रुक जाती और लाख कोशिश करने के बावजूद भी कमबख़्त आगे बढ़ने का नाम ही न लेती । आप शायद सोचते हेंगे–'कहीं श्रीमान जी का 'स्क्रू' ढीला तो नहीं हो गया है ? भला यह भी कोई रोग है ?' मैं दावे के साथ कह सकता हूं कि यह एक ऐसा रोग है, बल्कि यो कहिये कि बला है जो सब रोगों को मात कर देता है ।

आप कोई भी कार्य करने जा रहे हों, यंदि मूड ठीक नहीं है तो विश्वास कीजिए लाख कोशिश करने के बावजूद भी वह कार्य नहीं कर सकते ।

क्या बताऊं ? जब-जब पढ़ने बैठता हूं, मूड ही नहीं जम पाता, परीक्षा भी नज़दीक है । यदि कोई आफ़िसर महोदय हुए, मूड में नहीं हैं तो झल्ला कर बोलेंगे–''मैंने तुम से कई बार कह दिया कि बाद में आना, पता नहीं क्यों मूड ख़राब करने पर तुले हो ।''

एक बार कार्यवश मैं थाने पर गया था । कोतवाल साहब से गपशप होती रहती थी । थाने पर पहुंचा तो देखा, ''सभी पुलिसकर्मी सहमे-सहमे डरे से खड़े हैं । कोतवाल साहब तैश में सभी को डांट-फटकार रहे थे ।'' जब सभी पुलिसकर्मी चले गये तो मैंने कोतवाल साहब से पूछा, ''क्या कोई मुजरिम हिरासत से भाग गया ? वे बोले–''जायसवाल जी ! मुजरिम साले की हिम्मत जो मेरे रहते हुए हिरासत से भाग जाए ।

दरअस्ल आज सुबह से ही पता नहीं क्यों मूड उखड़ा हुआ है ? थाने पर पहुंचा तो देखा यहां गपशप चल रही है । बस मूड ख़राब हो गया ।'' मुझे बाद में पता चला कि कोतवाल साहब की पत्नी से सवेरे-सवेरे कुछ कहा-सुनी हो गयी थी ।

मैं बी०ए० में पढ़ रहा था । अध्यापक थे–राय साहब ! बड़े मनो विनोदप्रिय थे । एक दिन क्लास में आये । बमुश्किल पांच मिनट पढ़ाये होंगे, बोले–''बच्चों आज मूड ठीक नहीं है । जनरल नॉलेज के बारे में आप लोग पूछिये ।'' मैं खड़ा हो गया और बोला–''सर ! आज मूड के बारे में ही बताएं । मूड की परिभाषा क्या है ? और मूड का हिन्दी शब्द क्या है ? ''वे बोले–'यह प्रश्न पूछकर मेरा बना-बनाया मूड ख़राब कर दिया । भला मूड की भी कोई परिभाषा है ? मूड का हिन्दी में तो क्या विश्व की किसी भाषा में मूड शब्द का अनुवाद नहीं हुआ । मूड की न तो कोई परिभाषा है और न ही किसी भाषा में इसका अनुवाद हुआ है । यहां तक कि मूड की उत्पत्ति कब हुई ? इसकी भी स्पष्ट व्याख्या विश्व की किसी भी देश में किसी भी पुस्तक में नहीं है ।''

मूड की बीमारी को किसी भी श्रेणी में नहीं रखा जा सकता है । मूड की कोई दवा नहीं बनी है । मूड के बनने

SHATABDI FOUNDATION, GAYA

- Started Shatabdi Public School in 2001 with primary classes, has now developed into a 10+2 CBSE affiliated educational institution with quality education in modern subjects with moral orientation.
- Presently there are around 1400 students who are provided modern teaching facilities. The Foundation also adopts poor/ orphan students
- Free education is given to poor students of the locality after school time.
- Our immediate needs are—Purchase one more school bus, Construction of Prayer Hall & Purchase of 30 Computers.

(Prof. Z. H. Khan) Chairman — *(Prof. M. B. Zaman)* Secretary

SHATABDI-PUBLIC SCHOOL

Katari Hill Road, Gaya-823001 (Bihar) INDIA

या बिगड़ने का न तो कोई समय है, न कोई ऋतु । बिगड़ा मूड कब ठीक होगा ? इसका भी कोई समय नहीं है । मूड कब बिगड़ जाए, इस पर विश्व के वैज्ञानिक कोई जवाब, कोई शोध-अनुसंधान आज तक न दे सके । जबकि इस रोग से ऐसे विशेष व्यक्ति हर पल, हर दिन, हर महीने, हर वर्ष जीवन पर्यंत तक पीड़ित रहते हैं । यह न मनुष्य प्रदत्त है, न प्रकृति प्रदत्त है, न ईश्वर प्रदत्त है, यहां तक कि यह सृष्टि प्रदत्त भी नहीं है ।

मूड ठीक करने के लिए अंग्रेज़ों ने सोमरस की तर्ज़ पर एक पेय पदार्थ का फैलाव विश्व में किया ज़रूर है, पर इसके पीने से मूड कभी ठीक हो जाता है तो कभी-कभी अधिक ख़राब भी हो जाता है । इस पेय पदार्थ को गांव की बोली में 'चाय' और सभ्य समाज में 'टी' कहा जाता है । किसान से लेकर उद्योगपति तक मज़दूर से लेकर ऑफ़िसर तक सभी लोग मूड ख़राब होने पर तुरंत इसकी डिमांड करते हैं । मूड ख़राब हुआ, तुरंत मुख से निकला–''यार मूड ख़राब है, ज़रा एक कप कड़कदार चाय पिलाओ ।'' जब तक चाय नहीं आती है, तब तक चाय पीने की कल्पना में, मूड ठीक होने के लिए कुछ बेराग सुर निकलता रहता है । चाय आयी, पहली चुस्की लगायी, झुझलाहट के साथ कप को मेज पर पटक कर बड़बड़ा उठे–''कैसी चाय लायी ? मूड ख़राब हो गया । कहा था कड़कदार, लाए गरम-गरम मीठा शरबत ।'' अब आप ही बताइए ये पेय पदार्थ भी कितनी बुरी तरह से अंग्रेज़ी दवा की तरह बजाय फ़ायदा के रिएक्शन कर गया । मूड ठीक होने के बजाय और ख़राब हो गया ।

महिला वर्ग में यह रोग उन महिलाओं में होता है जो ''श्रीमती जी'' की उपाधि से विभूषित है । जिन ''श्रीमती जी'' के श्रीमान जी'' सर्विस में हैं, उनमें ये लक्षण सर्वाधिक प्रकट होते हैं । ऐसी महिलाओं के मूड बिगड़ने पर कड़कदार चाय एकदम बेअसर साबित होती हैं । 'श्रीमती जी' के मूड बिगड़ने पर 'श्रीमान जी' अगर भूलवश कह बैठे' ''प्रिय ! तुम्हारा मूड ख़राब है, एक कप कड़कदार चाय पी लो'' तो तय समझिये कि वे भड़क जाएंगी उनका मूड तभी ठीक होगा जब श्रीमान जी वेतन के साथ श्रीमती जी के लिए उनकी मनपसन्द की साड़ी या पिछले महीने की फ़रमाइश का सामान लेकर घर आते हैं । अगर 'श्रीमान जी' ख़ाली हाथ केवल वेतन ही लेकर घर पहुंच गये तब तो 'श्रीमती जी' का पारा सातवें आसमान पर तुरंत चढ़ जाएगा । यह पारा तभी उतरेगा, मूड तभी ठीक होगा जब 'श्रीमान जी' याचनापूर्ण स्वर में कहेंगे ''प्रिय ! वेतन मिलने में देरी हो गयी, इसलिए तुम्हारी प्रिय वस्तु न ला सका । ऐसा करो–जल्दी फ्रेश हो लो । आज तुम्हें शापिंग कराऊंगा, अच्छे होटल में डिनर लेंगे'' । जैसे ही ये याचनापूर्ण शब्द 'श्रीमती जी' के कानों में पड़े, मूड तुरंत ठीक हुआ और सब गृहकार्य को छोड़कर जाने की तैयारी में जुट जाएंगी ।

समाचार पत्र-पत्रिकाओं के संपादकों पर भी मूड का विशेष प्रभाव पड़ता है । अगर संपादक जी का मूड ठीक है तो 'मरियल लेखक' की 'सड़ियल' रचना छप जाएगी । अगर मूड गड़बड़ है तो 'दड़ियल लेखक' की धांसू रचना रद्दी की टोकरी में नज़र आएगी । यह लेख कहां पहुंचेगा, ये तो संपादक जी के 'मूड' पर निर्भर है । इसमें न तो मेरा वश चलेगा न किसी का, बस मूड का ही वश चलेगा क्योंकि–

मूड बिना सब व्यर्थ है, मूड बिना जग सून ।
मूड बने पर सब मिलै, मोती मानस मून ।।

लघुकथा

तालियां

समूचा पंडाल लोगों से भर गया था । लोगों की भारी भीड़ देखकर नेता जी बहुत खुश हुए । नेता जी ने अपना ओजस्वी भाषण सुनाना शुरू किया । लोग नेता जी का भाषण सुनने में तल्लीन थे । लेकिन वे भाषण पर तालियां नहीं बजा रहे थे । इस बात से नेता जी बड़े निराश दिखायी देने लगे तो उसके समर्थकों ने लोगों से तालियां बजाने का अनुरोध व आग्रह भी किया । पर लोग थे कि तालियां बजाने का नाम नहीं ले रहे थे ।

तभी नेता जी को एक उपाय सूझा । उन्होंने लोगों से आग्रह किया कि वे भाषण पर न सही पर तालियां बजाने में कंजूसी न करें । तालियां बजाने से मन प्रसन्नचित होता है तथा स्वास्थ्य भी ठीक रहता है । नेता जी की यह बात सुन लोगों ने तालियों की गड़गड़ाहट से वातावरण को गूंजा दिया । तालियों की गड़गड़ाहट में नेता जी का ओजस्वी भाषण भी ठीक से सुनायी नहीं दे रहा था, पर नेता जी तालियों की गड़गड़ाहट से खुश थे । वहीं लोग तालियां बजाकर खुश थे ।

रोहित यादव
सैदपुर, मंडी अटेली, महेन्द्रगढ़ (हरियाणा)

वंदेमातरम् क्यों ?

■ डॉ॰ मुहम्मद अहमद

वंदेमातरम् एक बार फिर चर्चा में है । पिछले दिनों लोकसभा में जब इसको बजाया जा रहा था, तो दो मुस्लिम सांसदों-बसपा के शफ़ीकुर रहमान बर्क़ और मजलिसे इत्तेहादुल मुस्लेमीन के असदुद्दीन ओवैसी ने इस पर एतिराज़ किया और विरोध प्रकट करते हुए सदन से बाहर उठकर चले गये । इन सांसदों के इस क़दम पर ख़ासकर चिर-परिचित 'राष्ट्रवादियों' ने नाहक़ वाबेला खड़ा कर दिया है । लोकसभा अध्यक्ष मीरा कुमार ने नियमों के विरुद्ध जाकर इन सांसदों को फटकर लगायी ही, तथाकथित राष्ट्रवादियों की परोक्ष रूप से हौसला अफ़ज़ाई की । पूर्व लोकसभा अध्यक्ष सोमनाथ चटर्जी ने भी नकारात्मक मानसिकता वालों का यह कहकर मन ही बढ़ाया कि बर्क़ संसद में जनप्रतिनिधि हैं या किसी धर्म के प्रतिनिधि? उन्हें ऐसा नहीं करना चाहिए । भाजपा वाले तल्ख़ भाषा का प्रयोग करते हुए ख़ुद लोकतंत्र भक्षक की मुद्रा में सामने आये । एक साहब ने तो यहां तक कह दिया कि जिसे वंदेमातरम् से नफ़रत है, वह देश छोड़कर जा सकता है, मानो ये देश के दरोग़ा हों और सबके साथ मक़बूल फ़िदा हुसैन जैसा रवैया अपनाना चाहते हैं । ज्ञातव्य है कि इन्हीं तथाकथित राष्ट्रवादियों ने हुसैन को देश-निर्वासन के लिए मजबूर कर दिया था ।

जिसे राष्ट्रगीत कहा जाता है, उसकी रचना बंकिमचंद्र चटर्जी द्वारा की गयी थी । इन्होंने 7 नवम्बर, 1876 ई॰ में बंगाल के कांतल पाडा नामक गांव में इस गीत की रचना की थी । वंदे मातरम् गीत के प्रथम दो पद संस्कृत में तथा शेष पद बंगाली भाषा में थे । इस गीत का प्रकाशन 'आनन्द मठ' के साथ हुआ, क्योंकि उन्होंने इसे इस उपन्यास में शामिल कर दिया था । इस पर मुसलमानों का एतिराज़ क्यों रहा है, इसे जानने के लिए इसका मूलपाठ और अर्थ जानना ज़रूरी है–

सुजलां सुफलां मलयजशीलतां
शस्यश्यामलां मातरम् !
शुभ-ज्योत्सना-पुलकित-यामिनीम्
फुल्ल-कुसुमित-द्रमुदल शोभिनीम्
सुहासिनी सुमधुर भाषिणीम्
सुखदां वरदां मातरम् !
सन्तकोटिकंठ-कलकल-निनाद-कराले
द्विसप्तकोटि भुजैर्धृतखरकरबाले
अबला केनो मां एतो बले ।
बहुबलधारिणीं नमामि तारिणीं
रिपुदल वारिणीं मातरम् !
तुमि विद्या तुमि धर्म
तुमि हरि तुमि कर्म
त्वम् हि प्राणाः शरीरे ।
बाहुते तुमि मा शक्ति
हृदये तुमि मा भक्ति
तोमारइ प्रतिमा गड़ि मंदिरे-मंदिरे ।
त्वं हि दुर्गा दशप्रहरणधारिणी
कमला कमल-दल विहारिणी
वाणी विद्यादायिनी नवामि त्वां
नवामि कमलाम् अमलां अतुलाम्
सुजलां सुफलां मातरम्
वंदे मातरम् !
श्यामलां सरलां सुस्मितां भूषिताम्
धरणीं भरणीम् मातरम् ।

(आनन्द मठ, पृ॰ 60, राजकमल प्रकाशन, संस्करण तृतीय, 1997)

इसका हिन्दी अनुवाद इस प्रकार है–

1. हे मां मैं तेरी वन्दना करता हूं
मेरे अच्छे पानी, अच्छे फलों,
सुगन्धित, शुष्क, उत्तरी समीर (हवा)
हरे-भरे खेतों वाली मेरी मां ।
2. सुन्दर चांदनी से प्रकाशित रात वाली,
खिले हुए फूलों और घने वृक्षों वाली,
सुमधुर भाषा वाली,
सुख देने वाली वरदायिनी मेरी मां ।
3. तीस करोड़ कंठों की जोशीली आवाज़ें,

साठ करोड़ भुजाओं में तलवारों को धारण किये हुए
क्या इतनी शक्ति के बाद भी,
हे मां तू निर्बल है,
तू ही हमारी भुजाओं की शक्ति है,
मैं तेरी पद-वन्दना करता हूं मेरी मां।

4. तू ही मेरा ज्ञान, तू ही मेरा धर्म है,
तू ही मेरा अन्तर्मन, तू ही मेरा लक्ष्य,
तू ही मेरे शरीर का प्राण,
तू ही भुजाओं की शक्ति है,
मन के भीतर तेरा ही सत्य है,
तेरी ही मन मोहिनी मूर्ति
एक-एक मन्दिर में,

5. तू ही दुर्गा दश सशस्त्र भुजाओं वाली,
तू ही कमला है, कमल के फूलों की बहार,
तू ही ज्ञान गंगा है, परिपूर्ण करने वाली,
मैं तेरा दास हूं, दासों का भी दास,
दासों के दास का भी दास,
अच्छे पानी, अच्छे फलों वाली मेरी मां,
मैं तेरी वन्दना करता हूं ।

6. लहलहाते खेतों वाली, पवित्र, मोहिनी,
सुशोभित, शक्तिशालिनी, अजर- अमर,
मैं तेरी वन्दना करता हूं ।

साफ़ तौर पर यहां भारत माता की पूजा की गयी है, जो इस्लाम की एकेश्वरवाद (तौहीद) की मौलिक धारणा से सीधे टकराती है । एक ही ईश्वर की इबादत मान्य है । 'इस्लाम' का शाब्दिक अर्थ है–आज्ञा मानना अर्थात एक ईश्वर सर्वशक्तिमान की आज्ञा का पालन करना । आज्ञापालन करने वाले को मुस्लिम कहते हैं । इस्लाम 'सिल्म' धातु अक्षर से बना है, जिसका शाब्दिक अर्थ अम्न और शांति है । इस्लाम विशुद्ध एकेश्वरवादी धर्म है । अर्थात उसकी यह धारणा है कि संपूर्ण जगत का एक ही ईश और खुदा है और वही एक मात्र पूज्य और उपास्य है । इस्लामी शब्दावली में ईश, पूज्य प्रभु, पालनहार को अल्लाह कहा जाता है ।

"अल्लाह" शब्द में उसके एक होने का अर्थ निहित है । पवित्र कुरआन में अल्लाह के एक होने के संबंध में अनेक आयतें अवतरित हुई हैं, जिनमें से कुछ निम्नलिखित हैं–

● "तुम्हारा पूज्य प्रभु एक ही पूज्य प्रभु है, उस करुणामय और दयावान के सिवा कोई और पूज्य प्रभु नहीं है ।" (2:163)

● "वही अल्लाह है उसके सिवा कोई पूज्य प्रभु नहीं ।" (28:70)

● "कह दो वह अल्लाह है यकता (अकेला)।" (112:1)

● "अल्लाह का आदेश है दो खुदा न बनाओ, खुदा तो बस एक ही है ।" (16:51)

वास्तव में इस्लाम की शिक्षाओं का सार-तत्व एकेश्वरवाद (तौहीद) है । दूसरे शब्दों में यह इस्लाम की आधारशिला है । "ला इलाह इल्लल्लाह" अर्थात अल्लाह के सिवा कोई पूज्य-प्रभु नहीं–इस्लाम के प्रथम सूत्र-वाक्य (कलिमा) का आरंभिक वाक्यांश है, जिस पर ईमान लाना प्रत्येक मुसलमान के लिए अनिवार्य है । हम अपनी खुली आंखों और बुद्धि-विवेक एवं चेतना के ज़रिये से जब समूची सृष्टि पर नज़र डालते हैं, तो एक से अधिक ईश्वर के न चिन्ह मिलते हैं न प्रमाण । स्वयं 'ब्रह्माण्ड' शब्द भी इस सत्य-तथ्य का द्योतक है । अन्य धर्म-ग्रंथों में भी इस सिलसिले में कई उद्धरण पाये जाते हैं, जो इस सच्चाई और वास्तविकता को प्रकट करते हैं । मानव की प्रकृति मौलिक रूप से एकेश्वरवाद के प्रति ही आकर्षित होती है, क्योंकि यह उसके सर्वथा अनुकूल है । कुरआन में है–

● "अल्लाह एक मिसाल देता है । एक व्यक्ति तो वह है जिसके मालिक होने में बहुत-से दुःशील स्वामी साझी हैं जो उसे अपनी-अपनी ओर खींचते हैं और दूसरा व्यक्ति पूरा का पूरा एक ही स्वामी का दास है । क्या इन दोनों का हाल एक-सा हो सकता है ? –प्रशंसा अल्लाह के लिए है, मगर ज़्यादातर लोग नादानी में पड़े हुए हैं ।" (39:29) अल्लाह का कोई साझी और शरीक नहीं है । उसकी सत्ता अखंड है । जिस प्रकार किसी राज्य में दो शासक नहीं हो सकते, उसी प्रकार पूरी सृष्टि में एक ही शासक की सत्ता संभव है । यदि किसी भी स्थान पर एक साथ दो आदेश चलाये जाएंगे तो व्यवस्था सुचारु रूप से नहीं चल सकती । कुरआन में है–

● "अगर आसमान और ज़मीन में एक अल्लाह के सिवा दूसरे पूज्य होते तो (ज़मीन और आसमान) दोनों की व्यवस्था बिगड़ जाती ।" (21:22)

अल्लाह संपूर्ण जगत का स्रष्टा है । वह किसी के द्वारा

स्रष्ट नहीं कि उसमें स्रष्ट प्राणियों की भांति कमज़ोरियां पायी जाती हों । कुरआन में है–

● "अल्लाह सबसे निरपेक्ष है और सब उसके मुहताज हैं, न उसकी कोई सन्तान है और न वह किसी की सन्तान है । और कोई उसका समकक्ष नहीं है ।" (112:2-4)

सारी सृष्टि अल्लाह की आज्ञाकारी है–"क्या तुम देखते नहीं हो कि अल्लाह के आगे सजदे में हैं वे सब जो आसमानों में हैं और जो धरती में हैं, सूरज, चांद और तारे और पहाड़ और पेड़ और जानवर और बहुत-से इन्सान और बहुत से वे लोग जो अज़ाब के अधिकारी हो चुके हैं ?" (22:18)

अल्लाह ने किसी को न बेटा- बेटी बनाया और न ही अन्य किसी को साझीदार ठहराया । कुरआन की निम्नलिखित आयतें इन मिथ्यापूर्ण बातों का पूर्णत: खंडन करती हैं–

● "उनका कहना है कि अल्लाह ने किसी को बेटा बनाया । अल्लाह पाक है इन बातों से । वास्तविक तथ्य यह है कि धरती और आकाशों में पायी जाने वाली सभी चीज़ों का वह मालिक है । सबके सब उसके आज्ञाकारी हैं ।" (2:116)

● "अल्लाह ने किसी को अपनी संतान नहीं बनाया है, और कोई दूसरा खुदा उसके साथ नहीं है । अगर ऐसा होता तो हर खुदा अपनी सृष्टि को लेकर अलग हो जाता और फिर वे एक-दूसरे पर चढ़ दौड़ते। पाक है अल्लाह उन बातों से जो ये लोग बनाते हैं । खुले और छिपे को जानने वाला, वह उच्चतर है उस शिर्क से जो ये ठहरा रहे हैं ।" (23:91,92)

● "लोगों ने जिन्नों को अल्लाह का साझीदार ठहरा दिया, हालांकि वह उनका पैदा करने वाला है और उन्होंने जाने-बूझे उसके लिए बेटे और बेटियां रच दी । हालांकि वह पाक और उच्च है उन बातों से जो ये लोग कहते हैं । वह तो आकाशों और धरती का आविष्कारक है उसका कोई बेटा कैसे हो सकता है, जबकि उसका कोई जीवन साथी ही नहीं है । उसने हर चीज़ को पैदा किया है और उसे हर चीज़ का ज्ञान है ।" (6:100,101)

● "उसके साथ किसी को साझीदार न बनाओ ।" (6:151 इस अटल धारणा के साथ किसी प्रकार का अतिक्रमण कोई मुसलमान कैसे बर्दाश्त कर सकता है ? मेरा यह ख़याल है कि कुछ लोग एकेश्वरवाद के विरुद्ध चीज़ों को मुसलमानों पर थोपते हैं और उन्हें मानसिक रूप से प्रताड़ित करने की कोशिश करते हैं, जो बेहद निंदनीय है । क्या वह गीत आज राष्ट्रगीत का स्थान नहीं ले सकता जो 1857 में राष्ट्रध्वज की सलामी के वक़्त गाया जाता था और जिसे अज़ीमुल्लाह खां ने लिखा था । वह गीत इस प्रकार है–

हम है इसके मालिक, हिन्दुस्तान हमारा,
पाक वतन है क़ौम का, जन्नत से भी प्यारा ।
ये है हमारी मिल्कियत, हिन्दुस्तान हमारा,
इसकी रूहानियत से, रौशन है जग सारा,
कितना क़दीम कितना नईम, सब दुनिया से न्यारा,
करती है जरख़ेज़ जिसे, गंगो-जमन की धारा ।
ऊपर बर्फ़ीला पर्वत, पहरेदार हमारा,
नीचे साहिल पर बजता, सागर का नक़्क़ारा,
इसकी खानें उगल रहीं, सोना, हीरा, पारा,
इसकी शानो शौकत का, दुनिया में जयकारा ।
आया फ़िरंगी दूर से, ऐसा मन्तर मारा,
लूटा दोनों हाथ से, प्यारा वतन हमारा;
आज शहीदों ने है तुमको, अहले वतन पुकारा,
तोड़ो गुलामी की ज़ंजीरें, बरसाओ अंगारा ।
हिन्दू, मुसलमां, सिख हमारा भाई- भाई प्यारा,
ये है आज़ादी का झंडा, इसे सलाम हमारा ।

भारत जैसे विभिन्न धर्मों और संस्कृतियों वाले देश में एतिराज़कुन चीज़ों के त्याग में ही देश, समाज की भलाई निहित है ।

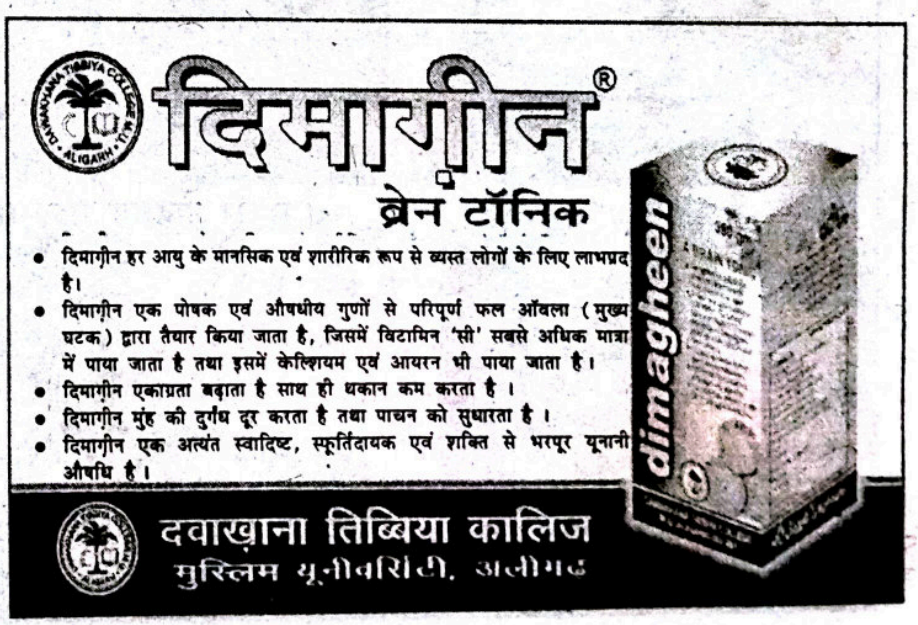

प्रो॰ शरद नारायण खरे का अभिनंदन



इतिहास के प्राध्यापक-विभागाध्यक्ष, कवि-लेखक, अनगिनत कृतियों के सृजक तथा साम्प्रदायिक सद्भाव एवं सामाजिक समानता के लिए सतत् व सघन कार्य करने वाले सुपरिचित व्यक्तित्व प्रो॰ (डॉ॰) शरद नारायण खरे को उनके द्वारा किये गये दलितोत्थान, सामाजिक-समरसता व स्वच्छता के कार्यों पर विगत दिनों उन्हें सुलभ इंटरनेशनल, दिल्ली ने अपने मुख्यालय में विशिष्ट अतिथि के रूप में आमंत्रित कर भव्यता व गरिमापूर्वक सम्मानित किया ।

ज्ञातव्य हो कि सुलभ इंटरनेशनल, जिसके संस्थापक डॉ॰ बिन्देश्वर पाठक हैं स्वयं स्वच्छता व स्केवैंजर महिलाओं के पुनर्वास के लिए कार्य कर रहा है ।

कविगण एवं बच्चे सम्मानित

लाल कला, सांस्कृतिक एवं सामाजिक चेतना मंच (रजि॰) द्वारा होली के अवसर पर एक सरस काव्य गोष्ठी का आयोजन अल्फा शैक्षणिक संस्थान, मीठापुर नयी दिल्ली के प्रांगण में वरिष्ठ समाजसेवी मास्टर डंबर सिंह की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ ।

इस कार्यक्रम का संयोजन दिल्ली रत्न श्री लाल बिहारी लाल का था तथा संचालन वरिष्ठ साहित्यकार डॉ॰ ए॰ कीर्तिबर्धन ने किया । इस अवसर पर कवियों एवं बच्चों को संस्था द्वारा काव्य सेवी सम्मान अतिथियों द्वारा एवं अतिथियों को डॉ॰ आरे॰ कान्त एवं डॉ॰ के॰के॰ तिवारी द्वारा समाजसेवी सम्मान से सम्मानित किया गया । सम्मान स्वरूप अंग वस्त्र एवं सम्मान पत्र प्रदान किया गया ।

दर्पण



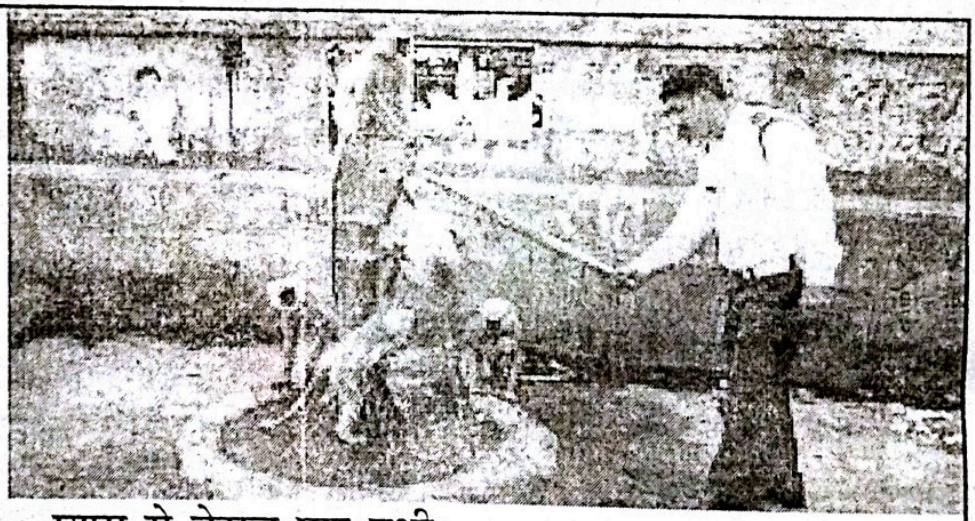

प्यास से बेहाल पशु-पक्षी

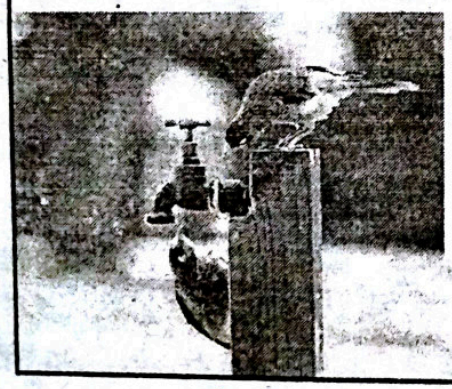





सीप और मूंगों की दुनिया

समुद्र अपने गर्भ में मोती तथा मूंगे जैसे क़ीमती रत्न छिपाये हुए है । यह बड़ी ही रोचक बात है कि यह दोनों ही हमें समुद्री जीवों से प्राप्त होते हैं, जहां मोती सीप के शरीर में फंसे किसी कण के इर्द-गिर्द जमा हुए स्राव से बनता है वहीं मूंगा एक समुद्री जीव का कंकाल है ! तो आओ, कोशिश करते हैं मूंगे के बारे में कुछ और जानकारी जुटाने की ।

मूंगा समुद्र के अन्दर पाया जाने वाला मोती के बाद सबसे आकर्षक रत्न है । सदियों से लाल मूंगे का आभूषणें में प्रयोग होता है ।

मूंगा अथवा कोरल के नाम से प्रसिद्ध कोरल पॉलिप नामक यह जीव समुद्री जीवों की-सी एनीमोन नामक प्रजाति का निकट संबंधी है । कोरल पॉलिप मुख्य रूप से प्रशांत महासागर के दक्षिणी भाग, हिन्द महासागर, फ्लोरिडा तट, मैक्सिको के सागर, वेस्टइंडीज़ के समुद्री क्षेत्रों और भूमध्य सागर में पाया जाता है । जेली जैसे लिजलिजे शरीर वाले इस नन्हें से जीव (कोरल पॉलिप) में आसपास के वातावरण और ख़तरे को सूंघने के लिए एंटिना जैसे संवेदक होते हैं ।

यह समुद्री जीव अपने शरीर से चुने जैसे पदार्थ निकालता है जो इसके इर्द-गिर्द जमकर एक कवचनुमा कंकाल बना लेता है । इसका कोरल पॉलिप को काफ़ी फ़ायदा भी मिलता है, जहां काफ़ी बड़े आकार और नर्म सतह के कारण इसका रिश्तेदार सी एनीमोन आसानी से शिकारियों की ख़ुराक बन जाता है वहीं अपने छोटे आकार और कठोर कवच के कारण कोरल पॉलिप आसानी से परभक्षियों की चपेट में नहीं आता । कोरल पॉलिप का कवच न केवल इसकी परभक्षियों तथा प्रतिकूल मौसम से रक्षा करता है बल्कि यह उसके लिए स्थायी आवास का भी कार्य करता है । कोरल पॉलिप की आयु के बाद इसी कवचनुमा कंकाल को हम लाल रंग के नग के रूप में आभूषणों में प्रयोग करते हैं !

कोरल पॉलिप समुद्र में एक जगह एकत्र होकर रहते हैं, यही वजह है कि इनके निवास स्थान को कोरल कालोनी कहा जाता है । कोरल कालोनी बनाने की प्रक्रिया में कोरल पॉलिप किसी चट्टान पर चिपक जाता है और इसके शरीर से नये कोरल पॉलिप जन्म लेते हैं । जब पुराने कोरल पॉलिप की मृत्यु हो जाती है तब भी नये कोरल पॉलिप उसके कंकाल से चिपके रहते हैं और इस प्रकार यह क्रम पीढ़ियों तक जारी रहता है । एक-दूसरे के कंकाल से चिपके रहने और लगातार वृद्धि के कारण समुद्र में उस स्थान पर मूंगे का काफ़ी बड़ा ढेर बन जाता है जो तेज़ी से बढ़ते हुए विशालकाय झाड़ियों का रूप ले लेता है, यह झाड़ियां कोरल रीफ्स कहलाती हैं ।

मूंगे ने न केवल मानव सभ्यता बल्कि वास्तविक अर्थों में पृथ्वी के भूगोल को भी प्रभावित किया है । यह तो हम सभी जानते हैं कि चारों तरफ़ से जल से घिरी हुई भूमि द्वीप कहलाती है । द्वीप तीन प्रकार के होते हैं, पहला मुख्य भूमि से संबद्ध लेकिन चारों तरफ़ से पानी से घिरा हुआ द्वीप दूसरा समुद्र के बीच उठे हुए द्वीप जो वास्तविक रूप में समुद्र से उभरे ज्वालामुखी पर्वतों के शांत शिकार होते हैं, तीसरे और अंतिम प्रकार के द्वीप मूंगे की चट्टानों से बने होते हैं ।

उष्ण कटिबंधीय सागरों में मूंगों के ढेर के ढेर मिलकर विशालकाय झाड़ियां (रीफ्स) बना देते हैं । रीफ्स के नाम से प्रसिद्ध मूंगे की विशालकाय झाड़ियां तीन प्रकार की होती हैं जिन्हें हम फ्रिंजिग रीफ्स, बैरियर रीफ्स और एटआल के नाम से जानते हैं । फ्रिंजिग रीफ्स समुद्र के अन्दर तैरती मूंगे की वह विशालकाय सतह होती है जिसका एक छोर मुख्यभूमि से जुड़ा होता है । बैरियर रीफ्स फ्रिंजिग रीफ्स की भांति ही समुद्र के अन्दर तैरती मूंगे की विशालकाय सतह होती है लेकिन इसका मुख्य भूमि से कोई संबंध नहीं होता । जब मूंगे की विशालकाय झाड़ियां एक स्थान पर बड़ी संख्या में एकत्र होने लगती हैं तो समुद्र के भीतर से एक अंगूठीनुमा द्वीप उभर आता है जिसे हम एटआल अथवा कोरल आइलैंड के रूप में जानते हैं ।

● मनीष त्रिपाठी

पेंग्विन की छलांग

पेंग्विन अंटार्कटिक क्षेत्र में पाये जाते हैं और इनकी क़रीब 18 प्रजातियां हैं । सबसे छोटे आकार के पेंग्विन ऑस्ट्रेलिया और न्यूज़ीलैंड में पाये जाते हैं । इन्हें लिटिल ब्लू पेंग्विन या फेअरी पेंग्विन कहा जाता है । ये निशाचर होते हैं और इन देशों के लोगों के मनोरंजन का सबसे प्रमुख साधन होते हैं । दरअस्ल ये इन्सानों की हरकतों को नक़ल करने में माहिर होते हैं । यही कारण है कि पेंग्विन बच्चों को बहुत प्यारे लगते हैं ।



पेंग्विन एक ऐसा पक्षी है, जो उड़ता नहीं है । दरअस्ल, इसके शरीर का भार पंख नहीं उठा पाते, इसलिए यह उड़ नहीं सकता । इसके अलावा एक और वजह है इसके नहीं उड़ने की । और वह यह कि इसके पसन्द का भोजन इसे आसानी से उपलब्ध हो जाता है, इसलिए दूसरे बड्र्स की तरह इन्हें दूर-दूर तक भटकने की ज़रूरत इसे कभी पड़ी ही नहीं । पेंग्विन तैरने में माहिर होते हैं । हालांकि, तैरने की स्पीड ज़्यादा नहीं होती, ये क़रीब 12 मील प्रति घंटा तैर सकते हैं । लेकिन तैरने के लिए ये जो डाइव या छलांग लगाते हैं, वह देखने लायक़ होते हैं । हज़ार फ़ीट की ऊंचाई से पानी में तैरने के लिए छलांग लगा देना तो इनके लिए सामान्य बात है । 1772 फ़ीट से लगभग 18 मिनट तक हवा में रहकर सबसे ज़्यादा ऊंची डाइव का रिकर्ड है एक पेंग्विन के नाम । यह पेंग्विन एम्परर प्रजाति का था, जो काफ़ी टैलेंटेड प्रजाति मानी जाती है ।

पेंग्विन के झुंड को कॉलोनी कहते हैं । जितना ज़्यादा ठंडा इलाक़ा होता है, उतने ज़्यादा पेंग्विन वहां पाये जाते हैं ।

ज़्यादा ठंडे इलाक़ों में रहने वाले पेंग्विन की चमड़ी के नीचे चर्बी जमा होती है, जो उनके शरीर को गर्मी देती है । इसके अलावा, इनके पंख भी सूरज के ताप को सोख कर इनके शरीर को गर्म रखने का काम करते हैं ।

अब बात पेंग्विन के दुश्मनों की । तीन प्रमुख बड्र्स-स्कुआस, शीथबिल्स और कराकरस इसका शिकार करते हैं । लेकिन पेंग्विन का सबसे बड़ा दुश्मन इन्सान है । पेंग्विन के दांत नहीं होते । दांतों की जगह पर मोटे गिजार्ड होते हैं, जो खाने को चबाने का काम करते हैं ।

इसकी चोंच केराटिन नामक प्रोटीन की बनी होती है । वही केराटिन, जिससे हमारे नाख़ून और बाल बने होते हैं । इसके पंख भी केराटिन के ही बने होते हैं । औसतन 15 से 20 वर्ष तक जीवित रहते हैं पेंग्विन ।

● नमिता जोशी

इस्लामी पुस्तकें

आपकी अमानत आपकी सेवा में	(मौलाना क़लीम सिद्दीक़ी)	₹10
हमें हिदायत कैसे मिली?	(मोबीन शाह)	₹20
अनमोल इस्लाम और आज का दौर	(सलीम अहमद हाशमी)	₹60
मय्यित के अहकाम व मसाइल	(शाहिद हुसैन नदवी)	₹25

पुस्तक विक्रेता और दावती काम करनेवालों के लिए विशेष छूट

KHALID BOOK DEPOT

Head Office: Chander Ghata, Maqbara, Kota - 6 (Raj.)
Ph.: 0744-2381650, 08233318955 E-mail: mkkhan123456@gmail.com

Branch Office: JAMAL BOOK DEPOT
25/B-1 (Basement) Rehman Complex, Batla House Chowk,
Jamia Nagar, N.Delhi-25 | Ph.: 9990507638

मुद्रक एवं प्रकाशक ख़लील अहमद द्वारा दावत ट्रस्ट (रजि॰), D-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव, जामिया नगर, नयी दिल्ली-110025 से प्रकाशित एवं भारत ऑफ़सेट, गली क़ासिम जान, बल्लीमारान, दिल्ली-6 से मुद्रित ।

फोन: 09818799223, 011-26949430

संपादक : डॉ॰ मुहम्मद अहमद

संस्था की लिखित अनुमति के बिना सम्पूर्ण या आंशिक पुनर्प्रकाशन पूर्णतः प्रतिबंधित है ।

With Best Wishes From :



QUALITY FOODS

Seafood Processors & Exporters
AN ISO 9001 : 2008 COMPANY

FACTORY

PLOT NOS. 5B 39 & 5B 50A, CUNCOLIM INDUSTRIAL ESTATE,
CUNCOLIM, SALCETE, GOA-403 703
TEL. : 91 832 2865610/11/12, FAX : 832 2865609
E-mail : qualityfoods@sancharnet.in/qualityfoods@rediffmail.com

QUALITY EXPORTS

SEAFOOD PROCESSORS & EXPORTERS

FACTORY

Plot Nos. 5B 64, 65 66 & 67 Cuncolim Industrial Estate
Cuncolim, Salcete, GOA-403 703
E-mail : qualityexportsgoa@yahoo.com/mmigoa@yahoomail.com

Posted on 20-21 May 2013
June 2013
E-mail: kantimonthly@hotmail.com
Publishing Date: 18.5.2013

हिन्दी भाषियों की साहित्यिक पत्रिका
कान्ति

RNI 53372/91
DL(S)-01/3147/2012-2014
LICENSED TO POST WITHOUT PREPAYMENT
License No. U (SE)-73/2012-14

M.Khan : 9890227700

Khan & Sons

Hindustan Group

Manufactures of
: Crumb Rubber &
Dealers
: New/Old M.S. Angles, Channels, Plates, Pipes etc
: Building Material, Furnitures, M.S./Plastic Barrels.
: Industrial Scrap Materials & Empty Plastic/Gunny Bags

Add:
N.H.17 Highway, Karaswada Mapusa - GOA
Akbar Khan : 9822497700, Anwar Khan : 9822427700
Office : 2257900, Telefax :2257793, Res.: 2257700

Our Firms

M/s. Hindustan Sales Corporation
38/12, Khorlim, Mapusa, Goa

M/s. Hindustan Rubber Industries
Plot No.62 Canacona IDC, Goa

M/s. Hindustan Sales Syndicate
HH-17, Karaswada, Mapusa, Goa.

M/s. Hindustan Containers
S/2, IDC, Colvale, Bardez, Goa

M/s. Hindustan weight Bridge
NH-17, Karaswada, Mapusa Goa.

M/s. Hindustan Gunny Traders
Narasaraj Pet, Davangere (Karnataka)

Email: hindustansales@gmail.com